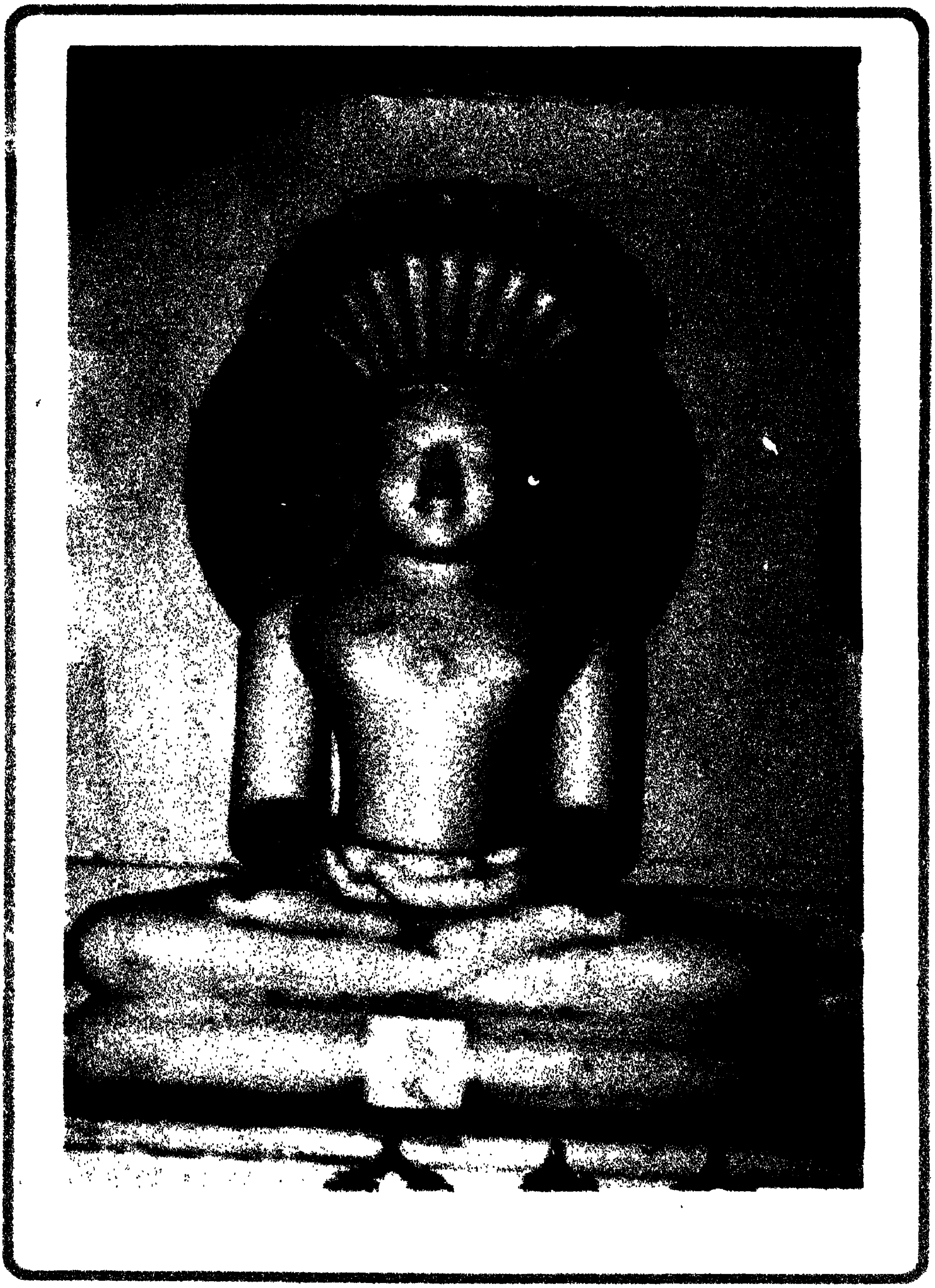
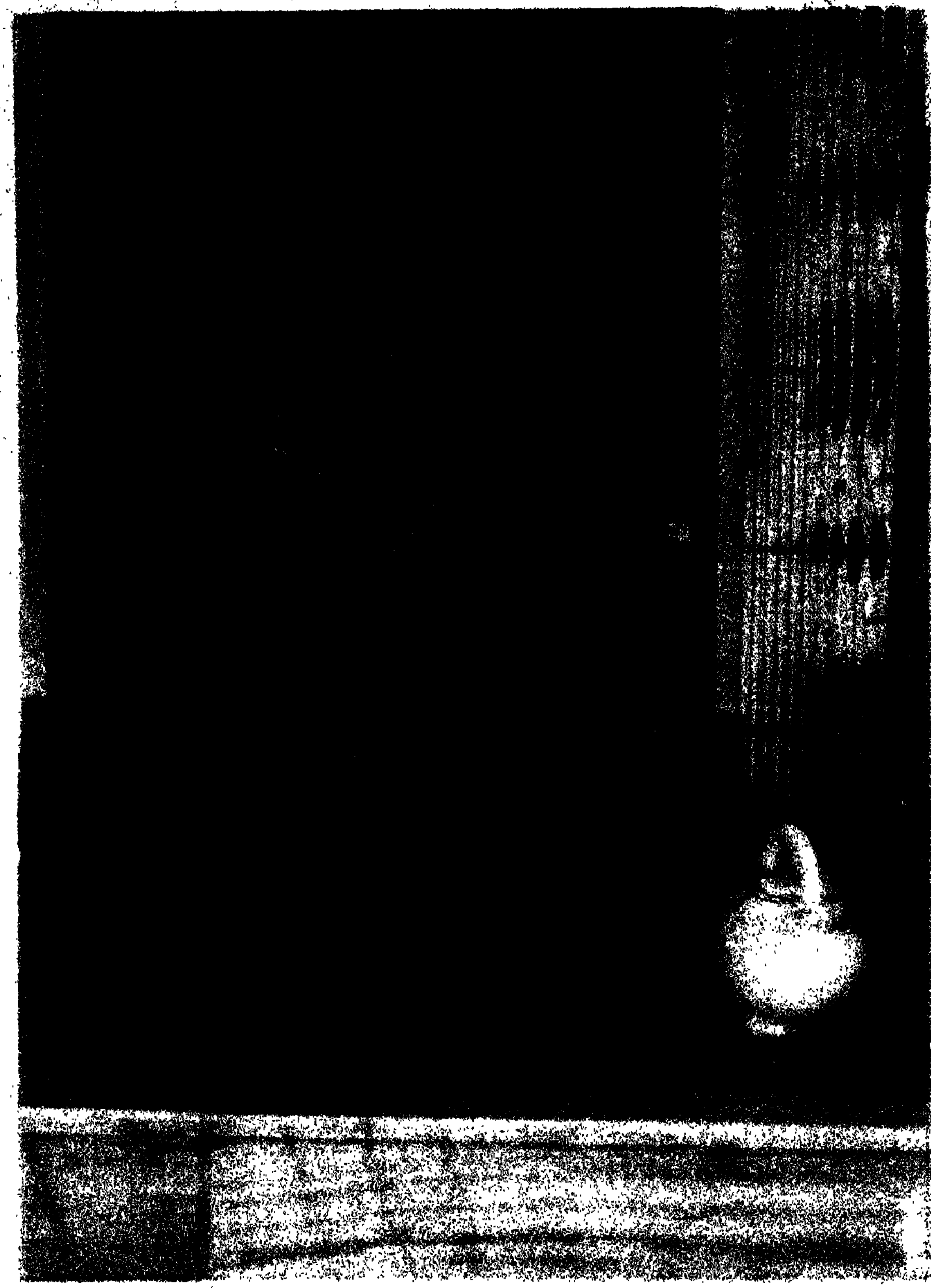


श्री दि. जैन मंदिर किला में विराजित भगवान पार्श्वनाथ की १३८० वर्ष प्राचीन प्रतिमा



मुनि श्री १०८ श्रुतसागरजी महाराज

श्री आदिनाथाय नमः

'मार्दव'

पंच कल्याणक महोत्सव एवं गजरथ महोत्सव

स्मारिका

आष्टा, जिला-सीहोर म.प्र.

१ मई १९९५ से ७ मई १९९५ तक

सम्पादक मण्डल

प्रधान सम्पादक
डॉ. जैन पाल जैन

परामर्श
भानुकुमार जैन, इन्दौर
श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल

प्रबन्ध सम्पादक
सुरेन्द्र कुमार जैन

सह सम्पादक
नरेन्द्र कुमार श्री मोड़
मनोज कुमार सेठी 'गोपी'
मनोज कुमार जैन 'सुपर'

प्रमुख सहयोगी
आलेखन प्रभारी- संजय जैन 'किला'
विज्ञापन प्रभारी- सुरेशचन्द्र जैन, जीतेन्द्र जैन ओ.के.
स्मारिका वितरण प्रभारी- पवन कुमार जैन, अरुण श्री मोड़, सुभाष जैन

वीर निर्वाण संवत २५२१ | भारतीय शक १९१७ | विक्रम संवत् २०५२

भेंट १० रुपये

[illegible]

- प्रेरणा एवं शुभाशीर्वाद- परम पूज्य आचार्य श्री १०८ भरत सागरजी महाराज
- प्रमुख प्रतिष्ठाचार्य- श्री विमल कुमार जैन सौंरया, एम.ए. शास्त्री, टीकमगढ़ (म.प्र.)
- सह प्रतिष्ठाचार्य- श्री वर्द्धमान कुमार जैन सौंरया (एम.एस.सी., एल.एल.बी., बी.एम.एड.)
- स्मारिका विमोचन कर्ता - उत्तरप्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री मोतीलालजी वोरा (विमोचन दिनांक ४ मई को)
- मुख्य महोत्सवस्थल - मंडी प्रांगण के पीछे स्थित श्री केशरीमलजी बनवट एवं श्री रामेश्वरजी खण्डेलवाल के भूखण्ड।

- सम्पादन- स्मारिका सम्पादक मण्डल
- प्रकाशक- श्री दिगम्बर जैन पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव समिति, आष्टा, जिला-सीहोर (म.प्र.)
- मुद्रक- अजमेरा प्रिन्टर्स ३३, टेली बाखल (मल्हारगंज) इन्दौर फोन-४१३४०३
- मुख पृष्ठ- श्री दि. जैन किला मन्दिरजी में स्थापित आदि पुरुष प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) की भूगर्भ से प्राप्त चतुर्थकालीन मनोज्ञ व चमत्कारिक अद्वितीय प्रतिमा।

[illegible]

- सम्पादकीय, आशीर्वाद, संदेश एवं आभार
- चित्र परिचय, व्यक्तित्व परिचय
- रोचक, बौद्धिक एवं प्रेरक प्रस्तुति, संकलन, आलेख तथा काव्य
- महोत्सव में कब, क्या
- प्रतिष्ठा महोत्सव समिति एवं उप समितियाँ
- श्री दि. जैन पंचायत कमेटी, आष्टा

सम्पादकीय

पार्वती नदी के सुरम्य तट पर आस्था (आष्टा) नगरी स्थित है, आस्था के वासी वस्तुतः आस्थावान हैं, धर्म में आस्था होने का सच्चा प्रमाण चौबीसी की स्थापना, मन्दिर निर्माण एवं पंच कल्याणक - गजरथ संचालन है।

मन्दिर सदा से मुक्ति मार्ग की ओर उन्मुख करने वाले प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं और सदैव रहेंगे। वहीं श्रमण जो चलते-फिरते तीर्थ हैं हमारे प्रकाश स्तम्भ हैं। प्रत्यक्ष में मुक्ति मार्ग पर उँगली पकड़कर चलना सिखाने वाले वही हैं।

गुरु की महिमा अपरम्पार है। तीर्थंकरों की वाणी जिनवाणी है, जिनवाणी का लिपिबद्ध स्वरूप ही शास्त्र है। देव, शास्त्र, गुरु ही हमारे मुक्ति पथ प्रदर्शक हैं। आस्था त्रिवेणी तीर्थ बन गया है। इस त्रिवेणी की स्मृति को 'मार्दव' स्मारिका में संजोये रखने का प्रयास किया है।

आस्था नगरी, आष्टा के इतिहास को अतीत की परतों से निकाल, अनूठे व रोचक स्वरूप में पटल पर रखा गया है। परिणामतः नगर, किला, किला स्थित दि. जैन मन्दिर की प्राचीनता से आपका साक्षात्कार कराने की कोशिश की गई है।

राम, कृष्ण, गौतम तथा महावीर के अहिंसक चमन में हिंसा व मांसाहार पर चिन्ता व्यक्त करते हुए आवश्यक तथ्य देकर हर पक्ष को आगाह किया जा रहा है।

आचार्य श्री १०८ भरत सागरजी महाराज के शुभाशीष का फल आप सबके समक्ष है। अध्यक्ष श्री राजमलजी सेठी एवं संयोजक श्री राजमलजी जैन कोटरी वालों के स्नेह, सहयोग एवं आशीष ने सदैव मार्ग दर्शन दिया है। धर्मनगरी इन्दौर के सामर्थी बन्धुओं श्री भानुकुमारजी जैन, श्री सुभाषजी गंगवाल, श्री गुलाबचन्दजी वाकलीवाल एवं प्रदेश की राजधानी भोपाल के श्री श्रीपालजी 'दिवा', श्री प. पारसमलजी शास्त्री, श्री नेमिचन्दजी जैन, भोपाल का सम्बल एवं सहयोग अविस्मरणीय है। मेरे सहयोगी प्रबन्ध सम्पादक श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, अलीपुर आष्टा, सह सम्पादक श्री नरेन्द्रकुमार श्रीमोड़, श्री मनोजकुमार सेठी (गोपी), श्री मनोजकुमार (सुपर) आष्टा, संकलन प्रभारी श्री संजयकुमार जैन, किला आष्टा, विज्ञापन प्रभारी सुरेशचन्दजी जैन, शिक्षक (हा.से.), श्री जितेन्द्र कुमार जैन (जे.के.) आष्टा, स्मारिका वितरण प्रभारी श्री पवनकुमार जैन अलीपुर, श्री अरुण श्रीमोड़, श्री सुभाषजी जैन आष्टा ने अपने बहुमूल्य सहयोग से स्मारिका के स्वरूप में चार चाँद लगाए हैं। 'मार्दव' की जितनी अच्छाइयाँ हैं वे सब आप सबके स्नेह, सहयोग के कारण ही है। कमियाँ सारी हमारे खाते में है हृदय से क्षमा याचक हूँ। आप सब सुधी पाठक क्षमादान देकर कृतार्थ करेंगे।

प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में जिन भाई-बहिनों ने सहयोग दिया है, मैं उन सबका हृदय से आभारी हूँ।

साहित्य तो सभी जगह मिल सकता है, किन्तु स्मृतियाँ बाजारों में नहीं मिल सकती हैं।

उपरोक्त सन्दर्भ में 'मार्दव' स्मारिका को पूर्णतः स्मृति रूप देने का प्रयास किया गया है। आपकी निर्मल प्रतिक्रियाएँ मुझे प्रेरणा व निर्देश देंगी।

इसी भावना के साथ आचार्य श्री १०८ भरत सागरजी के चरणों में शत-शतवार नमन।

डॉ. जैनपाल जैन
प्रधान सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

-श्रीपाल जैन 'दिवा'

परमाणु पुद्‌गल की इकाई है। परमाणु गतिशील होते हैं पर विद्युत उदासीन भी होते हैं किन्तु जब इलेक्ट्रान स्थानान्तरित होते हैं तो परमाणु सावेशी हो जाते हैं। आवेश ही हलचल का कारण बनता है, आवेश ही संसार है। उदासीनता वह स्थानक है जहाँ से उर्ध्व या अधो की यात्रा प्रारम्भ होती है। यात्री दो होते हैं, श्रावक और श्रमण।

जब आवेश की आंधी उदासीनता की मजाक उड़ाती है तब श्रमण की साधना उसे सम्बल देकर धर्म मार्ग पर लगाती है। धर्म को साधना ऊँचाई देती है, साधना आचरण की नियमित क्रिया का नवनीत है, जिसकी स्निग्धता-नेह और वात्सल्य का अमृत बरसाती है। जो सर्व मंगलकारी होती है। हम सबको भी श्रमणशूर परम पूज्य आचार्य श्री भरत सागरजी महाराज का पुनीत सानिध्य उपलब्ध हुआ है। सम्पूर्ण मांगलिक कार्य उन्हीं के आशीष से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो रहे हैं।

पंच कल्याणक गजरथ महोत्सव की स्मृतियाँ संजोने हेतु 'मार्दव' का प्रकाशन सभी ने आवश्यक समझा। अतः सबकी भावना का साकार रूप ही 'मार्दव' है। माखन सी मृदुता है, मधु सी मधुरता है, विषमता का अभाव समता है परुषता की न्यूनता ऋजुता है इन सभी शुभ संज्ञाओं का पुंज सविता के प्रकाश सा विकीर्णित है 'मार्दव' में। प्रकाश का सम्पूर्ण सद्भाव आप सबके सहयोग का शुभ प्रतिफल है और ग्रहण के दोष हेतु हमारे अज्ञान के अंधकार उत्तरदायी हैं।

आस्था का सम्पूर्ण जैन जैनेतर समाज एवं समस्त विभाग के अधिकारीगण का हार्दिक सकारात्मक सहयोग चिरस्मरणीय रहेगा कोटि-कोटि साधुवाद भी उनकी पवित्र भावना का समुचित सम्मान करने में समर्थ नहीं है। स्नेह सिक्त सहयोग सदा साधुवाद का मोहताज भी नहीं रहा है, फिर भी हमारी विनत वाणी के माध्यम से उदारतापूर्वक क्षमा प्रदान करते हुए साधुवाद स्वीकार कर कृतार्थ करेंगे।

अध्यक्ष श्री राजमल सेठी एवं संयोजक श्री राजमल जैन कोठरी के शीर्ष सार्थक भागीरथ प्रयास को जितना सराहा जावे उतना कम है यूं कहें सराहना की शक्ति भी सराहने में सक्षम नहीं है।

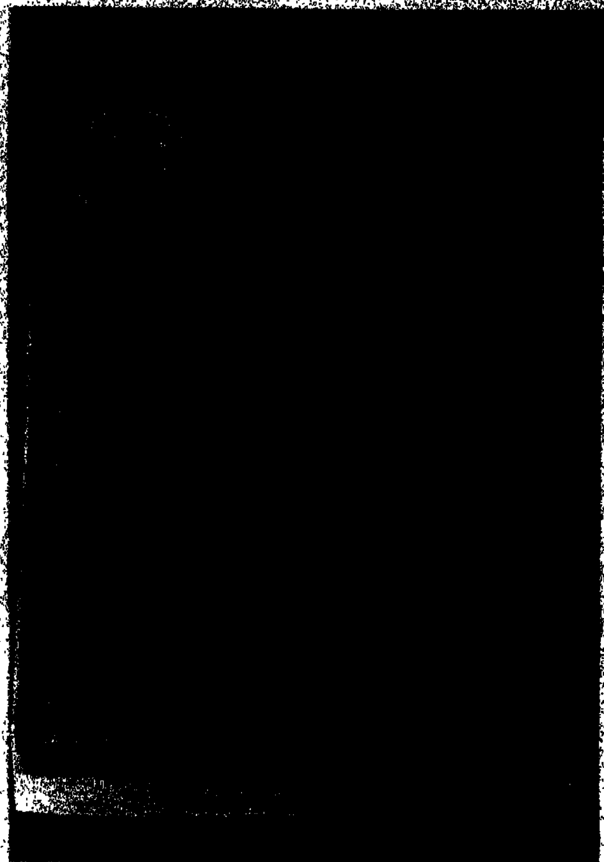
इसके साथ ही सम्पूर्ण समितियों के सदस्यों के अथक प्रयास का ही सारा जलजला है। सभी की धार्मिक भावना का आभा मण्डल प्रणम्य है।

जय जीव जगत!

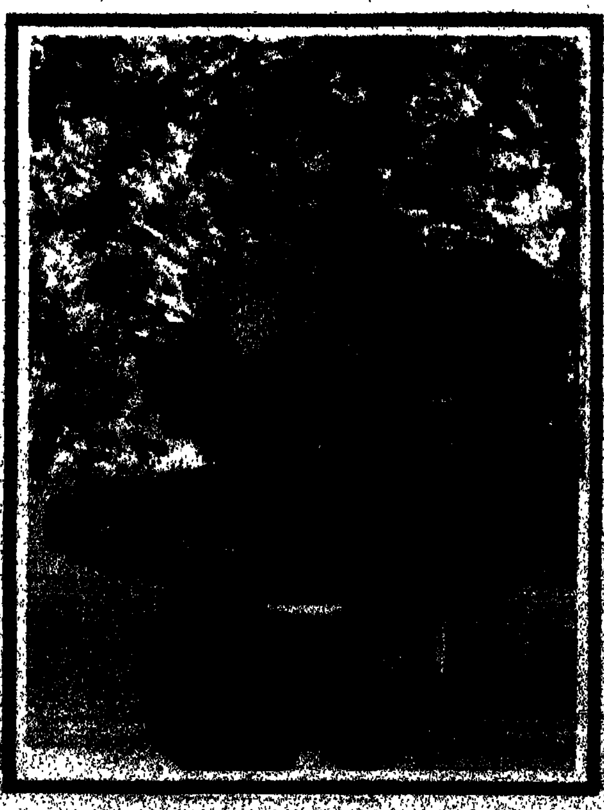
शाकाहार सदन
एलआईजी ७५, केशरकुंज
हर्षवर्द्धन नगर, भोपाल
दूरभाष - ५७११११९



आचार्य श्री १०८ विमल सागरजी महाराज



[illegible]



[illegible] श्री १०८ [illegible] महाराज



[illegible] श्री १०८ [illegible] महाराज



आचार्य श्री १०८ भरत सागरजी महाराज

मंगलाशीष

संपादक मंडल,

शुभाशीर्वाद!

रत्नत्रय की कुशलता। यहाँ पर संघ की कुशलता है। अति हर्ष की बात है कि मालवा की पावन पवित्र वसुन्धरा ऐतिहासिक गंधर्वपुरी के समीपस्त पार्वती नदी तट के किनारे पर बसी हुई धर्मप्राण नगरी 'आष्टा' में होने वाली 'श्री पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव' तथा 'विश्वशांति महायज्ञ' के पुनीत अवसर पर आप सभी के द्वारा 'स्मारिका' प्रकाशित कर मानव के विचारों की श्रृंखला को एक सूत्र में बांधकर मानव को अपने जीवन में 'मृदु' बनाने का संकल्प संकेत देती है। अतः इस पवित्र पुस्तक चयनिका का नाम 'मार्दव स्मारिका' रखा है। आत्मीक सत्य पुरुषार्थ का 'सत्पथ' प्रतिफल है।

इस मांगलीक अवसर पर समस्त सम्पादक मंडल को तथा प्रतिष्ठा समिति को आशीर्वाद। पावन पवित्र धर्मप्राण नगरी आष्टा के समस्त श्रावक- श्राविकाओं को शुभाशीष।

आचार्य १०८ भरतसागर सतृपथी
(आ.श्री १०८ सुमतिसागर जी के शिष्य)

( )

मुनि श्री १०८ श्रुत सागरजी

आशीर्वाद

मानव जीवन अमूल्य निधि है, इसको सार्थक करने के लिए धर्म प्रभावना, पंच कल्याणक प्रतिष्ठा, विधान कराना, दान देना, तीर्थ यात्रा, स्वाध्याय शिविर लगाना, पुस्तकों का प्रकाशन विभिन्न माध्यम हैं। वर्तमान में अरहन्त भगवान साक्षात नहीं हैं, उनकी मूर्ति बनाकर भक्तों द्वारा प्रतिष्ठा कर श्रावक जन अतिशय पुण्यार्जन करते हैं।

इसी परम्परा में ऐतिहासिक नगरी आष्टा में १००८ आदिनाथ, भरत, बाहुबली एवं चौबीसी का निर्माण कर, पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव दि. १ मई से ७ मई १९९९ के पुण्य अवसर पर प्रकाशित स्मारिका के माध्यम से समाज में धर्म, प्रेम, एकता एवं भाईचारे की धारा अनवरत बहती रहेगी।

इस स्मारिका के सम्पादक मण्डल एवं सम्पादक डा. जैनपाल जैन, प्रबन्ध सम्पादक सुरेन्द्र कुमार जैन एवं कार्यकर्ताओं को मंगलमय शुभ-आशीर्वाद है कि सदा ज्ञान तथा अहिंसा धर्म का प्रचार करते रहे।

मंगल आशीर्वाद के साथ धर्म वृद्धि।

मुनि श्रुत सागर
२४ मार्च १९९९

शुभाशीष

श्री वीतरागाय नमः

परम पूज्य उपसर्ग विजेता,
धर्म केशरी, चारित्र चूड़ामणि,

ऋषि रत्न, वात्सल्यमूर्ति
आचार्य श्री १०८ दर्शन सागरजी महाराज

एवं

बालब्रह्मचारी उपाध्याय मुनि श्री १०८ समता सागरजी महाराज

ससंघ द्वारा

श्री दिगम्बर जैन समाज आष्टा

श्रीरस्तु कल्याणमस्तु शुभमस्तु धर्मवृद्धिरस्तु

आपके यहाँ श्री १००८ भगवान श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवम् गजरथ महोत्सव दिनांक २ मई से ७ मई सन् १९९९ तक होने जा रहा है एवं जो आपके यहाँ तीन मूर्ति व चौबीसी का निर्माण हुआ है सो उसके लिए मेरा शुभआशीर्वाद है कि धर्म प्रभावना हमेशा आष्टा नगर में होती रहे।

आ. दर्शन सागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर-२५० ४०४ (मेरठ) उ.प्र.

शुभकामनाएँ

डॉ. जैनपाल जैन
प्रधान संपादक,
स्मारिका प्रकाशन समिति
श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
आष्टा (सीहोर) म.प्र.

जय जिनेन्द्र!

आपका पत्र २४ फरवरी का प्राप्त हुआ था। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके वहां भगवान श्री आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव १ मई से ७ मई तक आयोजित किया गया है। कार्यक्रम की निर्विघ्न सम्पन्नता के लिए कृपया हमारी शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

इस शुभ अवसर पर आप जो स्मारिका का प्रकाशन कर रहे हैं यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं वहां पर निर्मित मंदिर व जिन बिम्बों का इतिहास भविष्य में सुरक्षित रखेगी। ऐसा हमें विश्वास है।

भवदीय
ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, अध्यक्ष



तीर्थंकर भगवन्तों के कल्याणकों की साकारता का आयोजन उस समाज के परम सौभाग्य एवं धर्म वात्सल्यता का प्रतीक कहा गया है। आष्टा नगर की धर्मप्राण समाज ने बड़े मनोयोग से श्रीमज्जिनेन्द्र पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव सम्पन्न कराकर अक्षय यश और पुण्य का महान कार्य किया। इस महायज्ञ में जिन्होंने तन-मन-धन अर्पित कर इसे प्रभावी बनाया, अवश्य अनेक पीढ़ियों तक उनके घर में सुख-समृद्धि-यश की व्यापकता बढ़ती रहेगी। सन्त प्रवर आचार्य श्री १०८ श्री भरतसागरजी महाराज जैसे महान संत के सान्निध्य में इस महोत्सव की गरिमा में ऐतिहासिकता समाहार हो गई। स्मारिका प्रकाशन का शुभायोजन अवश्य इसकी स्मृति को निरंतर स्थाईत्वता प्रदान करता रहेगा।

टीकमगढ़ (म.प्र.)
१७-४-९९

-पं. विमलकुमार जैन सौंरया
मुख्य प्रतिष्ठाचार्य

पद्मश्री बाबूलाल पाटोदी
पूर्व विधायक म.प्र.
इन्दौर

शुभकामना

आदरणीय श्री राजमलजी सेठी,
अध्यक्ष,
पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव,
स्मारिका प्रकाशन समिति

ऐतिहासिक नगर आष्टा के किले के अति प्राचीन जिन मंदिर में स्थापित भगवान आदिनाथ की सर्वांग सुन्दर प्रतिमा एवं जिन मंदिर के जीर्णोद्धार के पश्चात् आप महानुभावों ने पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं गजरथ का जो भव्य आयोजन रखा है उसी के साथ स्मारिका प्रकाशन का भी शुभ संकल्प किया है।

यों तो समाज में प्रतिष्ठा महोत्सवों की धूम है, पर आपके नगर में तो भगवान आदिनाथ की अति प्राचीन प्रतिमा एवं किले में स्थापित अति जीर्ण मंदिर का जीर्णोद्धार करके जो महोत्सव आयोजित किया जा रहा है, निश्चय ही उससे धर्म की महत्वपूर्ण प्रभावना होगी व श्रमण संस्कृति एवं जैन धर्म पर श्रद्धा स्थापित होगी।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि इस धार्मिक आयोजन के साथ ही आप महानुभावों ने हमारी संस्कृति के मूलाधार शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखरजी के आन्दोलन हेतु भी विचार विमर्श एवं ठोस निर्णय हेतु मध्यप्रदेश अंचल समिति का सम्मेलन भी आयोजित किया है, जिसमें समाज के शीर्षस्थ नेतागण उपस्थित होकर समाज को मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

देवाधिदेव जिनेन्द्र भगवान का प्रतिष्ठा महोत्सव अत्यन्त ही धार्मिक विधि-विधान पूर्वक सम्पन्न होगा, जिससे प्रतिमाजी में अतिशय प्रकट हो व नित्य प्रति क्षेत्र के प्रति आस्था बढ़ती रहे।

मेरा निवेदन है कि प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ ही साथ समाज में फैली अनेक कुरीतियों पर भी ऐसे महान् महोत्सव के अवसर पर गहन चिन्तन होना चाहिए। वर्तमान युग में हमारे समाज की संगठित शक्ति का उदय होना आवश्यक है। अनेकों उपजातियों के जाल में फंसे रहने से समाज में विघटन एवं विद्वेष पैदा होता है। हमारी संगठित शक्ति अहिंसा की शक्ति हो, जिसके समक्ष हिंसा टिक न सके। हमारा रसोईघर पवित्र एवं शुद्ध शाकाहारी हो, जिससे जैनत्व की छाप अन्यों पर भी गिरे। हमें निर्ग्रन्थ मुनिराजों की वैयावृति में अपने आपको समर्पित करना चाहिए। वीतरागता हमारा लक्ष्य हो। छोटे-बड़े, ऊँच-नीच के भेद भाव को मिटाकर भगवान आदिनाथ द्वारा प्रणीत, भगवान महावीर द्वारा प्रसारित धर्म का हम उदय कर सकें ऐसे पुण्य भाव ही इन आयोजकों के पीछे होना चाहिए। हमारी शक्ति धनबल में ही नहीं जनबल में व हमारे चरित्र पर निर्भर है। यह आयोजन सफलतम हो व इससे समाज कुछ ग्रहण करे, यही भावना है।

बाबूलाल पाटोदी

मंत्री
पर्यावरण एवं वन
भारत

शुभकामना

डॉ. जैनपाल जैन,
अध्यक्ष,
स्मारिका प्रकाशन समिति, आष्टा
जिला-सीहोर (म.प्र.)

प्रसन्नता का विषय है कि १००८ भगवान श्री आदिनाथ का पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव आष्टा में पूर्ण विधि विधान के साथ मनाया जा रहा है।

सदैव ही जैन चिन्तन में समाज में अहिंसा, सत्य एवं आस्था की भावना संचारित की है।

निश्चय ही इन महोत्सवों से समाज लाभान्वित होगा। इस अवसर पर मैं प्रकाशित हो रही स्मारिका की सफलता की कामना करता हूँ।

कमलनाथ

शुभकामना

श्यामाचरण शुक्ल
पूर्व मुख्यमंत्री
निवास- बी-८ श्यामला हिल्स, भोपाल

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि १००८ भगवान श्री आदिनाथ का पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव दिनांक २ मई से ७ मई तक पावन सलिला पार्वती के तट पर बसे आष्टा नगर में मनाने का निर्णय हुआ है।

यह पर्व आशा है ऐतिहासिक एवं स्मरणीय बनेगा। इस शुभ अवसर पर प्रकाशित स्मारिका एक संदर्भित ग्रन्थ के तौर सफलता प्राप्त करेगी।

आयोजन की सफलता के लिए मेरी शुभ कामनाएँ आपके साथ हैं।

श्यामाचरण शुक्ल

प्रेम नारायण ठाकुर
राज्य मंत्री, परिवहन (स्व.प्र.)
मध्य प्रदेश शासन
अध्यक्ष, म.प्र. रा.स.प. निगम

श्री राजमलजी सेठी
अध्यक्ष,
पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवम् गजरथ
महोत्सव, आष्टा, जिला-सीहोर (म.प्र.)

प्रिय श्री सेठी,

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि १००८ भगवान श्री आदिनाथ के पंचकल्याण प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव के पावन अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जैन धर्म सदियों से विश्व को 'अहिंसा परमो धर्मः' का संदेश देता रहा है जो मानवता की रक्षा के लिए आवश्यक है। यह स्मारिका जैन धर्म के आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए माध्यम बने यही कामना करता हूँ।

आदर सहित,

प्रेम नारायण ठाकुर

शुभकामना

विक्रम वर्मा
नेता प्रतिपक्ष
म.प्र. विधानसभा

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि १००८ भगवान श्री आदिनाथ का पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव २ मई से ७ मई तक आष्टा नगर में मनाया जा रहा है।

अपेक्षा है कार्यक्रम सोल्लासपूर्ण वातावरण में गरिमा के साथ सम्पन्न हो।

इन्हीं कामनाओं के साथ।

विक्रम वर्मा

डालचन्द्र जैन (पूर्व सांसद)
पूर्व कोषाध्यक्ष
म.प्र. कांग्रेस कमेटी (ई), भोपाल
तमेली चौक, सागर

डॉ. जैनपाल,
अध्यक्ष, एवं स्मारिका प्रकाशन समिति,
आष्टा

श्री राजमल सेठी अध्यक्ष पंच कल्याणक महोत्सव एवं गजरथ समिति के परिपत्र द्वारा दिनांक २ मई से ७ मई तक पंच कल्याणक एवं गजरथ महामहोत्सव के आयोजन का समाचार प्राप्त हुआ, धन्यवाद। समारोह को स्मरणीय बनाने के लिए स्मारिका प्रकाशन का निर्णय प्रशंसनीय है। कार्यक्रम की सफलता एवं प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

स्मारिका में प्रकाशन सामग्री से युवावर्ग को धर्म के प्रति सरल एवं सुबोध भाषा में जानकारी प्राप्त होगी। जिससे हमारे धार्मिक सिद्धान्तों को जीवन में मानने के लिए सहायक होगी। साथ ही स्मारिका में जिले की जैन समाज का इतिहास भी प्रकाशित किया जावे।

शुभकामनाओं के साथ।

भवदीय
डालचन्द्र जैन

शुभकामना

रंजीत सिंह गुणवान
विधायक, आष्टा, जिला-सीहोर (म.प्र.)

श्री सेठी जी,

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आष्टा की पावन धरती पर दिगम्बर जैन समाज द्वारा दिनांक २ मई ९१ से ७ मई ९१ तक १००८ भगवान श्री आदिनाथ का पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजराज महोत्सव मनाया जा रहा है।

आशा है कि इस महोत्सव में पधार रहे महानुभावों के लिए यह धार्मिक उत्सव चिर-स्मरणीय बने तथा इसकी अमिट छाप सदा बनी रहे।

मैं इस पुनीत पर्व के आयोजनकर्ताओं तथा महोत्सव में पधार रहे समस्त जैनाचार्यों एवं प्रबुद्ध नागरिकों को अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ प्रकट करता हूँ।

आपका
रंजीतसिंह गुणवान

नेमीचन्द जैन
सदस्य, म.प्र. विधानसभा, शुजालपुर



आदरणीय
डा. श्री जैनपालजी जैन,
अध्यक्ष, स्मारिका प्रकाशन समिति
आष्टा, जिला सीहोर (म.प्र.)

बड़े ही हर्ष के साथ सूचित किए जाने में आता है कि दि. जैन समाज के द्वारा प्राचीन मन्दिर का जीर्णोद्धार एवं विस्तार किया गया है, जिसमें त्रिमूर्ति (आदिनाथ-भरत-बाहुबली) की खड्‌गासन प्रतिमाओं के साथ, चौबीसी विराजित करने के सुयोग के साथ, १००८ भगवान श्री आदिनाथ पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव पूर्ण धार्मिक विधि विधान के साथ दिनांक २ मई ९१ से ७ मई ९१ तक मनाने जा रहे हैं।

इसी पुनीत पर्व पर इस कार्य को चिरस्थायी रूप देने के लिए स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। जो अत्यन्त ही सौभाग्य एवं गौरव की बात है, आपके प्रयासों की सफलता हेतु मंगल कामनाओं के साथ।

धन्यवाद!

आपका
नेमीचन्द जैन

अपनी बात....

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा व मालवा की माटी में चलने वाले प्रथम गजरथ महोत्सव के पुनीत पर्व पर प्रकाशित स्मारिका, महोत्सव, नगर, समाज व हमारे परिवेश को साथ ही गौरवशाली अतीत को स्मृति की परिधि में समेटने का ललित प्रयास है।

जिस प्रकार 'मार्दव' का महान अर्थ है विनम्रता और मृदुता को मन वचन एवं कर्म से अपनाना। अर्थात अभिमान रहित होना या सरलतामयी हो जाना। उसी प्रकार हमारा अथक प्रयास है कि 'मार्दव' की सहज प्रस्तुति अपने नाम की सार्थकतानुरूप, मानव मन को पावन सलिला पार्वती के निर्मल जल सी सरलता देकर पथ आलोकित करे।

मन और जीवन में सरलत्व बनाए रखने हेतु अपनी लघुता के लिए क्षमा याचना के भाव तथा किसी की गुरुता के लिए अनुग्रही भावों से स्मरण व अभिव्यक्ति परम आवश्यक है। इसी प्रयोजनार्थ आचार्य भरत सागरजी की आशीष छांव तले बैठ प्रमुख संयोजक श्रद्धेय श्री राजमलजी जैन कोठरी, अध्यक्ष श्री राजमलजी सेठी, महामंत्री श्री निर्मलकुमार जी श्रीमोड़, प्रधान सम्पादक डॉ. जैनपाल जैन व अन्य पदाधिकारियों की प्रेरणा एवं सहयोग को शब्दों की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता।

सर्वप्रथम आभारी हैं उन विज्ञापनदाताओं के जिन्होंने स्मारिका की सार्थकता को स्वीकार कर अर्थभार वहन किया। इस मुहिम में श्री नेमीचन्द जैन, जिनेन्द्र जैन, मनोहरलाल टोंग्या, भोपाल तथा श्री नरेन्द्र श्रीमोड़, मनोज जैन, मनोज सेठी एवं जीतेन्द्र जैन का प्रयास उल्लेखनीय है।

उन सभी गुरुजनों, विद्वानों और राजनेताओं का स्मरण आवश्यक है जिन्होंने आशीर्वाद संदेश, लेख एवं गद्य व पद्य रचनायें प्रदान कर हमें प्रोत्साहित किया जिसके फलस्वरूप स्मारिका का ऐतिहासिक स्वरूप बन पाया।

विविध रंगों के विविध मनकों को एक माला का स्वरूप दे पाना श्री भानुकुमार जैन, इन्दौर एवं श्री श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल के परामर्श से ही संभव हो सका।

इस स्मारिका को पठनीय व संग्रहणीय बनाने में जिन विद्वानों का परिश्रम लगा है, निश्चय ही वह साधुवाद के पात्र हैं।

स्मारिका प्रकाशन समिति व सम्पादक मण्डल के समस्त साथियों की लगन तथा ज्ञात-अज्ञात सभी शुभेच्छुकों के प्रयासों की प्रतिकृति है 'मार्दव'।

इसे सजाने-संवारने में छायाकार भाई सुशील जैन, संजय जैन व राजेश कटारिया का सहयोग बिसराया नहीं जा सकता। इतने अल्प समय में 'मार्दव' की मार्दवमयी प्रस्तुति श्री महेश कुमार शर्मा (कम्प्यूटर ऑपरेटर, अजमेरा प्रिंटर्स, इन्दौर) व श्री अनिल अजमेरा (अजमेरा प्रिंटर्स, इन्दौर) के अथक सहयोग बिना संभव न थी।

हमारे अल्प ज्ञान के कारण कुछ त्रुटियाँ रह जाना स्वाभाविक है। कई विद्वानों की विद्वत्तापूर्ण रचनाएँ स्थानाभाव के कारण 'मार्दव' में सम्मिलित न की जा सकी। जाने-अनजाने में आपके हृदय को लगने वाली ठेस हेतु हृदय से क्षमा प्रार्थी हैं। आपके क्षमा भाव आपके साथ-साथ हमें भी मार्दव प्रदान करेंगे।

मधुर स्मृतियाँ मुखरित हों,
मूक हँसी में बिखरेंगी,
मार्दव के पृष्ठों पर बिखरी यादें,
अन्तरतम में निखरेंगी
अन्तराल कितना भी हो,
शब्द-शब्द
समय की सतह पर
सदा ही मुस्करायेंगे
प्रस्फुटित हो स्वयं ही
सौरभ ये बिखरायेंगे।

आपका
सुरेन्द्र कुमार जैन
एम.ए. (भूगोल) बी.एड. (R.C.E.) डी.पी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक

श्री आदिनाथ चालीसा

➤ अरविन्द जैन

कैलाश पर्वत पर जा विराजे, मोक्ष समय जिनराज
गंगा उद्‌गम कर दिया, जो जन-जन में विख्यात ॥
शीश नवा अरिहन्त को सिद्धम करूं प्रमाण ।
आचार्य उपाध्याय का ले सुखकारी नाम ॥
सर्वसाधु और सरस्वती, जिन मंदिर सुखकार
प्रथम तीर्थंकर आदि देव को मन मंदिर में ध्याय ॥

जय श्री ऋषभ देव गुणधारी ।
सब जीवों के तुम हितकारी ॥१॥

तुम जग के ब्रह्मा कहलाये ।
रत्नत्रय के सूत्र बताये ॥२॥

जन्म तुम्हारा हुआ जब स्वामी ।
था संसार मूढ़ अज्ञानी ॥३॥

तुमने जीने की कला सिखाई ।
सत्य धर्म की राह बताई ॥४॥

असि मसि का मंत्र बताया ।
कृषि विद्या का काम सिखाया ॥५॥

सरयू तट पर नगरी अवध ।
है पुण्य भूमि चिर शास्वत ॥६॥

मनु वृत नाभिराज मरु देवी ।
जय जय होत गगन में भेदी ॥७॥

अषाढ़ बदी दूज को स्वामी ।
गर्भ में आए शिवपुर गामी ॥८॥

माँ को सोलह सपने आए ।
गज आदि के दर्शन पाए ॥९॥

चैत वदी नवमी उपकारी ।
जन्म लिया शिवगुण के धारी ॥१०॥

प्रभु करने को दरश तिहारे ।
देव लोक से इन्द्र पधारे ॥११॥

इन्द्र संग एरावत भी लाए ।
रूप देखकर अति हर्षाए ॥१२॥

पाण्डुक शिला पर तुम्हें बिठाया ।
नीर क्षीर से अभिषेक कराया ॥१३॥

बाल रूप की लीला न्यारी
मोहनी सूरत है अति प्यारी ॥१४॥

प्रभु, जब तुम पर यौवन आया ।
कामदेव ने शीश नवाया ॥१५॥

यशस्वति ने ललना जाया ।
भरत से भारत वर्ष कहलाया ॥१६॥

सुनंदा पुत्र बाहुबली स्वामी ।
पितु से पूर्व भये शिवगामी ॥१७॥

नीलांजना की मृत्यु देखकर ।
मन आया वैराग्य घुमड़कर ॥१८॥

चैत्र वदी नवमी उपकारी ।
सिद्धार्थ वन में दीक्षाधारी ॥१९॥

छः माह तप किया अतिभारी ।
कहलाए तुम समताधारी ॥२०॥

आहार को स्वामी नगर पधारे ।
नवधा भक्ति कोई न जाने ॥२१॥

एक वरष बाद आदि स्वामी ।
हस्तिनापुर पहुँचे शिवगामी ॥२२॥

पूर्व भव का स्मरण आया ।
राजा श्रेयांस ने पुण्य कमाया ॥२३॥

नवधा विधि से प्रभु पड़गाहा ।
इक्षु रस का आहार कराया ॥२४॥

वैसाख सुदि तीज थी आई ।
यह आखा तीज कहलाई ॥२५॥

फागुन बदि ग्यारस को स्वामी ।
नाथ हुए तुम केवलज्ञानी ॥२६॥

वृषभ सेन मुख्य बतलाए ।
चौरासी गणधर शीश नवाए ॥२७॥

बदी चौदस माघ माह आया ।
गिरि कैलाश से मोक्ष पद पाया ॥२८॥

पंचम काल मोक्ष की बेड़ी ।
अतिशय हुआ था चाँदखेड़ी ॥२९॥

कोटा दीवान को सपना आया ।
संकेत लाने का उसने पाया ॥३०॥

पर्वत माला है बारह पाटी ।
है नीरव बीहड़ सी घाटी ॥३१॥

लाल पाषाण की प्रतिमा प्यारी ।
है मनोज्ञ अतिशय मनहारी ॥३२॥

मूरत प्रभु की अति सुहाए ।
जा की महिमा कही न जाए ॥३३॥

मार्ग में रुपाली नदी जो आई ।
गाड़ी हो गई चिर स्थाई ॥३४॥

नाना प्रकार के जतन लगाए ।
फिर भी गाड़ी नहीं चल पाए ॥३५॥

सेठ किशन को भाव यह आया ।
नदी तीरे मंदिर बनवाया ॥३६॥

माघ सुदि नवमी उपकारी ।
पंच कल्याणक हुआ अतिभारी ॥३७॥

शरण तुम्हारी जो कोई आवे ।
उसकी व्याधा सब मिट जावे ॥३८॥

समता भाव से जो यह ध्यावे ।
वसी बेकुंठ अमर पद पावे ॥३९॥

चालीसा को चन्द्र बनाये ।
आदीश्वर को शीश नवाए ॥४०॥

गुरु पुष्पदन्त को दो शिष्य, तरुण, प्रज्ञा महाराज ।
शुभ आशीष पा आपका करुं गर्व में आज ॥
अन्तर मम प्रेरित कियो, दियो ज्ञान प्रकाश ।
तब 'सौभाग्य' पुत्र ने, कीनो यों सहास ॥

जैन रोडवेज, न्यू इतवारा रोड, भोपाल

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

अनादि निधन मंत्र

णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाणं,

णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं,

णमो लोए सव्व साहूणं ।

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवदू मंगलं।।

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं
केवलिपण्णतो धम्मो मंगलं।

चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंतालोगुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा,
साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णतो धम्मोलोगुत्तमा।

चत्तारिसरणं पव्वज्जामि अरिहंतेसरणं पव्वज्जामि,
सिद्धंसरणंपव्वज्जामि, साहूसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

मंगलम् भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।

मंगलम् कुन्दकुंदाद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।१।।

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं।

प्रधानं सर्वधर्माणां, जैन जयतु शासनम्।।२।।

ओंकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।

कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमोनमः।।३।।

❖❖❖

आदि तीर्थंकर : भगवान ऋषभदेव

➤ संकलन- जीतेन्द्रकुमार जैन (जे.के.),आष्टा

✡ जन्म-	चैत्र कृष्ण ९, उत्तराषाढ़ के अन्तिमपाद अभिजित नक्षत्र, ब्राह्म योग
✡ पिता का नाम-	नाभिराय (कुलकर)
✡ माता का नाम-	मरुदेवी
✡ शिक्षा-	तीन ज्ञान के धारी (जन्म से)
✡ विवाह-	कच्छ व महाकच्छ की राजकुमारियों के साथ (१) यशस्वती (२) सुनन्दा
✡ पूर्व परिवार-	(१) रानी यशस्वती (९९ पुत्र एवं भरत) एक पुत्री ब्राह्मी (२) रानी सुनन्दा पुत्र बाहुबली और पुत्री सुन्दरी
✡ वैराग्य का कारण-	राजसभा में नृत्यरत नर्तकी नीलांजना की मृत्यु ऋषभदेव के वैराग्य का कारण बनी
✡ गृह त्याग एवं मुनिव्रत-	चैत्र कृष्णा ९ को सिद्धार्थ वन में जाकर मुनिव्रत धारण किया।
✡ तपस्या-	छः माह की घोर तपस्या
✡ आहार-	तपश्चर्या के बाद जब आहार के लिए गये तो आहार विधि का ज्ञान नहीं होने से बिना आहार वापस आ गए। और तपश्चर्या में लीन हो गए। कुछ समय पश्चात् जब पुनः आहार को निकले, पूर्व भवके स्मरण से आहार विधि का ज्ञान होने पर हस्तिनापुर नरेश श्रेयांस (प्रपौत्र) ने प्रभु को वैशाख शुक्ला ३ को इच्छुरस का आहार दिया।
✡ कैवल्य की प्राप्ति-	फाल्गुन कृष्णा ११ को पूर्वान्ह उत्तराषाढ़ नक्षत्र में, एक हजार वर्ष की मौन साधना के पश्चात् पुरमिताल नगर के पास शकट वन में चार घातिया कर्मों का नाश करके केवल्य की प्राप्ति हुई।
✡ गणधर-	ऋषभदेव के ८४ गणधर थे, प्रमुख वृषभसेन, सोम प्रभ, श्रेयांस
✡ आर्यिकाएँ-	ब्राह्मी, सुन्दरी
✡ मुनि-	८४ हजार मुनि संघस्थ
✡ आर्यिकाएँ-	साढ़े तीन लाख
✡ श्रावक-	तीन लाख
✡ श्राविकाएं-	पाँच लाख
✡ प्रमुख श्रावक-	श्रुति कीर्ति
✡ प्रमुख श्राविका-	प्रियव्रता
✡ उपदेश-	कर्मों के बन्धन तोड़कर, मन वचन, काय से संव्रत रहकर, परिग्रह और आरम्भ से मुंह मोड़कर, इन्द्रियजयी बनकर निर्वाण प्राप्त हो सकता है।
✡ निर्वाण-	कैलाश पर्वत से माघ कृष्णा १४ के दिन मुक्त हो निर्वाण प्राप्त किया।

भगवान आदिनाथ ने गृहस्थों को जीविकोपार्जन का उपाय बताते हुए कहा था

हे प्रजाजनों असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प इन छह क्रियाओं द्वारा आजीविका करो। *असि* का मतलब है तलवार धारण कर प्रजा की जंगली जानवरों एवं शत्रु से सुरक्षा करो। *मसि* का मतलब है लिखकर आजीविका करना। *कृषि* से मतलब है जमीन जोतना, बोना आदि। *विद्या* का मतलब है शास्त्र पढ़ाकर या नृत्य, गायन सिखाकर आजीविका करना। *वाणिज्य* का मतलब है व्यापार कर आजीविका करना। *शिल्प* का मतलब है हस्त की कुशलता से जीविका करना। *ऋषि* का मतलब है आत्म तंत्र इसमें श्रावकों को देवपूजा, गुरु पास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान छः क्रियायें करना। सामायिक, स्तवन, वन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग छः प्रकार की मुनियों की क्रियायें बताईं। बताए गए मार्ग पर चलकर देश खुशहाल होगा और पूरे विश्व को सुख-शान्ति का संदेश देगा।

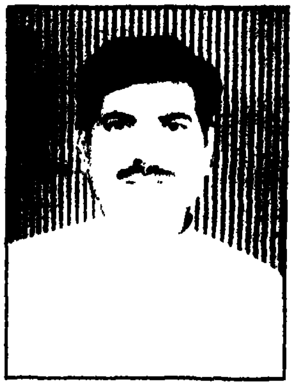
प्रभु से प्रार्थना - हे प्रभु आदि ब्रह्मा, युग सृष्टा, युगादि पुरुष, विधि और विधाता आदि नामों से पुकारे जाने वाले, हम सबकी तथा सम्पूर्ण विश्व की रक्षा करें, और सबको सुख-शान्ति प्रदान करें।

जीवन परिचय-

चतुर्थ पट्टाधीश : आचार्य श्री अजित सागरजी

➤ संकलन-कैलाशचन्द्र जैन

शस्य श्यामला मालवा के सीहोर जिले की तहसील आष्टा के ग्राम भंवरा में विक्रम संवत् १९८२ में श्री १००८ भगवान महावीर की परम अहिंसामय दिगम्बर जैन परंपरा में पद्मावती पोरवाल के परम पुण्यशाली सुश्रावक श्री जवरचंदजी घर माता रूपाबाई की कोख से एक बालक ने जन्म लिया। बालक का नाम यह बालकथा राजमल रखा गया। परिवार की स्थिति सामान्य थी। साधारण काम धंधा था।



उनसे बड़े तीन भाइयों (१) केशरीमल (२) मिश्रीलाल (३) सरदारमलजी में सिर्फ बड़े भाई केशरीमलजी ने ही वैवाहिक बंधन में बंधना स्वीकार किया बाकी दोनों भाई ब्रह्मचर्य व्रत लेकर साधना में लगे रहे।

भाई सरदारमल का सातवीं प्रतिमा के व्रत धारण कर सन् १९७८ में धरियाबाद (राजस्थान) में स्वर्गवास हो गया। बड़े भाई केशरीमल के पुत्र कैलाशचन्द्र आष्टा में रह रहे हैं। बालक राजमलजी बुद्धि से प्रखर थे, स्वभाव सरल था और व्यवहार विनम्र। अतः वस्तु परिज्ञान उसे शीघ्र हो जाता था। देवास जिले के अजनास ग्राम में स्कूली शिक्षा कक्षा ४ तक ही हो सकी। आगे अध्ययन से क्रम नहीं चल सका। राजमल को इस भौतिक विद्या से प्रयोजन भी क्या था। उसे तो आत्मविद्या में दक्षता पानी थी। अपने असीम पुण्य से राजमल को संवत् २००० में आचार्य श्री वीरसागरजी महाराज के दर्शनों का प्रथम सौभाग्य मिला। आचार्यश्री के सानिध्य से आपके जीवन की दिशा ही बदल गई। आपके ह्रदय में परम कल्याणकारी जैनधर्म के प्रति अनन्य श्रद्धा बलवती हुई। १७ वर्ष की किशोरावस्था में ही परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री वीर सागरजी महाराज की सत्प्रेरणा से प्रभावित होकर आप संघ के अभिन्न अंग हो गए और आपने जैनागम का ठोस गहन अध्ययन प्रारंभ कर दिया। जैसे-जैसे आपकी निर्मल आत्मा में ज्ञान प्रकट हुआ वैसे-वैसे आपकी प्रवृत्ति वैराग्योन्मुख होने लगी। ज्ञान का फल वैराग्य ही तो है।

जैनागमों का आपका अध्ययन फलीभूत हुआ। २० वर्ष की युवावस्था में जहाँ आम युवक-युवतियाँ शादी-ब्याह की चिंता में रत रहकर अपना संसार बसाने का आयोजन करते हैं, वहीं राजमल ने विक्रम संवत् २००२ में झालरापाटन (राजस्थान) में आचार्यश्री से सप्तम प्रतिमा (आजन्म ब्रह्मचर्य) के व्रत अंगीकार कर भोगों से विरति का उपक्रम प्रारंभ किया। अब राजमल ब्रह्मचारी राजमल हो गए। बुद्धि तो प्रखर थी ही, लगन और अथक श्रम से आपने आगम ज्ञान का मानसिक और भौतिक दोनों रूपों से संनय किया। फलस्वरूप संघ और समाज में 'महापंडित' के रूप में लोकप्रियता मिली। परंतु आत्मार्थी राजमल को इस लोकप्रियता और विद्वता से तृप्ति नहीं मिली। परिणामतः आपने सीकर (राजस्थान) में अपार जनसमूह के बीच परम पूज्य दिगम्बर जैनाचार्य श्री शिवसागरजी महाराज से संपूर्ण अतरंग और बहिरंग परिग्रह का त्याग कर कार्तिक शुक्ला चर्तुथी संवत् २०१८ के दिन महाव्रत अंगीकार कर मुनि दीक्षा ग्रहण की।

अब राजमल मुनि श्री अजितसागरजी बन गए। विद्या व्यसनी मुनिश्री संघ में पठन पाठन के ही कार्य में संलग्न रहते थे। एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गँवाते थे। वि.स. २०२५ तक अपने दीक्षा गुरु के सानिध्य में रहे, जिससे आपका ज्ञान और प्रौढ़ हुआ अनन्तर आ. कल्प श्री श्रुतसागरजी के संघ में रहे फिर कुछ वर्षों तक संघ का स्वतंत्र नेतृत्व किया। अभिक्षण ज्ञानोपयोगी मुनिश्री संस्कृत व्याकरण, जैन न्याय, दर्शन, साहित्य तथा धर्म आदि में निष्णात ज्ञान ध्यान तपोरत् साधु थे। विधिवत शिक्षण के बिना ही आपने श्रम और विलक्षण प्रतिभा से आपने जो ज्ञानार्जन कर उसका फल प्राप्त किया उसे देखकर अच्छे-अच्छे विद्वान भी आश्चर्यचकित हो नतमस्तक हो जाते थे। आपकी ज्ञानार्जन की रुचि और तल्लीनता सबके लिए ईर्ष्या की वस्तु थी। आप बड़ी रुचि के साथ संघस्थ साधुओं तथा आर्यिकाओं को अध्ययन कराते थे। तथा अन्य रुचिशील जिज्ञासुओं की शंकाओं का संतोषप्रद समाधान करते थे।

अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त आपकी रुचि दुष्प्राप्य एवं अप्रकाशित प्राचीन ग्रन्थों के प्रकाशन की भी रहती थी। वर्षायोग में या विहार मार्ग में जहाँ भी आप जाते थे ग्रन्थ

भंडारों का अवलोकन करते थे और अप्रकाशित रचनाओं का संशोधन कर उन्हें प्रकाशित करने की प्रेरणा देते थे। अद्यावधि आप द्वारा संशोधित तथा आपकी प्रेरणा से प्रकाशित निम्न-लिखित कृतियाँ प्रकाश में आई हैं-

१. गणधर वलय पूजा २. श्रुतस्कन्ध पूजा विधान ३. सुक्ति मुक्तावली ४. शुभाषित मंजरी दो भाग ५. सम्यक्त्व कौमुदी ६. परमाध्यात्म तरंगिणी ७. स्तोत्रादी संग्रह ८. छहढाला संग्रह ९. सुक्ति मुक्तावली संस्कृत हिन्दी पद्य १०. शुभाषितावली ११. कवल चन्द्रायण व्रत विधान १२. कथा चतुष्टय १३. दश धर्म १४. श्लोकार्थ सुक्ति संग्रह १५. धन्यकुमार चरित्र १६. सर्वोपयोगी श्लोक संग्रह।

सर्वोपयोगी श्लोक संग्रह में ४२४० श्लोक हैं जिसकी हिन्दी टीका पं. पन्नालाल श्री साहित्यकार सागर वालों ने की है।

मात्र सत्तरह वर्ष का (जीवन का प्रारंभ) काल अपने घर में व्यतीत किया। विवेक जागृत होते ही आप विरक्त हुए और तब से अनवरत वही विरक्तता पुष्ट होती गई। दिनांक ७ जून १९८७ को उदयपुर राजस्थान में विशाल जनसमूह के समक्ष चर्तुविध संघ के सान्निध्य में आ. कल्प श्री श्रुतसागरजी महाराज के आदेश से आपको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया।

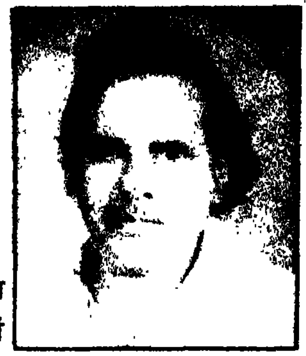
आ. शान्ति सागरजी महाराज की परम्परा में आप चौथे आचार्य हुए हैं। आपने १० मुमुक्षुओं को क्षुल्लक, आर्यिका एवं मुनि दीक्षा प्रदान की थी।

आपकी समाधि १५ मई १९९० को सावला राजस्थान में हुई।

➤ पुराने थाने के पास, आष्टा

❖❖❖

आचार्य रत्न मुनि श्री १०८ भरत सागरजी



➤ श्री राजकुमार श्री मोड़, आष्टा

जीवन परिचय

✡ जन्मतिथि- १६, दिसम्बर १९५०

✡ जन्म स्थान- 'गूडर' ग्राम, जिला शिवपुरी, म.प्र.

✡ गृहस्थ नाम- देवेन्द्रकुमार जैन

✡ जाति- जैन (परवार) गोत्र 'बांझल'

✡ पिता का नाम- स्व. गुलाबचन्द जैन 'परवार'

✡ माता का नाम- भागवति बाई (वर्तमान में आर्यिका श्री १०५ विपुल मति माताजी आचार्य श्री १०८ वर्धमान सागरजी महाराज की संघस्थ)

✡ शिक्षा- ११वीं इन्टरमीजियेट, श्री पार्श्वनाथ गुरुकुल खुरई, सागर, म.प्र.

✡ धार्मिक शिक्षण- छहढ़ाला, मोक्षशास्त्र नैतिक शिक्षण हिन्दी जैन धर्म विशारद (एम.पी. जैन गुरुकुल खुरई, सागर)

✡ पूर्व पारिवारिक सदस्य- धर्मपत्नि सुलोचनादेवी एवं दो पुत्र

✡ विशेष कार्य- राजनीति सेवा, समाज सेवा, धार्मिक पाठशाला में अध्यापन कार्य

✡ धार्मिक संस्कार- बचपन से ही

✡ गृह त्याग- २०-१०-१९७७

✡ व्रत गृहण- दूसरी प्रतिमा के व्रत श्रावण सुदी ७ को श्री सम्मेद शिखरजी में १९७८ तथा सप्तम प्रतिमा व्रत श्री पावापुरीजी में

✡ क्षुल्लक दीक्षा- परम पूज्य आचार्य श्री १०८ सुमति सागरजी महाराज द्वारा श्री चम्पापुर सिद्ध क्षेत्र में पंच कल्याणक के अवसर पर १ फरवरी १९७९

✡ मुनि दीक्षा- श्रवण बेलगोला (गोमट्टेश्वरजी में १ मार्च १९८१ फाल्गुन कृष्ण १० रविवार को मस्तकाभिषेक के अवसर पर

✡ दीक्षा नाम- मुनि श्री १०८ भरत सागरजी

✡ उपाध्याय पद- १४-३-८२ को सूरत (गुजरात) में परम पूज्य आचार्यरत्न श्री सुमति सागरजी महाराज द्वारा दिया गया।

✡ एलाचार्य- १२-२-८९ को ऐतिहासिक पंचकल्याणक हाटपीपल्या, देवास (म.प्र.) पं.पू. आ. श्री १०८ सुमतिसागरजी की आज्ञा से १ लाख जन समूह की उपस्थिति में दिया गया।

✡ आचार्य- सोनागिरजी में प.पू.आ. श्री १०८ सुमति सागरजी की आज्ञा से

✡ उपसर्ग विजयी- भयानक तीव्र असाता वेदनीय कर्म उदय के आने पर श्री ऋषभदेव (केशरियाजी) जिला उदयपुर १४-३-८३ क्षुल्लक श्री १०५ कुन्थु सागरजी साथ में थे।

✡ सत् पथ दर्शक- सत् पथ दि. भवन का शिलान्यास खैरवाड़ा जिला उदयपुर में १५-२-८४ को दि. जैन हुम्मड़ एवं समस्त दि. जैन समाज द्वारा

✡ प्रखर प्रवक्ता- खैरवाड़ा (जिला उदयपुर) में श्री १००८ नेमिनाथ पंच कल्याणक महोत्सव के अवसर पर दि. २०-१-९१ को दिगम्बर जैन समाज दशाहुम्मड़ समाज द्वारा २५ हजार जन समुदाय के बीच विभूषित किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री १०८ जयसागरजी उपस्थित थे।

✡ धर्म प्रभावक- बड़ौदा में त्रिलोक विधान मण्डल दि. ११-३-९२ से २०-३-९२ तक पं. प्रतिष्ठाचार्य श्री प्रदीप कुमारजी शास्त्री (मधुर) बम्बई के तत्वावधान में हुआ। प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप कुमारजी एवं दि. जैन समाज बड़ौदा द्वारा १० हजार जनसमुदाय के मध्य धर्म प्रभावक पद से विभूषित किया।

✡ चातुर्मास

क्र.	वर्ष	स्थान
१	१९८१	तीन मूर्ति (पोदनपुर)
२	१९८२	ईडर साबरकांठा (गुजरात)
३	१९८३	विजय नगर (साबरकांठा)
४	१९८४	दाता भवानगढ़ (गुजरात)
५	१९८५	तारंगासिद्ध क्षेत्र (महेसाणा)
६	१९८६	मोटी जहेर (खेड़ा) गुजरात
७	१९८७	खैरवाड़ा (उदयपुर) राजस्थान
८	१९८८	हाटपीपल्या (देवास) म.प्र.
९	१९८९	इन्दौर (छावनी) म.प्र.
१०	१९९०	धार (म.प्र.)
११	१९९१	पावागढ़, पंचमहल, गुजरात
१२	१९९२	बड़ौदा, गुजरात
१३	१९९३	
१४	१९९४	धार (म.प्र.)

✡ प्रतिष्ठाएँ

१. इलाहाबाद (उ.प्र.)
२. देवगढ़ (म.प्र.)
३. सोनागिरि (म.प्र.)
४. कर्नाटक (द. कर्नाटक)
५. कर्नाटक (उ. कर्नाटक)
६. हिम्मतनगर (गुजरात)
७. दाताभवानगढ़ (गुजरात)
८. कोल्यारी (राजस्थान)
९. अहमदाबाद (गुजरात)
१०. कलोल (गुजरात)
११. मोटी जहेर (गुजरात)
१२. विजयनगर (गुजरात)
१३. गुमास्ता नगर, इन्दौर (म.प्र.)
१४. हाटपीपल्या (म.प्र.)
१५. ग्राम कोठरी, जिला सीहोर (म.प्र.)
१६. अजनोद, उज्जैन (म.प्र.)
१७. क्लर्क कालोनी, इन्दौर (म.प्र.)
१८. खैरवाड़ा, उदयपुर
१९. सूरत, गुजरात
२०. अहमदाबाद, गुजरात

❖❖❖

॥ श्री ॥

परम पूज्यनीय आचार्य श्री भरत सागरजी
के चरणों में

श्रद्धा सुमन

आचार्य भरत सागर गुरु हैं हमारे ।
यह समकित की गंगा बहे मुख के द्वारे ॥ टेक ॥
अभी एक तरुणाई ने आँख खोली ।
वह राग वैराग्य-सा मुख से बोली ॥
यह परिजन की ममता तजो घर है सारे,
आचार्य ...
यह माया की नगरी से मुख को है मोड़े ।
कड़ी श्रृंखलायें यह जग की है तोड़े ॥
चले कंटकों के पथों को निहारे,
आचार्य ...
परम ब्रह्मचर्य के व्रत में रमे हैं ।
यह दिग्व्रत महाव्रत दिगम्बर धरे हैं ॥
दिशाओं के अम्बर को ओढ़े हैं सारे,
आचार्य ...
चलो जिनेन्द्र चरणों में दो पुष्प रख दो ।
यह नरभव सफल अपना जीवन है कर लो ॥
धरो व्रत दिगम्बर बनो जग से न्यारे,
आचार्य ...

➤ जिनेन्द्र जैन
जैन रोडवेज,
भोपाल (म.प्र.)

जीवन-झलक

मुनिश्री १०८ श्रुतसागरजी महाराज

➤ अशोक कुमार श्रीमोड़

भारत के हृदय स्थल मालवा प्रान्त की शस्य श्यामला भूमि पर जीवन दायिनी पार्वती नदी एवं पापनाशिनी नदी के संगम स्थल के निकट ऐतिहासिक नगरी आष्टा में भगवान महावीर की अहिंसामयी परंपरा को मानने वाले पदमावती पोरवाल 'श्री मोड़' गोत्रीय श्री छोगमलजी निवास करते थे। वैद्यक उनका पेशा था।

हकीमजी की धर्म पत्नि श्रीमती मिश्रीबाई ने विक्रम संवत् १९९० में एक पुण्य आत्मा को जन्म दिया, जिसका नाम रखा गया 'लाभमल'। उनके चार भाई एवं दो बहनें हैं। लाभमल बचपन से ही धार्मिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते रहे।

संवत २००६ में आपका विवाह कमलाबाई के साथ सम्पन्न हुआ। आपके भाई क्रमशः केशरीमल (भाईजी), मूलचन्द जादूगर, दिलीप कुमार जैन, राजकुमार जैन, एवं चार पुत्र-अशोक कुमार जैन, अनिल कुमार जैन, अरुण कुमार, अजय कुमार हैं तथा तीन पुत्रियाँ क्रमशः पुष्पादेवी, मन्जुलता एवं मीना हैं।

प्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य विद्वान पंडित कन्हैयालालजी नारे शास्त्री के सानिध्य में धार्मिक अध्ययन करने लगे।

आपकी रुचि बचपन से ही गुरु सेवा पर विशेष रही। १५ वर्ष की अवस्था से ही शूद्र जल का त्याग कर मुनिराज को आहार दिया। इस प्रकार आप व्रतों का पालन करते हुए अपनी गृहस्थी चलाते रहे।

आपने धार्मिक साधना एवं लोक व्यवहार का साथ-साथ निर्वाह कर धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा अर्जित कर अपने नाम को चरितार्थ किया। आत्म कल्याण हेतु सांसारिक बंधनों से विमुक्त होकर जीवन सफल करने की भावना आपमें बचपन से ही थी। हमेशा से ही आप बहुत ही सरल एवं भद्र परिणामी रहे हैं। मानव सेवा ही आपके जीवन का प्रमुख उद्देश्य रहा। दि. जैन सन्मार्ग समिति के आप महामंत्री बहुत समय तक रहे हैं।

इसके अन्तर्गत् आदर्श विवाह एवं समाज सुधार के उल्लेखनीय कार्यों में आपका पूर्ण योगदान रहा है। आपने एवं परिवारजनों ने आपकी प्रेरणा से अपने पूर्वजों की जमीन आष्टा नगर के किला मन्दिर को दान कर दी जिसके कारण ही त्रिमूर्ति भरत, बाहुबली एवं आदिनाथ और चौबीसी का निर्माण संभव हुआ।

सन् १९८६ में मूर्ति लाने जयपुर गए। वहाँ से लौटते समय आप उज्जैन में आचार्य १०८ दर्शन सागरजी महाराज द्वारा सम्पन्न दीक्षा समारोह में ब्रह्मचारी सुरेश कुमारजी (वर्तमान उपाध्याय १०८ समता सागरजी) के धर्म पिता बने एवं इसी दिन १० अगस्त १९८६ को आपने दो प्रतिमा के व्रत धारण किए।

तदोपरान्त भादवा सुदी दूज को चा. च. आ. श्री शान्ति सागरजी की पुण्यतिथि के अवसर पर सप्तम प्रतिमा के व्रत लिए। दिनांक २९ नवम्बर १९८७ को भारत की राजधानी दिल्ली में १०८ आ. दर्शन सागरजी से भव्य समारोह में क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की। अब आपका नाम ब्रह्मचारी लाभचन्द्र से बदलकर श्री १०५ क्षुल्लक सकल कीर्ति जी रखा गया।

आपका प्रथम चातुर्मास सन् १९८८ में लाल मन्दिर चांदनी चौक, दिल्ली में हुआ तथा द्वितीय चर्तुमास त्रिनगर नई दिल्ली में संपन्न हुआ।

तत्पश्चात् संघ वहां से बिहार करके बुंदेलखंड की यात्रा करता हुआ सुसनेर (शाजापुर म.प्र.) पहुँचा। वहाँ नगर में संघ का अभूतपूर्व स्वागत हुआ एवं आचार्य दर्शन सागरजी की प्रेरणा से सुसनेर समाज के भाव कल्पद्रुम विधान कराने के हुए। १९९० के चार्तुमास के दौरान इस भव्य आयोजन में २२ अगस्त १९९० को क्षुल्लक श्री सकलकीर्ति जी को मुनि दीक्षा प्रदान की गई तथा आपका नाम श्री १०८ मुनि श्रुतसागरजी रखा गया।

वहाँ से संघ का विहार करते हुए अतिशय क्षेत्र जामनेर, कालापीपल, सीहोर होकर आष्टा में पदार्पण हुआ। यहाँ पर जैन एवं जैनेतर लोगों द्वारा नगर में अभूतपूर्व स्वागत हुआ। आचार्य श्री एवं आपकी प्रेरणा से ऋषिमंडल विधान धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ।

आपके चर्तुमास १९९१ इन्दौर में, १९९२ सनावद, १९९३ अजमेर तथा १९९४ जयपुर में धर्म प्रभावना के साथ संपन्न हुए।

अणुव्रत और कुछ नहीं आत्मकल्याण का रास्ता है,
यह पूर्ण खुराक नहीं बल्कि सुबह का नाश्ता है।

हे वात्सल्य सिन्धु, श्रमण रत्न, श्री श्रुतसागरजी नाम तुम्हारा
अखण्ड महाव्रति मुनिराज को, कोटि-कोटि नमन हमारा।

मुनि श्री १०८ श्रुत सागरजी महाराज की संयम यात्रा



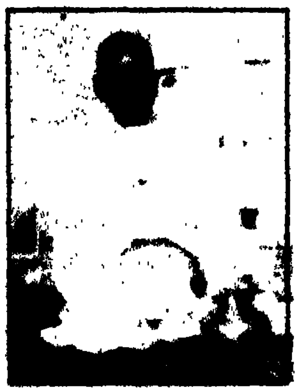
गृहस्थ
श्री लामभल जैन
आष्टा (किला)



क्षुल्लक अवस्था में
स्वाध्याय



मुनि श्री १०८ श्रुत सागरजी महाराज



ब्रह्मचारी



क्षुल्लक सकल कीर्ति

पूज्य १०५ जैनमती माताजी का जीवन परिचय

➤ कमल जैन
अध्यक्ष, समस्त अरिहन्त
मंडल आष्टा

■ परिचय :

परम पूज्य १०५ जैनमती माताजी का जन्म माघ विदी ४ सन् १९२७ में आष्टा तहसील के ग्राम हराजखेड़ी में हुआ। आपके पिता का नाम हंसराजमल जी था एवं माता का नाम सिंगाबाई था, जो अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के थे।

आपकी बचपन से ही धर्म में काफी रुचि थी। आपका विवाह ११ वर्ष की आयु में श्री मगनलालजी अरनिया वालों के साथ हुआ। परन्तु दो वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद आपके पति का स्वर्गवास हो गया। आपकी बहन का नाम सुशीला बाई एवं आपके ५ भाई हैं, श्री डालचन्दजी, श्री सुन्दरलालजी, श्री सूरजमलजी, श्री मेजमलजी एवं श्री बाबूलालजी।

■ वैराग्य :

शनैः शनैः आपकी रुचि और अधिक धार्मिक होती गई और कालावधि के अनुसार सन् १९७५ में श्री १०८ दर्शन सागरजी महाराज से दो प्रतिमा धारण की।

सन् १९७७ में सोनागिरि सिद्ध क्षेत्र में श्री १०८ सुमति सागरजी महाराज से दीक्षा ग्रहण की। आपका प्रथम चातुर्मास श्री महावीरजी में हुआ, तत्पश्चात झांसी, शिवपुरी, गोम्मटेश्वर बाहुबली, आष्टा, ललितपुर, भोपाल, खातेगांव आदि स्थानों पर भी चातुर्मास हुए। सन् १९९२ में श्री १०५ जैनमती माताजी के चातुर्मास का सौभाग्य हम समस्त दिगम्बर जैन समाज ग्राम आष्टा जिला सीहोर को प्राप्त हुआ।

■ शिक्षा दीक्षा :

आप बचपन से पढ़ी-लिखी नहीं थी। आपने ललितपुर में चातुर्मास के समय पढ़ना सीख लिया और आप शास्त्र अध्ययन करती हैं। आपने क्रोध, मान, माया, लोभ जैसे आत्मा के शत्रुओं को जीतकर साधना व तपस्या का अनूठा आदर्श प्रस्तुत किया है और हम संसारी जीवों को मुक्ति का मार्ग दिखाया है। आज आपके जन्म से हराजखेड़ी की भूमि पावन हो गई, जिन्होंने धर्म का मार्ग अपनाया। माताजी का स्वभाव सरल, मृदु एवं भौतिकता से दूर, धर्ममय लालच से परे है जो उनकी असाधारण योग्यता है।

माताजी के चरणों में हम सभी दिगम्बर जैन समाज आष्टा शत-शत् वंदन करते हैं।

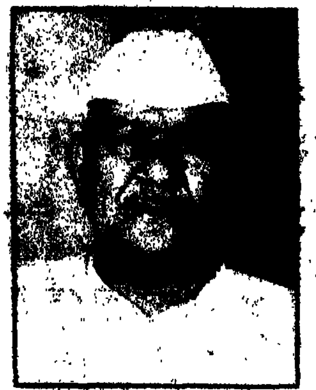
❖❖❖

॥ श्री ॥

मुनि श्री १०८ तरूण सागरजी महाराज द्वारा रचित

जिनेन्द्र प्रार्थना

जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए ।
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से अपना मौन खोलिए ॥
सुर-असुर जिनेन्द्र की महिमा को नहीं गा सके ।
औरं गौतम स्वामी न महिमा का पार पा सके ।
जय जिनेन्द्र बोलकर जिनेन्द्र शक्ति तौलिए ।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए ॥
जय जिनेन्द्र ही हमारा एक मात्र मंत्र हो ।
जय जिनेन्द्र बोलने के हर मनुज स्वतंत्र हो ॥
जय जिनेन्द्र बोल-बोल खुद जिनेन्द्र होलिए ।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए ।
पाप छोड़ धर्म जोड़ ये जिनेन्द्र देशना ।
अष्ट कर्म का मरोड़, ये जिनेन्द्र देशना ।
जाग ! जाग !! जाग !! चेतन बहुकाल सो लिए ।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए ॥
हे ! जिनेन्द्र ज्ञान दो, मोक्ष का वरदान दो ।
कर रहे हैं प्रार्थना, हम प्रार्थना पर ध्यान दो
जय जिनेन्द्र बोलकर, हृदय के द्वार खोलिए ।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए ॥



स्व. पं. कन्हैयालालजी नारे

समाज रत्न पं. कन्हैयालालजी नारे

➤ श्री मोड़- अरुण कुमार जैन

श्रेष्ठ सा मुनीशा-नमुया शान्ति सागरा ॥टेक॥
नमुया शांति सागरा ....
मोह पास मुक्ता वीरा धर्म भावकरा ॥१॥
वीरा धर्म भावकरा ....
विषय संग त्यागा करूनी, घोर तपश्चर्या करूनी
भव्य जीव बो धुनी जगती करि प्रभावना ॥२॥
जगती करि प्रभावना ...

ये पंक्तियां हम जब भी दोहरायेंगे पं. कन्हैयालालजी नारे का चित्र हमारी आंखों के सामने झलक आवेगा। ये पंक्तियां आ. शान्ति सागरजी महाराज की स्तुति दिगम्बर जैन सन्मार्ग समिति की मूल प्रार्थना रही है।

इसकी रचना पं. नारेजी शास्त्री ने की थी। भारत में दि. जैन समाज में पुण्यशाली धर्मात्मा पुरुषों ने जन्म लिया। उसी श्रृंखला में हमारे चरित्र नायक पं. कन्हैयालालजी नारे भी एक नक्षत्र है।

मालवा क्षेत्र में पार्वती एवं पापनाशनी नदी के त्रिकोण में आस्था नगरी आष्टा तहसील के ग्राम खामखेड़ा में आपका जन्म सन् १९२३ में जन्माष्टमी के दिन पिता श्री मोतीलालजी एवं माताजी दोलीबाई के गर्भ से हुआ। अतः आपका नाम कन्हैयालाल रखा गया।

आप शिक्षा के लिए आष्टा से बाहर रहे। विभिन्न क्षेत्रों में विद्वानों, सन्तों, मुनियों की सेवा एवं सानिध्य में रहकर जैन सिद्धान्त ज्योतिष, कर्मकाण्ड का गंभीर अध्ययन कर अपने जीवन चरित्र एवं ज्ञान को इतना चमकाया कि भारत के जैन समाज और पंडित वर्ग में इनका विशेष स्थान बना।

आपके सानिध्य में सन् १९५० में तीर्थ यात्रा का आयोजन किया। यात्रा के अन्तर्गत चतुर्थ काल में स्थापित भगवान आदिनाथ, भगवान नेमीनाथ के पवित्र पावन मंदिर अतिशय क्षेत्र आमनेर में जिन प्रतिमाओं के दर्शन कर आनंदित हो गया। वहां आपकी प्रेरणा से समाज एवं धर्म सेवा हित 'श्री दिगम्बर जैन सन्मार्ग समिति' संस्था की स्थापना की।

इस संस्था के उदय से आष्टा क्षेत्र के जैन समाज में एक नवीन आशा, उमंग एवं उत्साह का संचार हो गया। मानो नवीन युग का आरंभ हो गया। इससे पहले समाज मिथ्यात्व के अंधेरे में डूबी हुई थी। इसके बाद एक के बाद अनेक उत्सव, जैन विधान, जैन विधि से पाणीग्रहण संस्कार, गृह प्रवेश आदि उत्सवों के आयोजन होते चले गए।

सन् १९६४ में आष्टा गांधी गंज में विश्व शान्ति महायज्ञ का महान् आयोजन आपके ही नेतृत्व में विशाल रूप में धर्म प्रभावना के साथ संपन्न हुआ था।

आपने अपने जीवन में लगभग १०१ पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव वेदी प्रतिष्ठायें, मण्डल विधान आदि सम्पन्न कराए।

समय - समय पर आपको भारत के चारों क्षेत्रों से उपाधियों से विभूषित किया गया। मुख्य हैं प्रतिष्ठाचार्य, साहित्य रत्न, ज्योतिष विशारद, वेद शास्त्री, संहिता सूरी, वाणी भूषण, धर्म रत्न, यंत्र-मंत्र तंत्र विशारद, जातिभूषण, जैन रत्न, विद्या वाचस्पति, जैन धर्म तिलक, आदि। आपकी कुछ पंक्तियां जो महापुरुषों के जीवन चरित्र से उद्धृत हैं, हमें नसीहत देती हैं कि

हम भी अपना-अपना जीवन स्वच्छ साफ कर सकते हैं,
हमें भी चाहिए हम भी अपने बना जाएं पद चिन्ह ललाम।
इस जीवन के क्षण भंगुर में हम कभी किसी के आवें काम।।
मन तू सड़े शरीर में क्या माने सुख चैन।
जहाँ नगाड़े कूच के बजत रहें दिन रैन।।
आये सो नाहीं रहे दशरथ लक्ष्मण राम।
तुम कैसे रह जावोगे, मूढ़ पाप के धाम।।
इस भव रंगभूमि पर कोई रहा, न रहने पावेगा।
निज-निज अभिनय पूरा करके लौट समय पर जावेगा।।
यह भौतिक शरीर क्षण भंगुर मिट्टी में मिल जावेगा।
केवल शुभ या अशुभ कर्म ही उसकी याद दिलावेगा।।

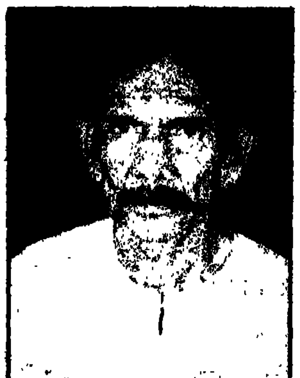
सन् १९७५ में आष्टा दि. जैन चन्द्र प्रभु मन्दिर का पंच कल्याणक ३१ अक्टूबर १९७६ को, महावीर धर्मशाला आष्टा का शिलान्यास एवं ग्राम कोठरी में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव आपके कर कमलों से संपन्न हुआ। आपने पैसे को कभी महत्व नहीं दिया। दिनांक २६ मई १९९१ को बम्बई में आपका स्वर्गवास हुआ।

उन्हें हमारा शत्-शत् नमन

❖❖❖

एक व्यक्तित्व ऐसा भी

इकहरा बदन धोती-कमीज पहने, कभी सर पर टोपी कभी नहीं। उम्र ६० वर्ष से अधिक। मगर इस उम्र में भी कार्य की निष्ठा व फूर्ति युवाओं को प्रेरणा देती है।



श्री मिश्रीलालजी जैन
काकाजी

श्री मिश्रीलालजी जैन 'काकाजी' आपको मन्दिर से लेकर प्रतिष्ठा स्थल तक कहीं भी डांटते-डपटते, लोगों को जोड़कर कार्य में रत मिल जावेंगे।

आपका भोला व निश्छल स्वभाव, सम्मान करने-कराने की परम्परा से कोसों दूर है समर्पित व्यक्तित्व जमीन से जुड़कर काम करने में आनन्द प्राप्त करता है।

मुनि व्यवस्था हो, सामाजिक उत्सव, भोज इत्यादि हो या कोई भी धार्मिक, सामाजिक कृत्य् की प्रारम्भिक तैयारियों से लेकर प्रतिष्ठा स्थल निर्माण तक के कार्य अपने स्वास्थ्य की चिंता न करते हुए भी पूर्ण किए हैं। जिस जोश और उमंग का परिचय मिला वह सदैव स्मरणीय रहेगा।

खोटे साधनों से उपार्जित धन का परिणाम भी खोटा होता है

जिनकी याद ही हमारी प्रेरणा है

स्वर्गीय जातिभूषण, वाणी भूषण, दानवीर सेठ फूलचन्दजी कासलीवाल 'भाईजी'

जन्म १२ दिसम्बर १९१८ | अवसान २१ फरवरी १९९२

१२ दिसम्बर १९१८ को जन्मे श्री फूलचंदजी गेंदालालजी कासलीवाल समूचे आष्टा व आसपास के क्षेत्र में 'भाईजी' के नाम से जाने जाते थे। उनकी दानवीरता, उदारता व मधुरवाणी के कारण दिगम्बर जैन समाज द्वारा उन्हें 'जातिभूषण एवं वाणीभूषण' की उपाधि से विभूषित किया। धार्मिक आयोजनों के साथ सम्पूर्ण जीवन उन्होंने निजी चंद्रप्रभु चैत्यालय की आराधना की। जैन समाज का 'क्षमावाणी पर्व' उनका पर्याय बन गया।

जैन समाज के संरक्षक के साथ ही स्व. श्री कासलीवालजी विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के संरक्षक व अध्यक्ष भी रहे। सभी वर्गों में लोकप्रिय होने के कारण १ मार्च १९६६ को राज्य शासन द्वारा उन्हें आष्टा नगर पालिका का प्रथम अध्यक्ष मनोनीत किया गया। जल योजना सहित अनेक विकास कार्यों के क्रियान्वयन के साथ २७ दिसम्बर ६८ तक वे इस पद पर विभूषित रहे। अपने स्व. श्वसुर की स्मृति में आष्टा चिकित्सालय में प्रथम प्रायवेट वार्ड का निर्माण उन्होंने कराया तथा आष्टा के गौरव 'मानस भवन' में भी उन्होंने अपना उल्लेखनीय व सराहनीय योगदान दिया।

भारत के राष्ट्रपति महामहिम डॉ. शंकरदयालजी शर्मा के साथ पारिवारिक व निजी सम्बन्ध उनके मध्यभारत के मुख्यमंत्री काल से अन्त समय तक बने रहे। सक्रिय राजनीति में पार्टी विशेष के अलावा सभी दलों के सहयोगियों को दिया गया उनका योगदान अभूतपूर्व रहा। उनकी वाणी की अवहेलना करना किसी के लिए संभव नहीं था। भू.पू. मंत्री उमरावसिंहजी सहित अनेक नेताओं से उनका साथ रहा।

सन् ७६ में तीन माह के धार्मिक प्रवास के पश्चात् गृह वापसी पर उनका स्वागत आष्टा के इतिहास की चिरस्मरणीय गाथा है।

सन् ७५ में श्री अलीपुर मंदिरजी का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन उनकी अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। साथ ही कोठरी ग्राम में बेदी प्रतिष्ठा भी आपके सानिध्य में ही सम्पन्न कराई गई। व्यक्तित्व के धनी स्व. भाईजी क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यवसायी व जन-जन के प्रिय थे।

आपके निधन का समाचार सुन नगर के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिकों की भी आंखें डबडबा गई व हर दिल रोया। सामाजिक व महामानव निरुपित करते हुए उनके निधन को नगर की अपूरणीय क्षति बताया।

आपके पीछे आपका भरापूरा परिवार पत्नि, चार पुत्र व पाँच पुत्रियाँ हैं। आपकी स्मृति में ही आपके परिवार द्वारा श्री दिग. जैन मंदिर किला में 'सिंह द्वार' का निर्माण कराया जा रहा है।

समाज के गौरव 'भाईजी' को शत-शत नमन।

➤ मनोजकुमार सेठी (गोपी)

हृदय में नफरत, ईर्ष्या, नापसंद, असहिष्णुता या गैर समझदारी होगी तब तुम आध्यात्मिक ढंग से विकसित न हो पाओगे। तुम्हारे भेद-भाव का निवारण जल्दी करो एवं प्रेम को बहने दो

परिचय

एक सरल [illegible] कोठारी

[illegible]

> [illegible]

[illegible] कहावत चरितार्थ है [illegible] जिनकी कोख में [illegible] है [illegible] भी [illegible] अपने गर्भ में पाल-पोस कर बड़ा किया और सन् १९२० में [illegible] अपनी [illegible] कोठारी के आंगन में।

इस [illegible] की [illegible] को गर्व की [illegible] कभी छू भी न सकी। इस आडम्बरपूर्ण संसार में जो जैसा दिखता है वैसा दिखाई नहीं देता वह बाहर से कुछ और अन्दर से कुछ और किन्तु आप इसके अपवाद हैं। आपका अंतर और बाह्य समरसता का ज्वलन्त उदाहरण है 'सादा जीवन उच्च विचार' के आप सटीक प्रतिरूप हैं।

एक [illegible] में श्री [illegible] का निवास सम्भव है। गाम्भीर्य का अनूठा स्वरूप कैसी भी विषम स्थितियाँ रही हों कभी भी उग्र रूप धारण कर सामने नहीं आया। [illegible] स्थिरता का अद्भुत उदाहरण आपका व्यक्तित्व है [illegible] स्थिति [illegible] से ऊपर उठाकर भविष्य में झांकने की अद्भुत सामर्थ्य आपको प्रदान करती है।

जीने के लिए तो सभी जीते हैं औरों के लिए जीने वाले विरले ही होते हैं। उन विरले व्यक्तियों में से आप भी एक हैं [illegible] सेवा और लोक कल्याण यही आपके जीवन का मूल मंत्र है [illegible] के [illegible] में [illegible] की [illegible] [illegible] रखने वाले आप जैसे दुर्लभ [illegible] कम ही होते हैं।

आप १९६७ से १९७७ तक ग्राम पंचायत के सरपंच रहकर १५ वर्ष तक पंच, उप सरपंच व सरपंच के रूप में ग्राम सेवा में तन्मयता से जुटे रहे। सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष के रूप में १६ वर्ष की समर्पित सेवा देकर वर्तमान में भी आप उसी पद को गौरवान्वित कर रहे हैं। को-आपरेटिव [illegible]

[illegible] समिति, [illegible] समिति [illegible] [illegible] कोठारी [illegible]

श्री दि. जैन [illegible] के [illegible] दि. जैन [illegible] के [illegible] उपाध्यक्ष, दि. जैन समाज पंचायत [illegible] के [illegible] वर्तमान में अध्यक्ष तथा [illegible] समिति के संरक्षक हैं।

आपकी अध्यक्षता में दि. जैन समाज कोठारी में [illegible] की [illegible] [illegible] ८९ से २६-६-८९ के मध्य [illegible] की [illegible] संघ (वर्तमान में आचार्य) का सानिध्य [illegible] भूषण पं. [illegible] के आचार्यत्व में [illegible] इस महोत्सव के आप [illegible] संयोजक थे। इस [illegible] पर समाज ने आपको जाति भूषण की उपाधि से अलंकृत किया।

सम्पूर्ण [illegible] दि. जैन समाज को एकता के सूत्र में बांध कर चलना आपके गंभीर व्यक्तित्व, मधुर व्यवहार, लक्ष्य के प्रति दृढ़ता आदि गुणों से ही सम्भव है। परिणामतः जिनालय निर्माण से [illegible] तक की दुर्गम यात्रा आपके नेतृत्व में सम्पन्न हो [illegible] इस ऐतिहासिक पंच कल्याणक [illegible] महोत्सव के आप प्रमुख संयोजक हैं।

> [illegible] कोठारी

◆◆◆

मेरा धर्म किसी मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे तक सीमित नहीं,
[illegible] का धर्म नहीं, यह तो लाखों-करोड़ों
आत्माओं का धर्म है, जाति, सम्प्रदाय, देश, काल, विशेष से सम्बन्ध नहीं
यह तो मानव धर्म, अहिंसा धर्म, विश्व धर्म है।
- [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] में हुआ [illegible] किया आपकी [illegible] अपनी [illegible] का प्रथम [illegible] १९६७ में आष्टा स्थापित होकर प्रारंभ किया। आप १९७५ से १९७७ तक नगर पालिका अध्यक्ष रहे पुनः १९८६-८७ में इसी पद पर आसीन हुए। [illegible] अध्यक्ष, जिला बीस सूत्रीय समिति सदस्य तथा अनेकों सामाजिक संस्थाओं को अपनी सेवाओं का लाभ दिलाते रहे हैं। [illegible] द्वारा आपकी [illegible] के लिए आपको [illegible] रत्न की उपाधि से अलंकृत किया गया है।

[illegible]

आत्मा के तल पर जीने वालों का आव्हान है

पंच कल्याणक

विकास की ओर अग्रसर
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र शांतिनगर, भोजपुर

➤ नेमीचन्द जैन





अतिशय क्षेत्र भोजपुर मंदिर

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र शांतिनगर, भोजपुर की स्थिति अवलोकन हेतु प्रस्तुत है। सन् १९७५ के पूर्व यहाँ सिर्फ एक जिनालय जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। उसके बाद संकल्पी भाई लालचन्दजी जैन टेक्सी वालों ने क्षेत्र के विकास का संकल्प लिया। शुरुआत में रुपये १.०० का झंडा समाज के लोगों को बेच-बेच कर राशि एकत्रित कर विकास की ओर अग्रसर हुए। भाई लालचन्द का संकल्प एवं सामाजिक धर्मप्रेमी बन्धुओं का सहयोग एवं आशीर्वाद दादाजी को प्राप्त हुआ। सन् १९८४ में अमृत कुण्ड का निर्माण कराया गया किन्तु जल की पर्याप्त पूर्ति न होने के बाद रुपये २५,०००.०० की लागत से नलकूप का निर्माण कराया गया जिससे जलपूर्ति पर्याप्त है। साथ ही सुन्दर धर्मशाला का निर्माण समाज के सहयोग से कराया गया जिसमें कि १३ कमरे हैं एवं एक बड़ा सुन्दर हाल भी मौजूद है। क्षेत्र की आवश्यकता को देखते हुए चार फ्लेश पद्धति के शौचालय एवं दो स्नानघरों का निर्माण कराया जा चुका है।

साधुओं एवं मुनियों के रुकने हेतु दो कमरे 'संत निवास' वर्ष १९९१ में तैयार कराए गए हैं। कहावत है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, लेकिन अकेले श्री लालचन्द जी जैन ने विकास के संकल्प को यथावत रखते हुए सिद्ध कर दिया है कि करने वाला अकेला सब कुछ कर सकता है। समाज एवं शासन से सहयोग प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील दादाजी विकास के लिए सतत प्रयासरत हैं। शासन के सहयोग से सड़क, बिजली, पानी आदि की व्यवस्था ने क्षेत्र के विकास को गति प्रदान की है। साथ ही यहाँ टेलीफोन व्यवस्था भी है। क्षेत्र की आवश्यकता को देखते हुए धर्मशाला के सामने ३ कमरों का निर्माण कराया जा रहा है जो अपूर्ण स्थिति में है, जिसमें २ कमरे यात्रियों के लिए एवं एक कमरा कार्यालय हेतु तैयार करवाना है। समाज से आर्थिक सहयोग की आशा है। आज की स्थिति को क्षेत्र की व्यवस्था में देखते हुए साधु, संत मुनि यहाँ पर आकर ठहरते हैं। एक चातुर्मास मुनिश्री सिद्धांत सागरजी



जीर्णोद्धार की प्रतीक्षा में अतिशय क्षेत्र भोजपुर की मुनिराज मानतुंगाचार्यजी की छतरी

महाराज का १९९३ में हो चुका है। क्षेत्र पर सरल सागरजी, मुनि सागरजी, निर्माण सागरजी का भी यहाँ पर्यापण हो चुका है। क्षेत्र को परम पूज्य आचार्य १०८ श्री विद्या सागरजी, मुनि श्री सुधासागरजी, आचार्य १०८ श्री भरत सागरजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त है तथा उनके पुण्य चरण यहाँ पड़ें इसकी अपेक्षा से हम प्रयासरत हैं। प्रति वर्ष रंगपंचमी के बाद प्रथम रविवार को वार्षिक मेला एवं विमानोत्सव का आयोजन भी होता है।

अखिल भारतीय तीर्थ क्षेत्र रक्षा समिति द्वारा भी इस अतिशय तीर्थ को मान्यता प्रदान कर दी गई है। आज की स्थिति में भी तीर्थ यात्रियों की बसें यहाँ दर्शनार्थ आकर रुकती हैं। धर्म एवं प्रकृति का पूरा आनंद उठाते हैं। जिन दानदाताओं ने निर्माण कार्य कराए हैं उनके नाम के पट्ट एवं शिला लेख लगाए गए हैं। आने वाले यात्रियों के लिए भोजन बनाने हेतु बर्तन एवं ईंधन की भी पर्याप्त व्यवस्था की गई है।

प्रस्तावित विकास कार्य एवं योजनाएं :

क्षेत्र के समग्र विकास एवं यात्रियों की सुविधाओं को दृष्टिगत रखते हुए निम्नानुसार विकास कार्य एवं योजनाएं प्रस्तावित हैं :

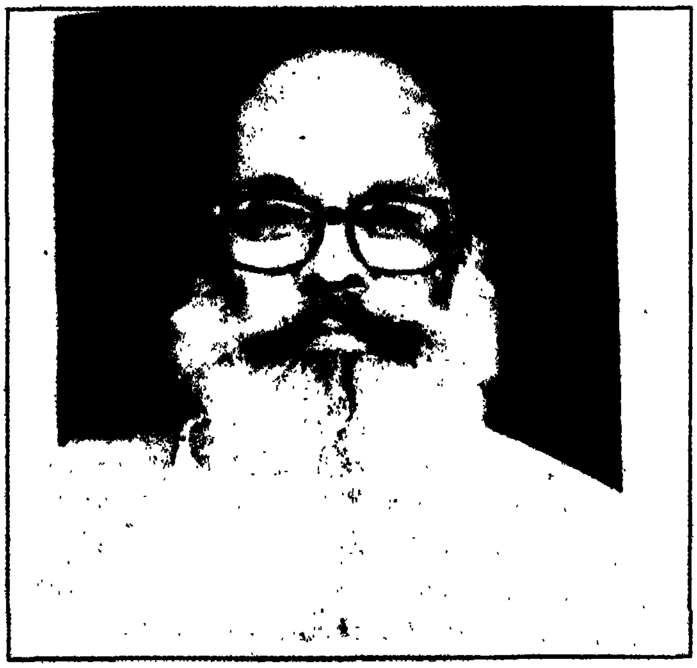
- प्राचीन जिनालय के शिखर का जीर्णोद्धार अनुमानित व्यय रुपये १,००,०००/- (रुपये एक लाख)
- जिनालय की छत का जीर्णोद्धार अनुमानित व्यय रुपये ५१,०००/- (रु. इक्कावन हजार)
- प्राचीन जिनालय की मूर्तियों का जीर्णोद्धार
  १. भगवान श्री शांतिनाथ की मूर्ति, अनुमानित व्यय रुपये ५१,०००(रु. इक्कावन हजार)
  २. भगवान श्री पार्श्वनाथ की मूर्ति, प्रत्येक का अनुमानित व्यय रु. २५,००० (रु. पच्चीस हजार)
- प्राचीन मंदिर के आसपास की सफाई, भूमि समतलीकरण कार्य -अनुमानित व्यय रुपये ५१,०००/-
- पूज्य मुनिश्री मानतुंगाचार्य की समाधि स्थली का जीर्णोद्धार- अनुमानित व्यय रुपये ५१,०००/-
- श्री सिद्धशिला की परिक्रमा में चौबीसी की स्थापना - अनुमानित व्यय प्रत्येक मूर्ति एवं मढ़िया का २५,००० रुपये
- शांतिकुंज का जीर्णोद्धार प्रति कमरा रुपये ३०,०००/-
- भोजनशाला का निर्माण प्रति कमरा अनुमानित व्यय रुपये ३०,०००/-
- अतिथि ग्रह का निर्माण प्रति कमरा - अनुमानित व्यय- रुपये ३०,०००/-
- क्षेत्र के प्रवेश द्वार का निर्माण - अनुमानित व्यय रुपये १,००,०००/-
- क्षेत्र के लिए शीतल जल हेतु प्याऊ का निर्माण व्यय रुपये १,००,०००/-
- समस्त क्षेत्र पर ५० टयूब लाईट की (२५ खम्बों के लिए तथा २५ भवन में) फीटिंग कराना, अनुमानित व्यय रुपये २०,०००/-
- ५ वेपर लेम्प १००० वाट वाले - अनुमानित व्यय रुपये १०,०००/-
- हेलोजन ५०० वाट के ५ एवं हेलोजन १००० वाट के ५ रुपये २,५००/-

उपरोक्त प्रस्तावित विकास कार्यों एवं योजनाओं के दानदातारों के नामपट्ट लगाए जाने का प्रावधान रखा गया है।

क्षेत्र की स्थाई व्यवस्था एवं प्रबंधन कार्य हेतु एक स्थाई ध्रौव्य फंड का प्रावधान किया गया है, जिसके अंतर्गत रु. १,००१ जमा कराने वाले महानुभावों को क्षेत्र की स्थाई सदस्यता प्रदान की जावेगी। ध्रौव्य फंड हेतु २००१ सदस्य बनाने का संकल्प लिया गया है। जिसमें अभी तक १२८ सदस्य बनाए जा चुके हैं तथा राशि रुपये १,००,०० के फिक्स डिपाजिट में जमा किए जा चुके हैं।

'क्षेत्र के विकास के लिए मुक्त हस्त से दान देकर
पुण्य अर्जित करें यही कामना है'

विजय रोडवेज, भोपाल



संकल्पी- समर्पित हस्ताक्षर श्री लालचन्दजी जैन (टेक्सीवाले)

◆◆◆

श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र जामनेर

धन्य है वह पवित्र भूमि जहाँ से भव्य जीव तरे। कोटिशः वंदन है, उस स्थली को जो दर्शन से अवशाद हरे। सुश्यामल मिट्टी की मालव भूमि के ह्रदय स्थल में अति प्राचीन ग्राम जामनेर के नाम से प्रसिद्ध है। जो कि म.प्र. के शाजापुर जिले की तहसील शुजालपुर के निकट १ किलोमीटर दूर भोपाल रोड पर स्थित है। वैसे भी धार्मिक दृष्टिकोण में क्षेत्र महात्म्य का वर्णन में शाश्वत सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखरजी की बीस पंथी कोठी में निम्न पंक्तियाँ उत्कीर्ण है। जो तीर्थ क्षेत्र वंदना जकड़ी के नाम से पंक्तियां दोहराई जाती हैं वे इस प्रकार हैं-

'जामनेर' आदीश्वर बंदू, सारंगपुर महावीरजी,
अमझेरा पारस प्रभु बंदू, चिन्तामणी उज्जैयनी

यहाँ पर अति प्राचीन चतुर्थकालीन प्रथम तीर्थंकर १००८ आदिनाथ भगवान की ६ फुट ऊँची पदमासन प्रतिमा व अन्य तीर्थंकर भगवान की ७ अतिशय युक्त प्रतिमायें परमार युगीन श्याम पाषाण की विराजमान है तथा अन्य कुल २१ प्रतिमायें दर्शन योग्य विराजित हैं। पूर्व समय में यहाँ से कई प्रतिमायें दर्शनार्थ उज्जैन के जयसिंहपुरा मंदिर में ले जाकर विराजित कर दी गई।

विगत वर्षों से यहाँ एक भव्य श्री जिन मंदिरजी का निर्माण कार्य निरन्तर चल रहा है तथा पूर्व मंदिर भवन के संबंध में कई प्रकार की पुरातन किवदंतियाँ प्रचलित हैं। वह प्राचीन मंदिर सारा पत्थरों का बना हुआ था। बड़े-बड़े पत्थरों के स्तम्भों पर साधारण नक्काशी युक्त सभा मण्डप था एवं गर्भगृह में प्रतिमाएँ विराजमान थीं।

उक्त जिनालय अत्यधिक प्राचीन होने से जीर्णशीर्ण हो रहा था। विगत १० वर्षों से इसके जीर्णोद्धार की विचारधारा भी बन चुकी थी। हैदराबाद व इन्दौर के पुरातत्वविदों द्वारा निरीक्षण कराकर समस्त क्षेत्रीय समाज ने मिलकर इस मंदिर को खोलकर पूर्व निर्मित मंदिर निर्माण का विचार संकल्पित कर लिया एवं गत वर्ष १९९४ को प्राचीन मंदिर उतारकर नया मंदिर भवन निर्माण कार्य प्रारंभ कर दिया जो कि अभी निरन्तर जारी है। नव निर्मित मंदिर के निर्माण में श्रेष्ठी एवं उदार वर्ग से सहयोग प्राप्त हुआ है। सन् १९९० में वार्षिक मेला के अवसर पर परम पूज्य एलाचार्य भरत सागर महाराज पधारे तो उन्होंने इसे पावन मंदिर की उपमा प्रदान की क्योंकि बुजुर्ग लोग भी यही बताते हैं आये कि यह मंदिर कहीं से उड़कर आया था। मंदिर खोलने पर यही पाया कि इसको धरातल नींव आदि नहीं थी।

यह निराधार पत्थर के स्तम्भों पर टिका हुआ था। सभागृह के पश्चात दर्शन स्थल जहाँ प्रतिमा विराजमान थी। गर्भगृह की स्थिति भव्य गुफानुमा थी। इस वजह से तल में गुफा मंदिर की उपमा से भी इंगित किया जाता था तथा अब भी गुफा मंदिर का निर्माण किया गया है, जिसमें एक प्रतिमा आदिनाथ भगवान की प्रतिस्थापित की जाना है।

<u>अतिशय :</u>

मुगलकाल में श्री आदिनाथजी की प्रतिमा को कुछ चोरों ने खंडित करने का प्रयास किया था। परन्तु वे अंधे हो गए। गुड़ी पड़वा का दो दिवसीय मेला १९ वर्षों से क्षेत्र पर निरन्तर भरता है। जिसमें क्षेत्र के दिगम्बर जैन बंधु काफी मात्रा में पधारते हैं। दिगम्बर जैन समाज के सभी महानुभावों का क्षेत्र पर काफी आकर्षण एवं भावनाएँ बढ़ी हैं। मेले में मेला समिति प्रतिवर्ष मुनि, ब्रह्मचारी एवं त्यागी वृत्ति तथा विद्वानों को विशेष कर आमंत्रित करती है। मेले में प्रतिवर्ष विधान मंडल पूजा पाठ प्रवचन भक्ति संगीत आदि धार्मिक कार्य होते हैं।

अतिशय स्थली पर विगत वर्षों में एक विशाल दुमंजिला धर्मशाला का निर्माण किया गया, पूजन के सेट, भोजन के बड़े-छोटे बर्तन एवं रोड पर विशाल मेला प्रागंण खरीदा गया। अतिशय स्थली पर एक विशाल जिन मंदिर जिसकी लंबाई-चोड़ाई ३५x५५ फुट तथा ऊंचाई १६ फुट है निर्माणाधीन है। अब शिखर, वेदी, फर्श, गेट का कार्य शीघ्र शुरू होगा। तल में एक क्रांकीट की गुफा बनकर तैयार हो चुकी है। कृपया मेले के अवसर पर अतिशय क्षेत्र पर प्रतिवर्ष पधारें। अतिथियों को निःशुल्क भोजन, टेण्ट, रजाई-गद्दे, पानी-नाश्ता आदि की व्यवस्था उपलब्ध है।

अतिशय स्थली जामनेर पर भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के अवसर से यहाँ पर क्षेत्र प्रगति हेतु निम्न समितियाँ अपना निरन्तर योगदान, सहयोग दे रही है। जिसमें क्षेत्र के सभी दि. जैन धर्मावलंबियों महानुभावों ने भी अपना तन-मन-धन से योगदान देकर पुण्य अर्जित किया है।

१. दि. जैन सार्वजनिक न्यास अतिशय क्षेत्र, जामनेर

२. श्री दि. जैन मेला समिति, जामनेर

३. श्री दि. जैन प.पु. महासभा, म.प्र.

सभी धर्म प्रेमी महानुभावों, विद्वान, युवा वर्ग, माताएँ, बहनें, बालक-बालिकाओं से समिति निवेदन करती है कि क्षेत्र की प्रगति हेतु समय-समय पर पधारकर और योजनाओं की सफलता के लिये तन-मन-धन से सहयोग देकर पुण्य अर्जित करें। मेला प्रांगण पर पक्का मंच, ४ फुट ऊँचा २०x४० फुट लंबा-चौड़ा पक्का बन चुका है। एक ट्यूबवेल लग चुका है। इसी वर्ष मेला प्रांगण पर दो कमरों के निर्माण हेतु निश्चय किया गया, जिसके लिए दान राशि प्रदान करने की स्वीकृति भी प्राप्त हो चुकी है।

मेले के अवसर पर पूज्य प्रेरक ऐलाचार्य १०८ भरत सागरजी, पूज्य आचार्य १०८ श्री दर्शनसागरजी ससंघ, मुनि श्री १०८ श्रुतसागरजी महाराज, मुनि श्री सिद्धान्त सागरजी, १०५ जैनमति माताजी, पूज्य ब्रह्मचारी श्री हेमराजजी और समय-समय पर मुनि श्री १०८ सीमन्धर सागरजी, मुनि श्री १०८ सरल सागरजी, मुनि श्री १०८ उदय सागरजी, मुनि श्री १०८ समता सागरजी तथा अन्य साधुओं का पदार्पण हुआ है।

मेले के अवसर पर सामाजिक अनुष्ठान के रूप में आदर्श विवाह कराने की निरन्तर पूर्ण रूपेण व्यवस्था मेला समिति द्वारा की जाती है।

क्षेत्र के विकास के लिए मुक्त हस्त से दान देकर पुण्य अर्जित करें।

यही कामना है।

➤ बाबूलाल जैन
अध्यक्ष, मेला समिति,
जामनेर

❖❖❖

जिला सीहोर के दिगम्बर जैन मन्दिर

➤ संकलन- श्रीमती निर्मला जैन,
आष्टा

क्र.	स्थान	तहसील	मंदिर की संख्या
१.	सीहोर	सीहोर	२
२.	धामन्दा	इछावर	१
३.	इछावर	इछावर	१
४.	आर्या	इछावर	१ चैत्यालय
५.	मूडला	इछावर	१ चैत्यालय
६.	कोटरी	आष्टा	१
७.	सामरधा	आष्टा	चैत्यालय
८.	आष्टा	आष्टा	२ मन्दिर १ चैत्यालय
९.	खामखेड़ा	आष्टा	चैत्यालय
१०.	रोलागांव	आष्टा	१
१३.	मैना	आष्टा	१
१४.	भंवरा	आष्टा	१
१५.	लीलवड	आष्टा	१
१६.	दीवड़िया	इछावर	१
१७.	नसरुल्लागंज	नसरुल्लागंज	१ मंदिर
१८.	लाड़कुई	नसरुल्लागंज	१ चैत्यालय
१९.	इटावा	नसरुल्लागंज	१ चैत्यालय
२०.	छीपानेर	नसरुल्लागंज	१ चैत्यालय

❖❖❖

अतीत की परतों में - आष्टा

➤ संजय कुमार जैन,
एम.ए., एल.एल.बी.,
किला, आष्टा



कालचक्र कई ऐसे रहस्यों को पीछे छोड़ जाता है जो इतिहास की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। समय की गहराइयों में झांकना आसान नहीं है, इतिहास के रहस्यों से परदा सरलता से नहीं हटाया जा सकता।

किसी शहर का बनता-बिगड़ता भूगोल और उसके कारक तत्व परिवर्तन की शाश्वत प्रक्रिया का एक अंग है। यह अनवरत प्रक्रिया कई ऐसे तथ्यों को आत्मसात किए हुए निरन्तर गतिशील है जो हमारे अतीत को जानने में मददगार साबित हो सकती है।

इतिहास की विषय-वस्तु और इसका विस्तार असीमित है। आष्टा का अपना गौरवशाली इतिहास है पर यहाँ के बाशिंदों ने अपने वर्तमान को जीने का तो प्रयास किया है। यहाँ के अतीत को जानने का नहीं।

इस स्थिति में आष्टा का इतिहास तलाशना और उसे शब्दबद्ध करना बहुत आसान कार्य नहीं है। हजारों वर्ष हो गए पार्वती को बहते हुए, कई घटनाएँ इसके तट पर घटी होंगी। यदि पार्वती की अनवरत धारा और इसके घाट कुछ बोल सकते तो आष्टा से सम्बन्धित न जाने कितनी सच्चाइयाँ और अनछुए तथ्य उजागर हो पाते।

आस्था की इस नगरी का किला, प्राचीन मन्दिर, भग्नावशेष और यत्र-तत्र बिखरी पड़ी पुरा संपदा हजारों वर्ष की पुरातनता का गौरव याद दिलाने को बेताब है।

मालव अंचल की समस्त विशिष्टता को समेटे हुए आष्टा पर भोज साम्राज्य का खास प्रभाव रहा है। यहाँ स्थित किला यद्यपि परमारकालीन है, लेकिन जिस स्थल पर इसका निर्माण हुआ है। उसकी पृष्ठ भूमि पौराणिक है।

महायोगी अजयपाल की साधना स्थली रहे इस क्षेत्र पर एक गोंड किशोर राजा की मृत्यु के पश्चात उसकी विधवा आशारानी ने राजा भोज की सहमति से किले का निर्माण करवाया था।

किले की खुदाई के दौरान निकलने वाली राख का सम्बन्ध बुजुर्ग, महायोगी अजयपाल के तप-यज्ञ-हवन आदि से जोड़ते हैं।

किवदंति है कि त्रिलोक स्वामी रावण ने जब योगीराज अजयपाल को यह साधना करने से प्रतिबंधित करने का प्रयत्न किया तो मात्र अपने योगबल से ही उन्होंने लंका के एक भाग को ध्वस्त कर दिया था।

किले की स्थापना और इसके निर्माण से संबंधित रोचक जानकारी मालवी भाषा में लिखित एक प्राचीन पुस्तक से प्राप्त होती है।

सामान्यतः मालवी भाषा में प्राचीन गद्य मिलता नहीं है, ऐसी दशा में किले पर बसे एक वैद्य परिवार के पास सुरक्षित इस पुस्तक का साहित्यिक दृष्टि से भी महत्व है। इस संकलित लेख के अंत में संलग्न उक्त पुस्तक का प्रकाशन ७० के दशक में इन्दौर से निकलने वाली साहित्यिक पत्रिका 'वीणा' में भी हो चुका है। पुस्तक यद्यपि जनश्रुतियों, किवदंतियों और तथ्यों का सम्मिश्रण है, लेकिन इस में वर्णित व्यक्तियों और स्थानों का इतिहास की दृष्टि से बहुत महत्व है।

किला स्थित जैन मंदिर की प्राचीनता तो स्वयं सिद्ध है। यद्यपि इस मंदिर का आवश्यकतानुसार जीर्णोद्धार किया जा रहा है। तथापि कलात्मक गवाक्ष, दीवारों पर उकेरी गई शीशा जड़ित तस्वीरें, जैन आगम से सम्बद्ध जहाँगीर कालीन दुलर्भ चित्र और यहाँ विराजमान जिन प्रतिमाएँ अपनी कहानी स्वयं कहते हैं।

संवत् १५५० के लगभग जीवराजजी पापड़ीवाल नामक दानशील शख्सियत ने सवा लाख जैन प्रतिमाओं को बैलगाड़ी द्वारा ढोकर देश के कोने-कोने में विराजमान करवाया था।

पापड़ीवाल द्वारा विराजित एक प्रतिमा किला मन्दिरजी में भी है। यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि किला मन्दिरजी में भग-वान पार्श्वनाथ की मूल नायक प्रतिमा पर सम्वत् ११४१ अंकित है (१३८० वर्ष प्राचीन) इसके अलावा वेदी जी में १५४८, १६५० तथा १९५० संवत् की प्रतिमा विराजित है। कुछ प्रतिमाएँ अति प्राचीन हैं जिन पर संवत् भी अंकित नहीं है। इसके अतिरिक्त अत्यन्त ही भव्य, मनोज्ञ, कलात्मक एवं चमत्कारी चतुर्थकालीन प्रतिमा भी यहाँ विराजमान है। जो लगभग एक सौ पच्चीस वर्ष पूर्व किले के पश्चिम की ओर अरोलिया मार्ग पर स्थित बांदार के वट वृक्ष के नीचे भूगर्भ से मिली थी। एक ही पाषाण खंड से निर्मित यह अतिशय युक्त प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है। इस प्रतिमा से जुड़ी हुई चमत्कारी घटनाओं के साक्षी कई प्रत्यक्ष हैं।

बताया जाता है कि एक बार भक्तामर स्तोत के पाठ के दौरान उक्त प्रतिमा स्वयमेव ही इतनी नम हो गई थी मानो इसका अभिषेक किया हो।

चतुर्थकाल की यह भव्य प्रतिमा सुप्रसिद्ध पुरातत्वविद् डॉ. वाकणकर की खोजबीन का आधार इस नगरी के इति-हास को जानने के लिये बनी।

अभी हाल ही में बड़ा बाजार में एक मकान की नींव खुदाई के समय चतुर्थ काल की एक और प्रतिमा प्राप्त हुई। प्रथम तीर्थंकर, ऋषभदेव की यह खड्गासन प्रतिमा वर्तमान में दि. जैन मन्दिर किला के परिसर में रखी हुई है। इस खंडित प्रतिमा को भी एक ही पाषाण में चौबीसी से अलंकृत किया है।

उक्त प्रतिमाएँ इस क्षेत्र के इतिहास को सहस्त्रों वर्ष प्राचीन सिद्ध करती है।

यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि इस जैन मन्दिर की स्थापना भी किले के साथ-साथ ही हुई होगी, लेकिन किले की स्थापना के पूर्व भी यहाँ जैन धर्म का गहरा प्रभाव रहा होगा।

जिस पीले नाले की खुदाई पुरातत्वविद् डॉ. वाकणकर ने जैन प्रतिमा को आधार बताते हुए करवाई थी, वहाँ से लगभग साढ़े तीन हजार वर्ष प्राचीन मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं। गौर-तलब है कि ये मुद्राएँ यूनान के एक शासक टालमी की हैं। डॉ. वाकणकर के मत में उस समय आष्टा का प्रत्यक्ष व्यापार यूनान से होता था।

इसके अलावा राजा भोज के आष्टा आगमन, पार्वती स्नान और उनके द्वारा पार्वती तट पर प्राचीन शंकर मन्दिर में पूजा-अर्चना के प्रमाण भी डॉ. वाकणकर ने खोजे हैं। शंकर मन्दिर में राजाभोज द्वारा दान किया हुआ तांबे का एक पूजा पात्र और अन्न रखने का पीतल का भांड डॉ. वाकणकर के संग्रहालय में सुरक्षित है।

इस क्षेत्र के इतिहास को जानने का एक ओर साधन है किला स्थित जैन मन्दिर का समृद्ध शास्त्र भंडार। स्वर्णाक्षरों में ताड़ पत्र और भोज पत्र पर हस्तलिखित यहाँ के शास्त्र पुरा-तत्वीय महत्व के हैं। इस धार्मिक साहित्य का इतिहास की दृष्टि से बहुत महत्व है।

भोज साम्राज्य का अंग रहा यह क्षेत्र पूर्व में हर्षवर्धन, मगध साम्राज्य के अधीन भी रहा है। १५वीं शताब्दि में खि लजी सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक का आधिपत्य इस क्षेत्र पर रहने के प्रमाण उपलब्ध हैं। इब्नेतुता नामक मिस्र की इतिहास प्रसिद्ध महिला जिसने घोड़े पर सवार होकर सारी दुनिया का भ्रमण किया था, आष्टा होते हुए उज्जैन गई थी।

सम्राट अशोक और औरंगजेब के आष्टा में पड़ाव के चिन्ह भी यहाँ दृष्टिगोचर होते हैं। शंकर मन्दिर में लगे हुए शिलालेख से यह सिद्ध होता है कि पेशवाओं का आगमन भी उनके इस आधिपत्य क्षेत्र में हुवा।

कालांतर में मुस्लिम प्रशासक दोस्त मोहम्मद खान तथा अंग्रेज प्रशासकों के अधिकार में भी आष्टा रहा है। सन १८१८ में आष्टा नवाबी शासन के अंतर्गत जिला मुख्यालय बना।

वर्तमान आष्टा की सघन आबादी वाले मोहल्ले नजर-गंज एवं बुधवारा का विकास भी इसी मध्य हुआ। बुधवारा स्थित राम मंदिर में रखी हुई जलाधारी एवं विशाल शिवलिंग पार्वती नदी से मिले हैं, जिस स्थल से यह धार्मिक अवशेष मिले हैं वहाँ किसी प्राचीन मन्दिर के अवशेष विद्यमान हैं।

यदि आष्टा और इसके आसपास के क्षेत्र में विद्यमान पुरा संपदा, यहाँ के भग्नावशेष, किला, प्राचीन मन्दिर आदि का समग्र विश्लेषण किया जाए तो समय की गर्द में छुपे हुए कई ऐतिहासिक रहस्यों को उजागर किया जा सकता है।

फिलहाल प्रस्तुत है 'आमद मल्लिनाथजी की' शीर्षक से लिखित मालवी गद्य की यह प्राचीन पुस्तक जिससे आष्टा के किले से संबंधित जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

श्री गोवर्धनधरो जयति किताब आमद मल्लीनाथजी की लिखते गुजरात देस में येक रोड़की नाम नगर थो वहाँ येक तालाब है उसका किनारा पर येक मकान गणपति को बण्यो

है उन गणपति को नाम बहुफूल उस नगरी में पेस्तर राजा हरिशचन्द्र राज करता था और उसी गांव में मल्लीनाथ पाठक यजुर्वेदी ब्राह्मण औदुम्बर रहता मल्लिनाथजी संस्कृत इलम में बहुत पंडित था व्याकरण कोष छन्द, अलंकार, न्यास, मीमांसा इत्यादि इलम में कुशल और ज्योतिष शास्त्र में तो अपर और जात का पोरवाड़ नीमा महाजनों का गुरु था परन्तु गुणग्राही की तलासी में ज्यादा फिकर में रहता था खबर मिली कि उज्जैन नगरी में राजा भोज संस्कृत इलम में बहुत पंडित है और केई शास्त्री कविश्वर होण उनकी सत्ता में जमा हुवा है और कालीदासजी को भी बहुत लौकिक सुनना में आयी जद मलल्लीनाथजी गुजरात से चलकर उज्जैन में दाखल हुवा और कालीदास कवि भारवी कवि दंडी इन तीनों से अव्वल मिलकर राजा भोज से मुलाकात करी सभा में दो चार उत्तर प्रत्युत्तर होणा से राजा कूं पसन्द हुवा।

राजा ने अपना पंडितों को सामिल मलल्लीनाथजी कूं किया परन्तु उपर लिख्या हुवा कालिदास भारवी दंडी कवि की मारफत अव्वल मुलाकात राजा की हुई थी सो दूनी तीन्नी जना के नजीक मलल्लीनाथजी रमा किया पीछे कालिदास ने कुमार संभव रघुवंश दो काव्य बनाया और भारवी कवि ने किरात काव्य बनाया और दंडी कवि ने नैषद काव्य तैयार किया और माघ काव्य की वणी गयो जद इन काव्यों पर मल्लीनाथजी ने टीका बनाई हाल में मल्लीनाथी टीका मसहूर है उसका देखना से राजा बहुत खुश और मेरबान हुवा बहुत सो इनाम बकस्यो इनाम कपड़ा जेवर घोड़ा पालकी बकस्या जद ज्यादे मरातबो हुवो राजाजी प्रस्न मल्लीनाथजी से करता था उसका होना का दीन घड़ी तक मल्लीनाथजी लीख देता था फिर वो काम उसी बखत होतो थो इसमें हजारों रुपया इनाम पावता था।

इससे मल्लीनाथजी को ज्योतिष मसहूर हुवो थो कि हद भारत में मालवा भर में उन सिवा दूसरो ज्योतिषी नहीं थो उसी बखत में मल्लीनाथजी ने सिपरा नदी में घाट बनायो थो और उसी घाट में उनको मकान थो उन दिनों आस्टा की खेड़ो गोजा लीरास के पास येक पहाड़ है उस पर बसतो थो आज तक उस पहाड़ पर किला की दीवार मौजूद है और सब लोरास के आदमी उस पहाड़ पर पुरानी आस्टा केते हैं और बतावे है वहाँ एक किशोर राजा गोंड राज करतो थो सब आस्टा परगणा को मालक वो ही थो उसकी स्त्री को नाम आसाणी थो वो गोंड राजा थोड़ी उमर में देवलोक हुवो आसाणी बहुत हुसियार और दौलतमंद थी उसने बाद खाविंद के मरने के अपनी बस्ती के आस-पास उस पहाड़ पर किला की दीवार बनाई जहाँ हाल तक बनी है।

नाम आस्टा रख्या पीछे राजा भोज पास खबर पहुँची की आसरानी ने किलो बणायो है न जाने इसका मन में है जद इसकी तलासी हुई राणी मजकूर बहोत होसियार थी आगे जारी की निभाव मुस्कल समझीकर आप उज्जैण गई राजा भोज से मिली अपनो सब हाल बयान कियो राजा ने हुकम दियो राणी तुम्हारा घर में दौलत बहुत औलाद नहीं सो कुछ नाम करो तुम्हारी जागीर बहाल रहेगी बात रजमा राखी राणी ने अरज करी कि जो आस्टा मैंने बणाई है वहाँ पानी नहीं है।

इससे आबादी बस्ती की नहीं हो सकती अगरचे मैंने राजा से रुपये लगाकर बस्ती के आसवास पहाड़ पे दिवाल बनाई है वहाँ एक अच्छी चौड़ी लंबो मोटी की टीलो है उस जधे अजयपाल जोगी तपता था हाल में थोड़ा दिनों से तंवर रजपूत और चौहाणों में की ये इस बखत में दिल्ली का राजा है आपुस में राड़ मची रहा है जोगी मजकूर उनका बुलाया हुवा गया है वो टीलो सूनो पड़ियो है। लायेक किला बांधने के है नीचे पारबती नदी है मगर जोगी मजकूर आवे और कोई बात की तकरार करे तो आपने मदद करनी राजा ने जुवाब दियो कि बहुत मुनासिब है उस टीला पर तुम किला बनाओ चार दरवाजा राखो चारों दरवाजा पर अजयपाल की पूजा मुकरर राखो वे जोगीराज हैं सुनकर खुशी होयगो।

इस हुकम को मिलना से तो राणी बहुत राजी हुई अरज करी कि मल्लीनाथजी आसपास अच्छा ज्योतिषी है इन्हों का मोहरत से किला की नींव लगेगी तो जुंभस नहीं होने की और कभी जोगीराज आवेगा तो पंडितजी समझाई देवेगा और उस बस्ती में पंडितजी को कुछ हक मुरर कर दोंगी। जब राजा ने मल्लीनाथजी कूं बुलाकर हुकम कियो कि तुम आस-राणी के संग जावो तुमारो बन्दोबस्त बहुत अच्छो होयगो इनने आज्ञा मानकर राणी के संग तैयार हुवा उसी अरसा में भगवानदासजी सेठ जात जागड़ा पोरवाल रोंझड़ी नगरी का रहने वाला की वे मलीनाथजी का जजमान था रोजगार वास्ते उज्जैन में आया था। पंडितजी उनको भी ले आया कहा के सेठजी बेपार में क्या फायदो उठाओगा हमारे संग चलो वत-नदार बणाई देवांगा जद वे राणी की संग आस्टे आया अच्छो मोहरत देखकर कीला की नींव देवाई...

पानी की तरफ पानी दरवाजो मुकरर कियो गाड़ी का रस्ता को गाड़ी दरवाजो नाम ठहरायो दखन की तरफ दखन दरवाजो नाम राख्यो पीछे केई दिन के झाला राजपूत वहाँ मारिया गया इससे झालापीर दरवाजो मसहूर हुओ पूरब की तरफ सूरज दरवाजो नाम रख्यो उसको हाल में सुनेरी दरवाजो कहे हैं चारों दरवाजा पर अजयपाल की पूजा मुकरर है और जितनी बस्ती जूनी आस्टा में ती वहाँ से उठकर

आसरायी मे यहाँ और अपना नाम पर सा नगर ठहराया परन्तु आस्टा की पैवज हुँ वा बस्ती हुई सो इसकूं भी सब आस्टा केहने लागा और राणी मजकूर ने मेलीनाथजी कूं तमाम परगना की चौधरात और शहर को परसायपणों और पचास साठ गांव की वे शेहर के करीबी देखकर और उनको परसायपणों और दस गांव जागीर बकसा..

उस बखत मल्लीनाथजी ने अपना गांव में से एक गांव जागीर और कुछ गांव जमींदारी का देकर भगवानदास को भी कुछ गांव जमींदारी देकर चौधरी कर लिया और राणी से मिलाकर सनद और कपड़ा दिलाया और कार सरकार में अपना जजमान समझकर बरोबर रखने लग्या उसी अरसा में मथुरा की तरफ ज्यादे महंगाई व ससब सूके नाके हुई थी सो माथुर दो सकस बहोत आलीम रोजगार की तलासी पर आस्टा आये मल्लीनाथजी की मारफत उनने भी राणी साहेब की मुलाकात करी और बहोत होशियारी और चालाकी अपनी बताई जब इनको लायक समझकर बमुजब सलाह मल्लीनाथजी के कानूगो परगणा मजकूर के मुकरर किया अब मल्लीनाथजी व सेठजी व कानूनगोजी तीनों ने एक दिल होकर किला की तैयारी कराई औमर शहर आबाद कियो सरकार चाकरी बहुत अच्छी तरह से करी राणी साहब की बहोत सी मेरबानी रही

थोड़ा दिन पीछे तीनों का कबीला खटला भी अई गया मल्लीनाथजी का दो पुत्र था बड़ा पुत्र भी बरोबर पढ़िया लिख्या पंडित था पढ़िया लिख्या आस्टा में आया था और छोटा कम उमर की में आकर आस्टा में होशियार हुआ और खुद मल्लीनाथजी जिया जद तक राजा भोज पास रेहता था और आस्टा में कभी-कभी आया करता जद सेठजी और कानूगो सरकारी काम में मल्लीनाथजी कूं अपना पास रखता था कारबार में छोटी बेटी बहुत होशियार हुई गयी बड़िल पुत्र दिन-रात शास्त्र विचार और स्नान संध्या में मगन रहता था ईश्वर इच्छा से मल्लीनाथजी देवलोक हुवा और पीछे छोटा पुत्र ने येक रोज बड़ा भाई से अरज करी कि आप पंडित हो दरबार कचेरी से सरोकार रखता नहीं सो जो मरजी मे आवे तो मैने येक तजवीज विचारी है फरमावो कि बोलो अरज करी की सहर और तमाम अपना जितना गांव है सबको परसायपणो आप अपनी तरफ राखो आपकी तरफ से ब्राह्मण जाई कर काम करी आया करेगो और मैं आपका पांव पूजूं हूं म्हारा आप गुरु और महाजन चौधरी का गुरु तो आप ही हो और कानूनगो भी आप कूं गुरु के हम सब मिलकर आपकी सेवा करांगा आप आराम से घर में बैठकर स्नान संध्या किया करो फकत दसेरा के दिन आप दरबार चलाया करो अव्वल राणी साब कूं आप श्रीफल देगा खीलत बांधोगा पीछे हम भेंट करांगा खीलत लेवांगा और चौधराट की फारकती हम कूं दे दो महाराज आलीम आदमी था

ये मंजूर करके उसी बखत फारती चौधरात की छोटा भाई कूं लिख दीदी जद छोटा ने कुछ नजर गुजराना सेठजी ने और कानूनगो ने भी पांव पूजकर कुछ भेंट आगे रखी दो-तीन ब्राह्मण परसायपणा की खिजमत वास्ते मुकर्रर कर दिया और वे रोज की आमदनी लाकर इनके आगे रखता और दोनों चौधरी और कानूनगो दर रोज इन पास आवता सेवा करता वे जिया जद तक किसी बात की कमती नहीं पड़ने दी दी जद से परसाई चौधरी अलग हुई गया मगर दोनों मल्लीनाथजी की ... हैं

ये कनेस्यैक देवीयेक गोत्र बहोत पीढ़ी तक खुद करियो पीछे मौकूफ हुवो तो सेठजी ने तो इहां तक महाराज को बड़पण राख्यो की लड़की की सादी में औवल महाराज कुछ दायजो देवे जद आप पांव पखालेसो जब जागड़ा जात में वोही सिरस्तो है की मल्लीनाथजी का नाम से दायजो पड़े जद बेटी का बाप-मांय पांव पखाले दे करे और जात वाला दायजो नाके और जो घाट मल्लीनाथजी ने उज्जैन में बनायो थो वो तो गीर गया मगर हमारा जो तीरथ उपाध्या उज्जैन में है अब तक वा जगे बताये है इस मुजब हाल पुराणा कागद में लिख्या है सो देखकर ई नकल की गई कारण की वी कागद गली सड़ी गया हाल में हम लोग मल्लीनाथजी की छत्तीस-सेंतीस पीढ़ी में हाँ कुरसीनामा को दरख्त अलाहदा लिख्यो है आज तक जितना पुरुस बंस में हुवा सब का नाम रोसन है था नकल औंकार भट्ट साकिन आसटा हाल आबाद सीहोर सिरस्तेदार हिन्दी मरेठी अंगरेजी सीहोर ने करी है मिती श्रावण सुदी १३ सं. १९११ सन् १२६२ फसली

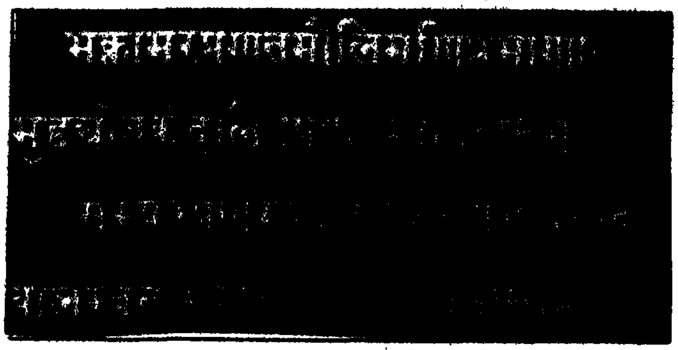
किताब आमद मल्लीनाथजी की नकल करने वाले उक्त औंकार भट्ट ने जिस कुरसीनामे का उल्लेख किया है वह इन पंक्तियों में लेखक को नहीं मिला।

साभार-

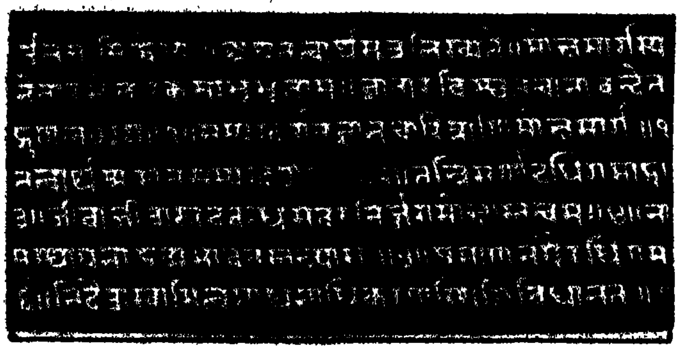
— 'वीणा' मासिक पत्रिका, इन्दौर

◆◆◆

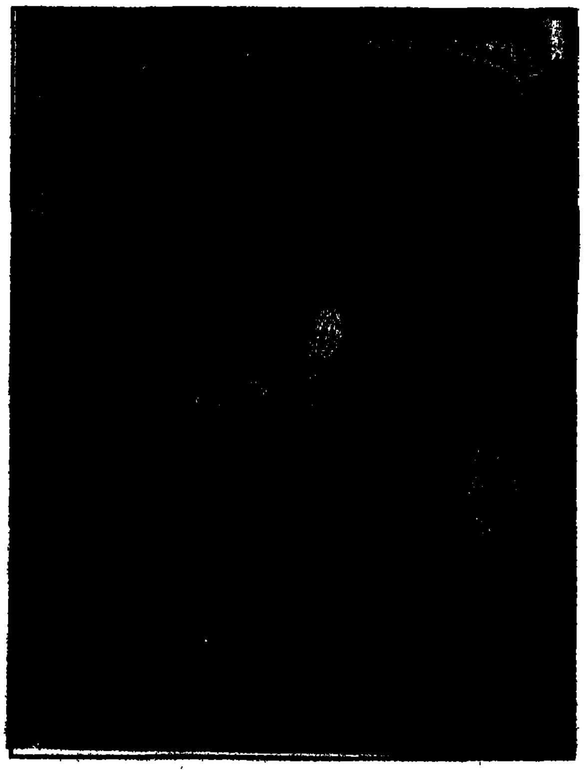
किला मंदिरजी में संग्रहित मुगलकालीन दुर्लभ नमूने



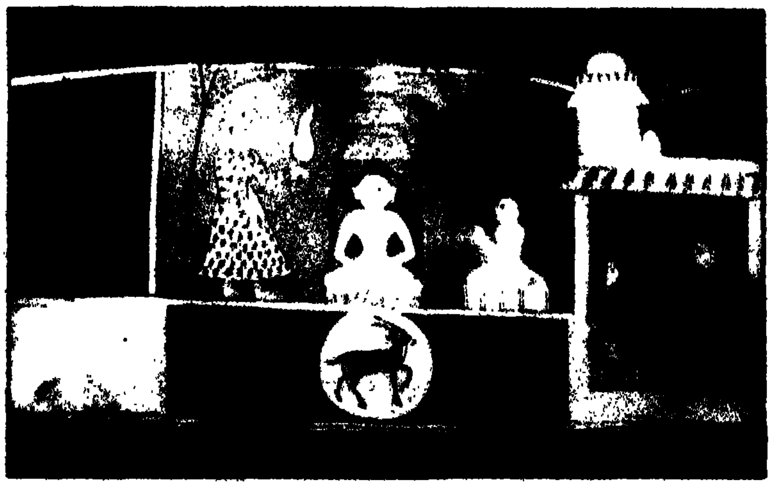
अति प्राचीन स्वर्णाक्षरों में हस्त लिखित (भक्तामर) शास्त्र



अति प्राचीन स्वर्णाक्षरों में हस्तलिखित (शहस्रनाम) शास्त्र



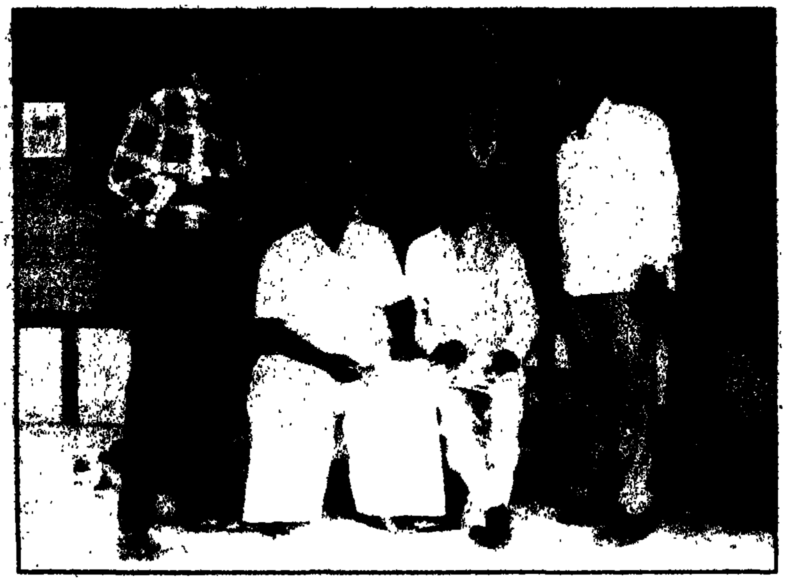
क्षेत्रपालजी का मुगलकालीन चित्र



मुगलकालीन चित्रकला के बेजोड़ चित्र



मुगलकालीन चित्रकला के बेजोड़ चित्र



प्रमुख संयोजक तथा अध्यक्ष से परामर्श करते हुए प्रधान सम्पादक व प्रबन्ध सम्पादक

नगर की ऐतिहासिकता के गीत गाते प्राचीन द्वार

(बारह में से दो शेष रहे विशाल द्वार)



प्राचीन दरवाजा गंज



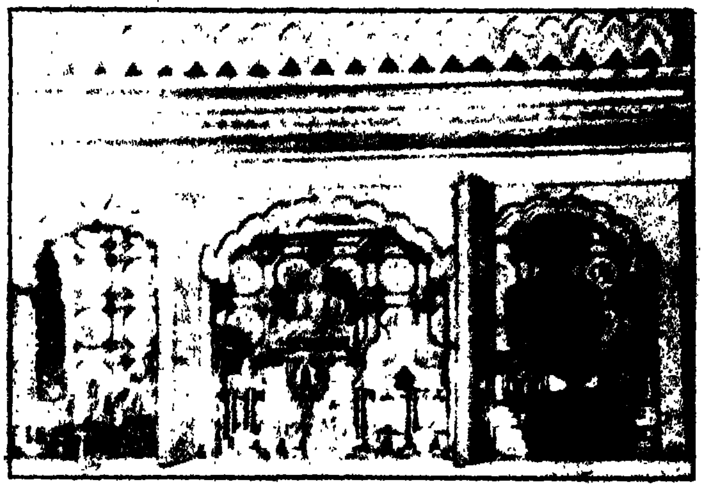
किले का मुख्य दरवाजा

श्री १००८ चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन जिनालय अलीपुर

एक परिचय

➤ सवाईमल जैन, शिक्षक
एम.ए., बी.टी.





मूल नायक वेदिका

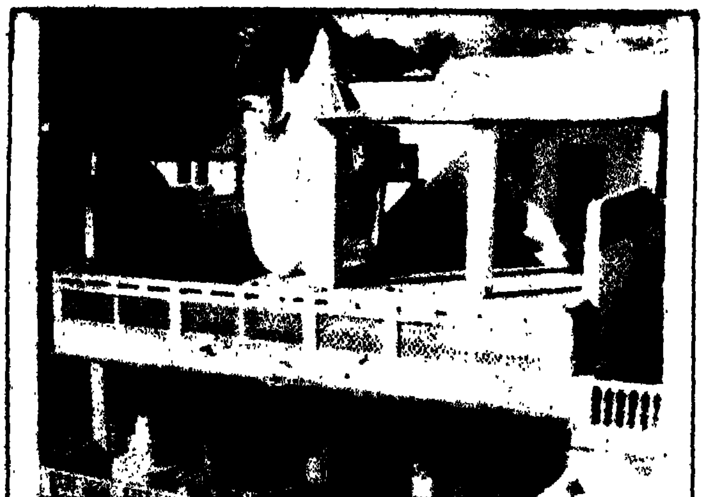
आष्टा नगर के प्रवेश द्वार पर सलिला पार्वती के पावन तट के समीप बसा अलीपुर मोहल्ला है। यहाँ श्रेष्ठी श्री राजमलजी, श्री राजमलजी (मुनिम सा.), श्री चुन्नीलालजी, श्री मगनलालजी, श्री कन्हैयालालजी जैन के पाँच परिवार निवासित थे। किला मंदिरजी की दूरी व मार्ग में नदी होने से प्रतिदिन देव दर्शन संभव नहीं थे। श्री कन्हैयालालजी को देवदर्शन कर ही भोजन करने का नियम था। अतः उन्हें नदी तैर कर (पुल नहीं था) मंदिरजी जाना होता था। अधिक बाढ़ होने पर प्रायः २-३ दिन के उपवास करना पड़ते थे।

पाँचों वृद्ध अपनी संस्कार रहित अगली पीढ़ी के लिए काफी चिंतित थे। अतः एक चैत्यालय स्थापित करने का विचार आया। दिगम्बर जैन समाज इछावर ने भावनाओं का आदर कर अपनी स्वीकृति की मोहर लगाई। तत्पश्चात् चन्द्र प्रभु भगवान की यह मनोज्ञ व चमत्कारिक चैतन्य प्रतिमा श्री मांगीलालजी मगनलालजी जैन के कुटीर में बने लकड़ी के चैत्यालय में सन् १९३६ ई. में शोभायमान हुई।

चंदा बाबा के दर्शन लाभ होते ही दि. जैन समाज आष्टा के अंदर उत्साह की सिहरन सैलाब बन उमड़ पड़ी। परिणामस्वरूप शिखर बन्द जिनालय का निर्माण सम्भव हुआ।

इसी माटी के सपूत वाणी भूषण प्रतिष्ठाचार्य पं. कन्हैयालालजी नारे जिनकी ख्याती पूरे भारतवर्ष में थी। अपने गृह नगर में ही कुछ न कर पाने की टीस मन में लिए बैठे थे। जैसे ही आपने उद्गार व्यक्त किए पूरा समाज पुलकित हो झूम उठा। फिर तो आष्टा समाज का बच्चा-बच्चा तन-मन-धन से समर्पित हो गया। परिणामतः मई १९७५ में मुनि श्री १०८ दर्शन सागरजी महाराज के पावन सानिध्य में इस जिनालय का भव्य पंच कल्याणक प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न हुआ। जिसके प्रतीक स्वरूप समाज द्वारा बस स्टेण्ड आष्टा पर एक भव्य धर्मशाला का निर्माण कराया गया।

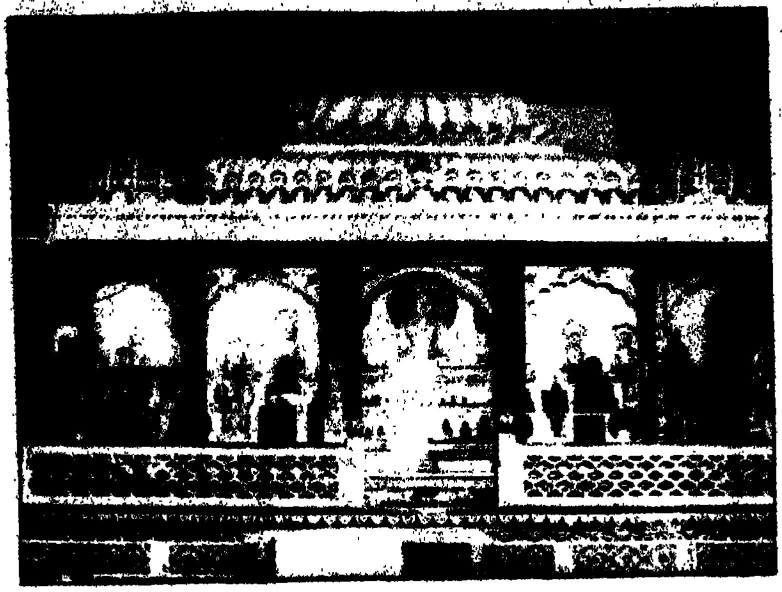
यहाँ आचार्य श्री १०८ सीमंधर सागर (दो चातुर्मास) मुनि श्री १०८ विनम्र सागरजी, आचार्य श्री १०८ दर्शन सागरजी महाराज के ससंघ चातुर्मास सम्पन्न हुए हैं। यहाँ देव योग से अतिशय होना सामान्य बात है। १९८४ के चातुर्मास में ध्यानस्थ मुनि श्री कुलभूषण जी महाराज के सम्मुख एक सर्प बैठा रहा, मुनि श्री की आंखें खुलने पर उनके चरण छूकर आश्चर्यजनक ढंग से विलुप्त हो गया। एक बार अविनय होने से पूरे जिनालय में काजल की बरसात हुई थी। विगत श्रावण-भादो मास में लगातार एक-डेढ़ माह तक जिनालय के आसपास लगभग ३०० मीटर के भू-भाग में प्रतिदिन चंदन



मन्दिर का अग्र भाग

की वर्षा होती रही। वर्तमान में धन-धान्य से परिपूर्ण ३५ परिवार यहाँ निवास कर रहे हैं तथा पूरा आष्टा जैन समाज मनोज्ञ प्रतिमा के दर्शन कर आत्मिक सुख का असीम आनन्द लूट रहा है।

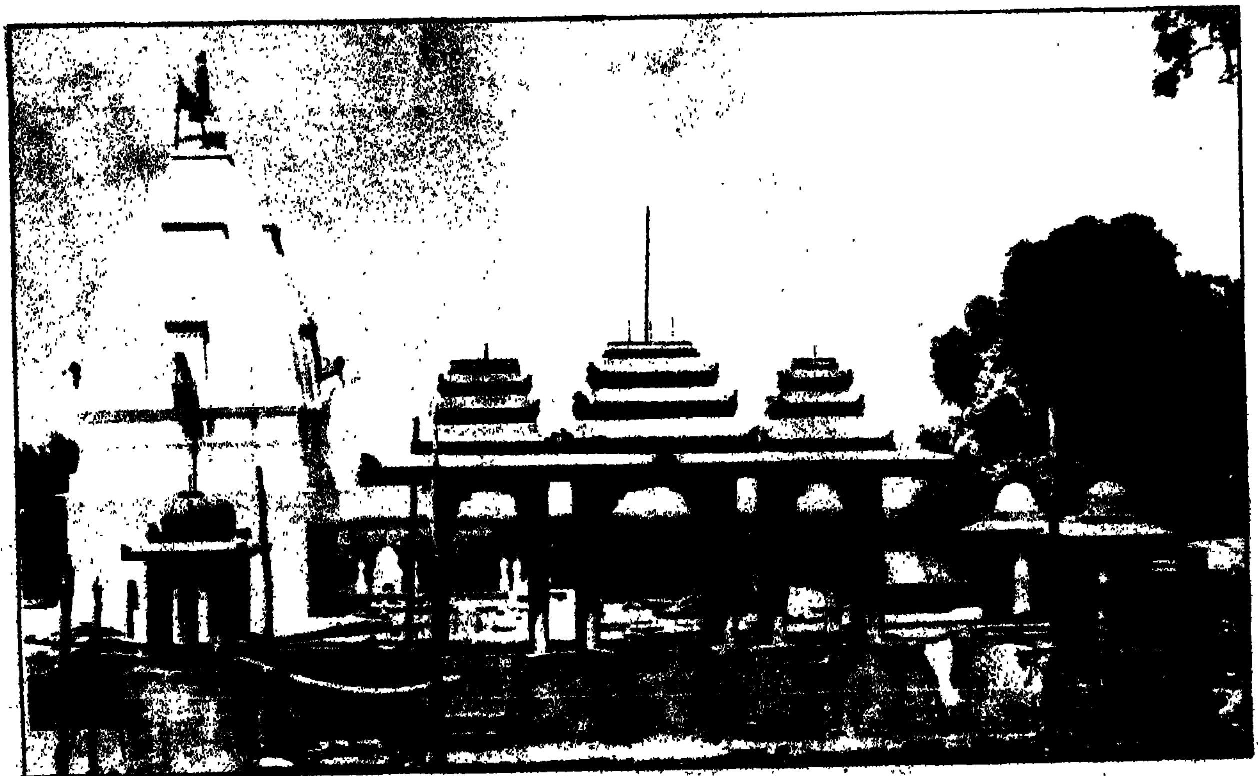
❖❖❖



मूल वेदिका किला मन्दिर, आष्टा



टां वर्ष पूर्व बड़ा बाजार से खुदाई में प्राप्त चतुर्थ कालीन आदिनाथ तथा चौबीसी की अद्भुत कलात्मक प्रतिमा

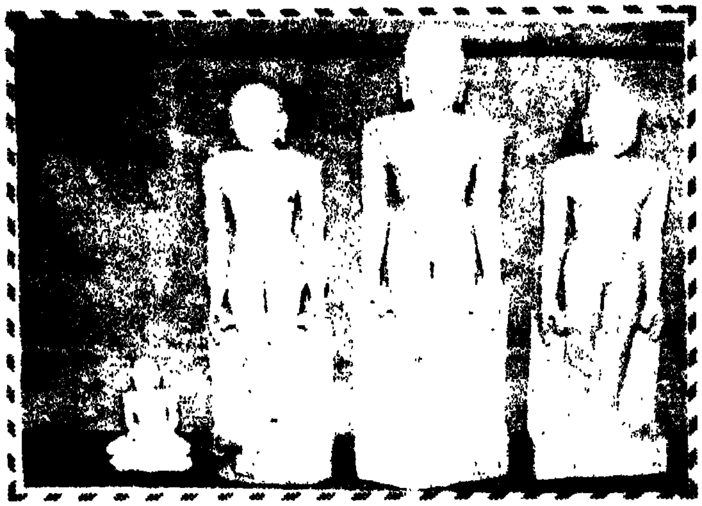


दि. जैन किला मंदिरजी का अग्र भाग एवं निर्माणाधीन भव्य सिंह द्वार

श्री दि. जैन मन्दिर गंज, आष्टा



चन्द्रप्रभु भगवान मूल नायक वेदी



नवीन स्थापित त्रिमूर्ति

अनमोल सीख

➤ संकलन-
अशोक कुमार (प्रद्युम्न) जैन, आष्टा

बोल सको तो मीठा बोलो, कटु बोलना मत सीखो।

बचा सको तो जीव बचाओ, जीव मारना मत सीखो।

जला सको तो दीप जलाओ, हृदय जलाना मत सीखो।

बिछा सको तो फूल बिछाओ, शूल बिछाना मत सीखो।

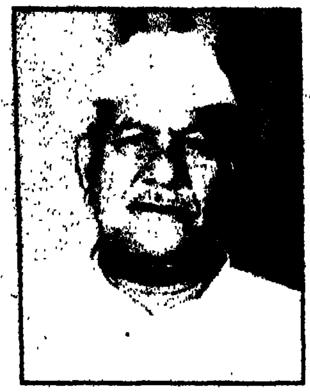
मिटा सको तो गर्व मिटाओ, प्यार मिटाना मत सीखो।

कमा सको तो पुण्य कमाओ, पाप कमाना मत सीखो।

लगा सको तो बाग लगाओ, आग लगाना मत सीखो।

- सीरत बिना सूरत व्यर्थ है
- उपयोग बिना धन व्यर्थ है
- लगन बिना हुनर व्यर्थ है
- साहस बिना हथियार व्यर्थ है
- भूख बिना भोजन व्यर्थ है
- प्रेम बिना जीवन व्यर्थ है
- भक्ति बिना पूजा व्यर्थ है
- होश बिना जोश व्यर्थ है

आपकी आँखों का सपना .... जो साकार हुआ



स्व.पं. कन्हैयालालजी नारे



स्व. श्रीमती शक्कर बाई



स्व. श्री फूलचन्दजी कासलीवाल



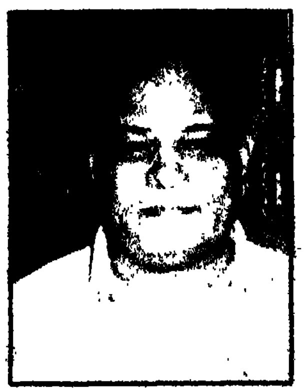
मंदिर जीर्णोद्धार शिलान्यास समारोह में स्व. पं. नारेजी, स्व. शक्कर बाई, स्व. सौभाग्यमलजी व परिवार



स्व. भूरामलजी जैन



स्व. सुन्दरलालजी जैन किला



स्व. शान्तिलालजी श्री मोड़

श्री दि. जैन पंचायत कमेटी आष्टा

पदाधिकारी

संरक्षक :- श्री राजमल सेठी

अध्यक्षः- श्री राजमल जैन कोठरी

उपाध्यक्षः- श्री सुरेशकुमार कासलीवाल

मंत्रीः- श्री निर्मलकुमार श्री मोड़

कोषाध्यक्षः- श्री मणिकलाल श्री मोड़

सहा. मंत्रीः- श्री कैलाशचंद लसु. वाले

शास्त्र मंत्रीः- श्री घेवरमल सेठिया

सहा. शास्त्र मंत्री एवं सहा. सचिवः- श्री जैनपाल जैन बाखल

सह. सचिवः- श्री सुखानंद जैन

सदस्यगण

श्री लाभमल जैन अलीपुर

श्री सवाईमल जैन गंज

श्री माखनलाल जैन भूफोड़ वाले गंज

श्री गुलाबचंद झांझरी

श्री अनोखीलाल सेठिया

श्री मिश्रीलाल जैन बुधवारा

श्री राजकुमार श्री मोड़

श्री अशोक कुमार श्री मोड़

श्री मनोहरलाल (पान वाले)

श्री बाबूलाल जैन गवाखेड़ा वाले

श्री ताराचन्द जैन (मुनीम)

श्री अशोक कुमार कासलीवाल

श्री राजकुमार सेठिया

श्री प्रद्युम्न कुमार जैन अलीपुर

श्री श्रीपाल जैन अलीपुर

श्री सुंदरलाल जैन अलीपुर

श्री छोटमल जैन बुधवारा

श्री अनिलकुमार जैन (महावीर)

श्री अजित कुमार जैन

श्री विधानचंद्र श्री मोड़

श्री घेवरमल जैन किला

श्री कैलाशचंद्र टोंग्या

श्री वीरेन्द्रकुमार जैन (रेडियोज)

श्री सवाईमल जैन अलीपुर

श्री मुकेश कुमार बड़जात्या

श्री छीतरमल बुधवारा

श्री सुजानमल जैन, गंज

श्री रमेशचंद्र जैन (सामरदा वाले)

श्री रमेशचंद्र जैन (डाबरी वाले)

श्री कंवरमल जैन बुधवारा

श्री सुरेशचंद्र जैन (अध्यापक)

श्री गुलाबचंद बुधवारा

श्री राजमल जैन (हराजखेड़ी वाले)

◆◆◆

पंच कल्याणक एवं गजरथ महोत्सव समिति

★ **परम संरक्षक-** माननीय श्री दिग्विजयसिंह (मुख्यमंत्री म.प्र. शासन भोपाल), पद्मश्री बाबूलाल पाटोदी, इन्दौर

★ **संरक्षक-** कल्याणमल बड़जात्या, अशोक कासलीवाल, बाबूलाल श्री मोड़, मांगीलाल जैन, अलीपुर अनोखीलाल सेठीया, श्री मनजी जैन नजरगंज, मिश्रीलाल जैन बुधवारा, छीतारमल जैन बुधवारा लाभमल सेठीया बम्बई (पूर्व अध्यक्ष दि. जैन पंच आष्टा)

★ **प्रमुख परामर्शदाता-** पं. नाथूलालजी शास्त्री, इन्दौर

★ **परामर्श मंडल-** इंजि. जैन कैलाशचंद वेद इन्दौर, विजय कासलीवाल, इन्दौर पं. जयसेनजी जैन इन्दौर, भानूकुमार जैन इन्दौर, सुभाष गंगवाल, इन्दौर, गुलाबचन्द बाकलीवाल, इन्दौर

★ **प्रमुख संयोजक-** राजमल जैन कोठरी (अध्यक्ष दिगम्बर जैन पंचायत आष्टा)

★ **अध्यक्ष-** राजमल सेठी

★ **महामंत्री-** निर्मलकुमार श्री मोड़

★ **कोषाध्यक्ष-** कमल कासलीवाल

★ **उपाध्यक्ष-** सुरेश कासलीवाल जैन, सुजानमल जैन गंज, माणकलाल श्रीमोड़, कपूरचन्द गंगवाल, बाबूलाल भूरामल, डॉ. जैनपाल जैन

★ **मंत्री-** डॉ. मगन जैन, घेवरमल सेठिया, कैलाशचन्द जैन लसुड़िया वाले, सुखानन्द जैन, राजकुमार श्री मोड़, अशोक कुमार श्री मोड़, सुरेन्द्रकुमार जैन अलिपुर पवनकुमार जैन अलिपुर, जैनपाल जैन (बारवल)

★ **उप कोषाध्यक्ष-** गुलाबचन्द झांझरी, राजकुमार सेठीया, जैनपाल जैन मुनीमजी

★ **महिला संयोजिकायें-** श्रीमती पद्मा कासलीवाल, श्रीमती किरणबाई श्री मोड़, श्रीमती स्नेहलता गंगवाल, श्रीमती उषा सेठी, श्रीमती कमल श्रीबाई जैन, श्रीमती निर्मलाबाई अध्यक्ष, जैन महिला मंडल आष्टा, श्रीमती गुलाबबाई सेठिया

★ **विशेष सहयोगी-** नेमीचन्द जैन विधायक (शुजालपुर)

★ **मंडल सहयोग-** कमल जैन अध्यक्ष (अरिहंत मंडल), मनोजकुमार जैन, अध्यक्ष (जैन युवा मंच), कचरुमल जैन अध्यक्ष (दि. जैन नवयुवक मंडल), कोमल जैन, अध्यक्ष (चन्द्रप्रभू मंडल अलिपुर), सुजानमल जैन गंज अध्यक्ष (पदमावती पोरवाल सन्मार्ग समिति, आष्टा)

★ **प्रचार-प्रसार एवं शासकीय व्यवस्था-** नरेन्द्र गंगवाल, अनूपकुमार श्री मोड़, सुनिल सेठी, राकेश जैन ठेकेदार, कल्याण सेठिया, मनोज सेठी, नरेन्द्रकुमार श्री मोड़, सुभाष जैन

★ **प्रमुख सहयोगीगण**

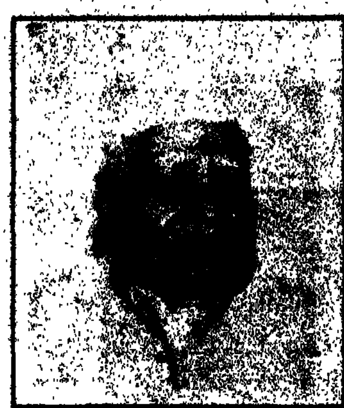
लाभमल जैन अलिपुर, मोतीलाल कासलीवाल, मनोज चौधरी रेन्जर, सवाईमल जैन अलिपुर, कैलाशचन्द टोंग्या सोनकच्छ वाले, घेवरमल जैन किला शानचन्द विनायका, सुन्दरलाल जैन अलिपुर, मूलचन्द जैन जादूगर, दिलीप सेठी, राजेन्द्र गंगवाल, माणकलाल नीर, सुरेशचन्द जैन (शिक्षक), छोटेमल जैन, अनिल जैन (महावीर), सूरजमल जैन हराजखेड़ी, गुलाबचन्द जैन बुधवारा, जीतमल जैन बुधवारा, बसन्तीलाल जैन नमक वाले, माखनलाल जैन भूपोड, बाबूलाल जैन गवारखेड़ा, विपुल कुमार श्री मोड़, वीरेन्द्र कुमार, मनोहरलाल लासुड़िया वाले, बाबूलाल जैन अलिपुर, श्रीपाल जैन अलिपुर, रखबलाल बुधवारा, सवाईमल जैन गंज, रमेशचन्द जैन सामरदा वाले, राजमल जैन हराजखेड़ी, विमलचन्द जैन सिंगार चोरी, स्वरूपचन्द जैन, रमेशचन्द जैन (डाबरी), ताराचन्द मुनीम, बाबूलाल हराजखेड़ी, प्रद्युमन कुमार अलिपुर, मुकेश बड़जात्या, विधानचन्द श्री मोड़। जावर से- मांगीलाल जैन, नूतनकुमार जैन, सुमतलाल जैन, कोठरी से- शान्तीलाल जैन, महेन्द्रकुमार जैन (शिक्षक), रमेशचन्द जैन, रमेश कुमार जैन (शिक्षक), अशोक कुमार जैन मेहतवाड़ा से- मिश्रीलाल जैन, मांगीलाल जैन, पदमकुमार जैन

स्नेह सहयोग और सफलता के गौरवधार

संरक्षक



माननीय श्री दिग्विजयसिंह
मुख्यमंत्री म.प्र. शासन, भोपाल



पद्म श्री [illegible],
इन्दौर



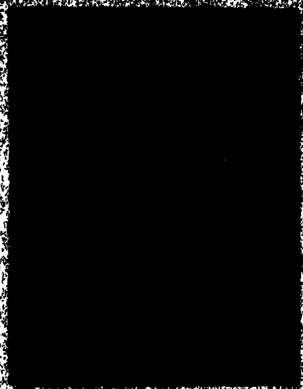
[illegible]



[illegible]



श्री पं. नाथूलालजी शास्त्री,
इन्दौर



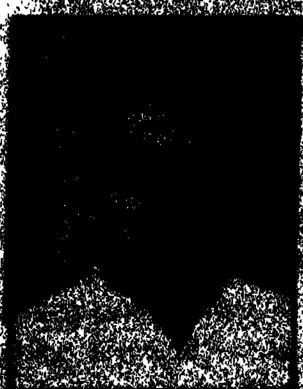
[illegible]
इन्दौर



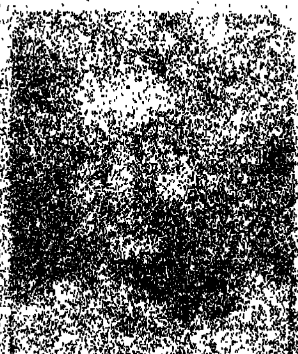
श्री पं. जयसेनजी जैन,
इन्दौर



श्री [illegible]कुमारजी जैन,
इन्दौर



[illegible]





[illegible]



डॉ. जैनपाल जैन
प्रधान सम्पादक



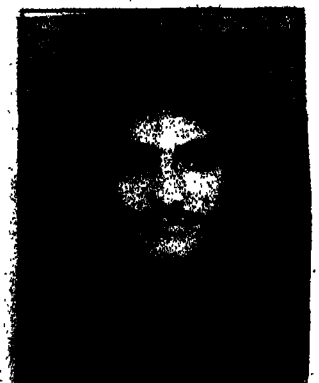
सुरेन्द्र कुमार जैन
प्रबन्ध सम्पादक



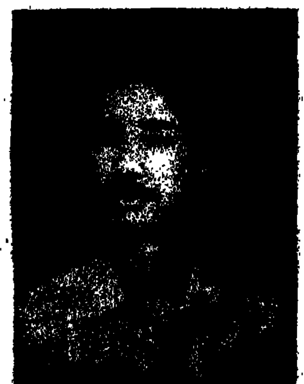
श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल
परामर्श सम्पादक



नरेन्द्र कुमार श्रीमोह
सह-सम्पादक



मनोज कुमार जैन
सह-सम्पादक



मनोज कुमार सेठी 'गोपा'
सह-सम्पादक

प्रभारी मण्डल



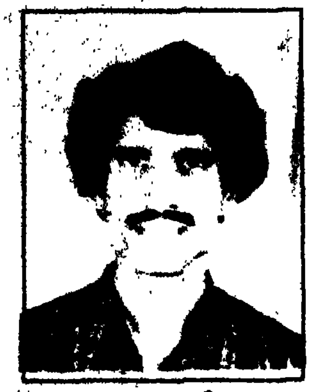
सुरेशचन्द्र जैन
विज्ञापन प्रभारी



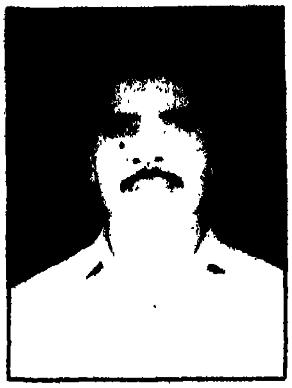
जीतेन्द्र जैन 'जे.के.'
विज्ञापन प्रभारी



संजय जैन (किला)
आलेखन प्रभारी



पवन कुमार जैन
स्मारिका वितरण प्रभारी



अरुण श्री मोड़
स्मारिका वितरण प्रभारी



सुभाष जैन
स्मारिका वितरण प्रभारी



श्री बाबूलालजी पाटोदी प्रतिष्ठा कार्यालय का शुभारंभ करते हुए

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ समिति द्वारा मनोनीत पात्र जिन्हें प्रतिष्ठाचार्यजी के निर्देशों के अन्तर्गत पुण्य पात्र की भूमिका निर्वाह करनी है



तीर्थंकर के माता-पिता- श्री घेवरमलजी सेठिया एवं श्रीमती रमा सेठिया, आष्टा



सौधर्म इन्द्र- श्री अशोक कासलीवाल एवं श्रीमती पदमा कासलीवाल, आष्टा



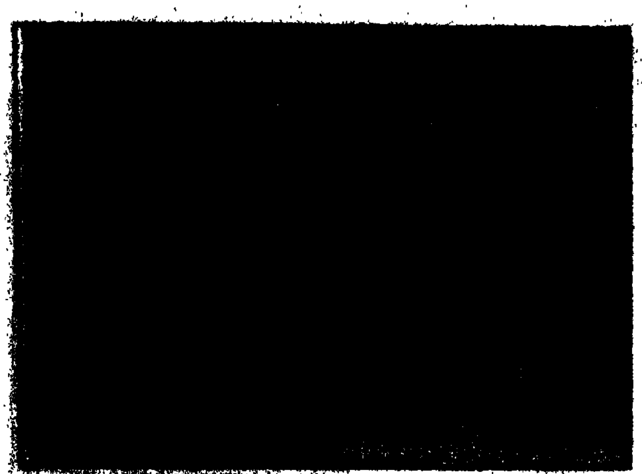
ईशान इन्द्र- श्री अनिल सेठी एवं श्रीमती उषा सेठी, आष्टा



सानत कुमार इन्द्र- श्री बाबूलाल श्री मोड़ एवं श्रीमती मनुदेवी मोड़, आष्टा



महेन्द्रकुमार इन्द्र- श्री निर्मल कुमार श्री मोड़ एवं श्रीमती किरण श्री मोड़, आष्टा



कुबेर इन्द्र- श्री बाबूलाल जैन एवं श्रीमती जैन, भंवरा



यक्ष नायक- श्री मांगीलाल श्री मोड़ एवं श्रीमती शान्ति देवी, जावर



ब्रह्म इन्द्र- श्री दीपचन्दजी एवं श्रीमती सुगनबाई, आष्टा



लान्तव इन्द्र- श्री मनोहरलाल एवं श्रीमती आशा जैन लसुड़िया वाले



शुक्र इन्द्र- श्री कपूरचन्द एवं श्रीमती स्नेहलता गंगवाल, आष्टा



शतारेन्द्र- श्री सुमतलाल एवं श्रीमती कांताबाई, जावर



आनतेन्द्र- श्री सूरजमल जैन एवं श्रीमती लीलाबाई जैन, इटावखेड़ी



प्राणतेन्द्र- श्री नूतनकुमार एवं श्रीमती रेशमबाई जैन, जावर



आरणेन्द्र- श्री [illegible] कुमार एवं आशाबाई जैन, [illegible]



अच्युतेन्द्र- श्री निर्मल कुमार एवं श्रीमती रत्नबाई लीलवड

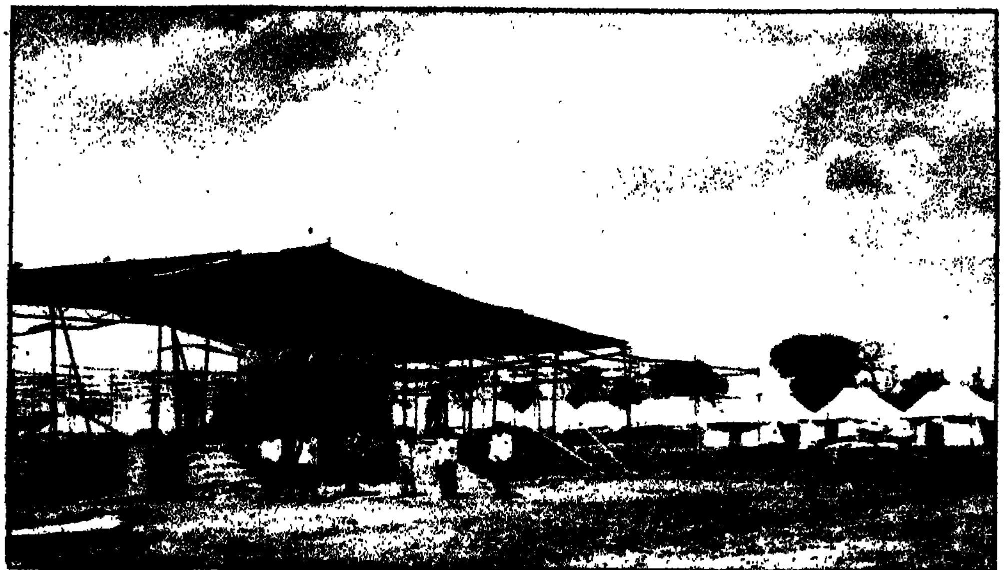
प्रतिष्ठा स्थल से...



पंच कल्याणक प्रतिष्ठा स्थल भूमि पूजन समारोह



विशाल पांडाल निर्माण तैयारियां



प्रतिष्ठा स्थल तैयारियों के विहंगम दृश्य



आपकी राह तकते आवासीय कुटीर

धर्म

➤ मुनि १०८ श्रुत सागर

ऊँ नमः सिद्धेभ्या। ऊँ नमः सिद्धेभ्या।। ऊँ नमः सिद्धेभ्या।।।
शिव उपाय प्रथम करत, कारण मंगल रूप,
विघ्न विनाशक सुखकरंण नमो शुद्ध शिवभूप

धर्म :-

धर्म-धर्म सब कोई कहे धर्म न जाने कोय

धर्म-मर्म जाने बिना धर्म कहाँ से होय

जीव दया पाले बिना धर्म कहाँ से होय

वस्तु स्वभाव धम्मोः-

वस्तु के स्वभाव को धर्म कहते हैं। जो जिसका स्वभाव है वही उसका धर्म है, जो उसमें सर्व काल विद्यमान रहता है। धर्म वही है जिसे धारण करने से आकुलता (दुःख) का अभाव होकर शाश्वत निराकुलता (सुख) की प्राप्ति हो। धर्म तो वास्तव में जीने की कला है। आत्मा का स्वभाव है (ज्ञान और दर्शन) जानना और देखना। जैसे जल का स्वभाव अग्नि के संयोग से गर्म हो जाता है पर उसका स्वभाव वह नहीं है अग्नि का संयोग दूर होने पर पुनः ठंडा हो जाता है। उसी प्रकार आत्मा का स्वभाव भी कर्मों के संयोग से विकृत हो रहा है एवं जिस प्रकार अग्नि कभी भी अपने उष्मा स्वभाव को नहीं छोड़ती उसी प्रकार धर्म भी कभी बदलता नहीं - वह सदा शाश्वत है।

अनन्त ज्ञान दर्शन तथा सुख शान्ति का स्वामी होते हुए भी आत्मा अपने आपको भूलकर मूढ़ अज्ञानी अशान्त और दुःखी बना हुआ है- यदि अपने असली स्वभाव को पहचानने तथा उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करे तो सारी समस्या सुलझ सकती है।

'जिन उपायों से कर्मों को दूर करके आत्मा में निर्मलता आती है, उनका आचरण करना चाहिए'

त्याग में कभी कंजूसी नहीं करना। हृदय की समस्त उदारता से अभीभूत हो त्यागना। समस्त को त्यागने से ही समस्त की प्राप्ति संभव है। अहोभाव से त्याग कर अपने आपको अत्यन्त सौभाग्यशाली समझना यह तुम्हारा रिक्त पात्र तब निश्चित ही अमृतत्व से आकंठ भर जावेगा। अविश्वास रखो।

१०० काम छोड़ कर भोजन करो,

हजार काम छोड़ कर स्नान करो,

एक लाख काम छोड़ कर दान करो,

करोड़ों काम छोड़ कर देव दर्शन करो,

गुरु के निकट ना करने योग्य कार्य

१. गुरु के निकट व्यर्थ की गपशप नहीं करना।

२. गुरु के निकट किसी दूसरे की निंदा न करना।

३. गुरु से ऊंची नजर करके ना बोलना

४. गुरु के समक्ष पैर पर पैर रखकर ना बैठना।

५. गुरु के समक्ष छल-कपट ना करना।

६. गुरु के निकट टिक कर ना बैठना।

७. हमेशा गुरु के पीछे चलो।

८. गुरु से कुछ भी बात न छिपाओ।

९. गुरु के निकट किसी प्रकार का गर्व ना करना।

१०. गुरु से हमेशा नीची दृष्टि रखना चाहिए।

❖❖❖

"मन को जीत इससे कट्टर शत्रु दूसरा नहीं"

धर्म बला नहीं, जीने की कला है

➤ मुनि श्री तरुणसागरजी



मनुष्य एक सोपान है। सीढ़ी चढ़ने के काम भी आती है और उतरने के काम भी आती है। जिस सीढ़ी से चढ़कर ऊपर पहुँचा जाता है उसी सीढ़ी से नीचे भी उतरा जा सकता है। मानव भी सीढ़ी की तरह है। इस शरीर के माध्यम से परमात्मा तक भी पहुँचा जा सकता है और नीचे से नीचे (नरक-निगोद) भी जाया जा सकता है। मनुष्य- देह देहातीत होने के लिए मिलती है। लेकिन जब व्यक्ति देहासक्त होकर जीता है तो पतनोन्मुखी हो जाता है। मानव तन तो आत्मा को निखारने की प्रयोगशाला है। शरीर तो नश्वर है, लेकिन नश्वर शरीर में ईश्वर की प्रबल संभावना है। देह में जो ज्योति है, उस ज्योति से साक्षात्कार करना ही तुम्हारी नियति है।

यदि मनुष्य न्याय, नीति साधना व धर्मपूर्वक जीवन यापन करता है तो 'शिव' होता है और यदि धर्म विमुख होकर जीता है तो 'शव' से ज्यादा कुछ नहीं बनता। धर्म का मार्ग शिव बनने का मार्ग है और पाप का मार्ग शव बनने का द्वार है। मनुष्य में दो प्रकार की शक्तियाँ मौजूद है : एक : वह शैतान भी बन सकता है और दूसरी : वह भगवान भी बन सकता है। धर्म वह है जो पशु को परमेश्वर बना दे। धर्म वह है, जो नर को नारायण बना दे। धर्म वह है जो शैतान को भगवान बना दे। धर्म वह है जो कंकर को तीर्थंकर बना दे। धर्म वह है, जो पतित को पावन बना दे। धर्म से ही मनुष्य का सर्वोन्मुखी विकास संभव है। मानव जीवन का लक्ष्य सिर्फ पेट और पेटी भरना नहीं है, परमार्थ और परमात्मा को जीना भी है। धर्म व न्याय-नीति पूर्वक जीवन से पेट तो भर सकते हो, लेकिन पेटी नहीं भर सकते। पेटी जब भी भरती है वह धर्म और न्याय को ताक पर रखकर ही भरती है। समुद्र कभी भी शुद्ध जल से नहीं भरता। जितना गंदा मैला पानी होता है, उस सब को आत्मसात करके ही वह परिपूर्ण होता है। तुम्हारी पेटियाँ, तिजोरियाँ, कोठियाँ भी यदि भर रही है तो समझ लेना कि वह धन धर्म की हत्या करके आया है। याद रखना : जो धन धर्म की हत्या करके आता है वह धन जीवन के लिए अभिशाप सिद्ध होता है। वह अर्थ अनर्थ का घर है, क्योंकि वह अनैतिक तरीकों से अर्जित किया गया है।

कभी ख्याल किया, लक्ष्मी को देखना, लक्ष्मी के चित्र को देखना, लक्ष्मी हमेशा खड़ी मिलेगी और सरस्वती सदा बैठी मिलेगी। लक्ष्मी खड़ी है, पर क्यों? सरस्वती बैठी है, पर क्यों? लक्ष्मी खड़ी है : वह कहती है- देखो, मैं बड़ी चंचल हूँ, मैं खड़ी हूँ, कभी भी कदम बढ़ाकर पड़ोसी के घर जा सकती हूँ। तैयार खड़ी हूँ। मन हुआ कि घर से बाहर हो जाऊंगी, मैं स्थायी नहीं हूँ मैं शाश्वत नहीं हूँ, पलक झपकते ही गायब हो जाऊंगी। तो लक्ष्मी खड़ी है। उसका खड़ा होना बड़ा गहन संकेत है, वह कहती है जब तक हूँ या तो दान दे लो या भोग कर लो। और सरस्वती बैठी है उसका बैठना प्रतीक है कि सरस्वती या तो आती नहीं है और आती है तो बैठ जाती है फिर जाने का कभी नाम भी नहीं लेती। सरस्वती स्थिर है, शाश्वत है, स्थायी है। लक्ष्मी तो आती भी है और जाती भी है। लेनिक सरस्वती सिर्फ आती है। तुमने देखा होगा कि कई लखपति, खाकपति हो गए। करोड़पति, सड़कछाप हो गए और कई भिखारी सम्राट बन गए, लेकिन कोई ज्ञानी, प्रज्ञा-पुरुष, बुद्धपुरुष अज्ञानी हो गया हो, मूर्ख हो गया हो ऐसा कभी नहीं देखा होगा, कभी नहीं सुना होगा। तो लक्ष्मी धन-दौलत के पीछे पागल मत होना। लक्ष्मी धन का प्रतीक और सरस्वती धर्म का प्रतीक है। धन तो धोखा दे सकता है, देता ही है। लेकिन धर्म कभी किसी को धोखा नहीं देता। धर्म तो मौका देता है परमात्मा होने का। आपकी आत्मा को जानने और पहचानने का। धन दगा है और धर्म सगा है। धन धोका है और धर्म मौका है। धन बला है और धर्म कला है। धर्म बला नहीं, वह तो जीने की कला है। जो धर्म को 'बला' कहते हैं समझो वह 'पगला' है।

धर्म का बुनियादी प्रश्न, स्वर्ग-नर्क है या नहीं? यह नहीं है। परमात्मा है या नहीं? यह भी नहीं है। मोक्ष है या नहीं? यह भी नहीं है, तो फिर क्या है? धर्म का बुनियादी प्रश्न है 'मैं कौन हूँ' तुम कौन हो, क्या तुम्हें पता है? तुम्हारा नाम क्या है, क्या तुम्हें पता है? यह जो ज्ञानचंद्र है, कमल कुमार है, फूलचन्द्र है यह तो 'पुकारू नाम' है दिया गया नाम है, ऊपर से थोपा गया नाम है, क्योंकि जब तुम पैदा हुए थे तो ज्ञानचन्द्र नाम लेकर पैदा थोड़ी हुए थे। और जब तुम मरोगे तो ज्ञानचन्द्र नाम लेकर थोड़ी न दूसरे गति में जाओगे धर्म का बुनियादी प्रश्न है 'मैं कौन हूँ' जीवन का बुनियादी सवाल है 'मैं कौन हूँ' यह जान लेना। जो स्वयं को अपने आप को जान लेता है उसे फिर और कुछ जानना शेष नहीं रहता।

लेकिन दुर्भाग्य है मानव समाज का, व्यक्ति दुनिया की खबर तो रखता है, लेकिन अपने आप से जीवन के अन्तिम समय तक अजनबी बना रहता है। विश्व का परिचय रखने वाला अपनी आत्मा से अपरिचित बना रहता है। मरने से पहले 'मैं कौन हूँ' यह जान लेना यदि जान लिया तो जन्म लेना सार्थक हो जाएगा। और यदि 'मैं कौन हूँ' यह नहीं जान पाया तो समझना व्यर्थ जिए। दुनिया में जितने भी महापुरुष हैं, चाहे वह महावीर हो, बुद्ध हो, पैगम्बर हो, राम हो, कृष्ण हो सभी ने स्वयं को पहचानने पर जोर दिया है। धर्म का सार ही यह है स्वयं को जान लेना।

धर्म और विज्ञान में यही तो फर्क है कि धर्म एक को जानने पर जोर देता है जबकि विज्ञान अनेक को जानने पर जोर देता है। धर्म मूल को पकड़ता है और विज्ञान शाखा, प्रशाखा, फूल-पत्तियों को पकड़ता है। धर्म मूल को, जड़ को, केन्द्र को, एक को पकड़ता है, तभी कैवल्य को उपलब्ध हो जाता है। धर्म एक स्वयं को जानकर भी ज्ञानी हो जाता है और विज्ञान अनेक (ब्रह्माण्ड) को जानकर भी अज्ञानी बना रहता है। भगवान महावीर स्वामी कहते हैं, स्वयं को जानना है। जीवन में यदि कुछ मूल्यवान है तो वह स्वयं का मूल्य। स्वयं की सत्ता से बढ़कर और कोई सत्ता नहीं है। जो उसे पा लेता है वह सब कुछ पा लेता है और जो उसे खो देता है वह सब कुछ खो देता है। एक बात और ख्याल रखने जैसी है यदि स्वयं को, अपने अस्तित्व को खो कर भी तुमने सारे जगत का वैभव पा भी लिया तो समझना कि तुमने बहुत महंगा सौदा किया है। तो 'मैं कौन हूँ'? जीवन का चिराग बुझे इससे पूर्व यह जान लेना आवश्यक है।

मुल्ला नसरुद्दीन नगर का प्रसिद्ध वकील था। एक दिन वह अदालत से घर लौट रहा था। घर के सामने बच्चे खेल रहे थे। मुल्ला नसरुद्दीन ने बच्चों से पूछा, बच्चों, क्या तुम लोग अब्राहिम लिंकन के बारे में जानते हो? बच्चों ने कहा नहीं अंकल! हम तो लिंकन के विषय में कुछ नहीं जानते। मुल्ला ने कहा, तुम क्या जानोगे। दिन भर घर ही में पड़े रहते हो, कभी बाहर घूमो तो पता चले। बच्चे बेचारे कुछ नहीं बोले। दूसरे दिन जब मुल्ला नसरुद्दीन अदालत से घर आ रहा था, तो सामने बच्चों को खेलते देखा। उसने पूछा बच्चों क्या तुम जार्ज पंचम के बारे में जानते हो? बच्चों ने कहा- नहीं अंकल, हम तो नहीं जानते। मुल्ला ने कहा- तुम क्या जानोगे, दिन भर घर में पड़े रहते हो कभी बाहर घूमो तो पता चले। बच्चे बेचारे चुप। करें तो करें भी क्या। तीसरे दिन पुनः मुल्ला ने पूछा- बच्चों। क्या तुम महारानी विक्टोरिया के बारे में जानते हो? बच्चों ने कहा- नहीं अंकल, हम तो नहीं जानते। मुल्ला ने कहा- तुम क्या जानोगे, दिन भर घर में पड़े रहते हो कभी बाहर घूमो तो पता चले। बच्चे परेशान। बच्चों ने सोचा यह तो रोज-रोज का सिर दर्द हो गया। इसका समाधान करना चाहिए। चौथे दिन मुल्ला नसरुद्दीन फिर कोर्ट से लौट रहा था। बच्चे खेल रहे थे। मुल्ला बच्चों से कोई प्रश्न पूछे इससे पहले ही बच्चों ने मुल्ला नसरुद्दीन से पूछ लिया- अंकलजी, अंकलजी! आप क्या रामू के बारे में जानते हैं? मुल्ला ने कहा- नहीं मैं तो रामू के बारे में कुछ नहीं जानता। तो बच्चों ने कहा- आप क्या जानोगे, दिन भर बाहर ही घूमते रहते हो, कभी घर में भी रहो तो पता चले कि यह कौन है और तुम्हारे जाने के बाद घर में क्या करता है। तो 'मैं कौन हूँ?' यह पता कब चलेगा। जब अपने घर में ठहरोगे। केन्द्र पर लौट कर आओगे। 'अप्पा अप्पम्मि रओ?' अपने में गहरे उतर जाओगे, तब पता चलेगा। स्वभाव में पहुँच कर ही स्वयं को पाया जा सकता है। महावीर स्वामी कहते हैं : बाहर बहुत भटक लिए, बाह्य जगत की यात्राएँ बहुत हो गई, अब अन्तर्यात्रा जरूरी है। अपने अन्तर्तम की ओर देखना कि दामन कितना पाक-साफ है।

आजकल युवापीढ़ी में नशे की लत बढ़ती जा रही है। बीड़ी, सिगरेट, तम्बाखू, गुटका, भांग, चरस, अफीम, शराब आदि इन नशीले पदार्थों के सेवन से नई पीढ़ी मानसिक विकृतियों की शिकार होती जा रही है। नशा मौत है, आज स्वयं की, कल परिवार की परसों राष्ट्र की। नशा केवल दुर्दशा ही नहीं करता है, वह जीवन की दिशा को भी विदिशा में परिवर्तित कर देता है। पता है आपके बच्चे क्या खा रहे हैं? आज 'चुटकी' खा रहे हैं, 'चुटकी' भर कर खा रहे हैं कल 'चुल्लु' भर खायेंगे और आपको सतायेंगे, आज चुटकी खा रहे हैं। कल आपकी चुटकी लेंगे तो मजा आएगा। 'दिल-लगी' वाह आज 'दिल्लगी' खायेंगे तो क्या कल 'दिल' के रोग से बच पाएँगे? 'मनचली' आज मनचली खायेगा, तो क्या कल मनचला नहीं बन जाएगा। पापिन्स, जेम्स, लिओ, चुम्मा-चुम्मा, स्वाद, आंवला, स्वाद खजूर और पता नहीं क्या-क्या खा रहा है तुम्हारा बेटा, तुलसी, काका, हेमामा-लिनी, बादशाह, गुरू पता नहीं कौन-कौन से गुटका गुटक रहे हो तुम। 'गुरू' गुरु को खा रहे हो अब भला तुम ही बताओ जीवन शुरू कैसे हो सकता है। तुम्हारा मुख, मुख न रहकर 'म्युनिसीपैलिटी' का डिब्बा हो गया, गांव का 'कचरा घर' हो गया, 'लेटर-बाक्स' हो गया जो हमेशा मुँह खोले खड़ा है। ध्यान रखोः मुख, मुख है, शरीर में मुख्य है। मुख की शुद्धी होगी तो ही मन शुद्ध हो सकता है। मुख शुद्धी नहीं, तो मन शुद्धि नहीं।

बीड़ी जो की मौत की सीढ़ी है। सिगरेट जो की मीठा जहर है। लोग सिगरेट पीते हैं। मुझे समझ नहीं आता कि आखिर सिगरेट में है क्या, ऐसा जो कि लोग इतने चाव से पीते हैं? मैंने पूछा एक युवक से- तुम सिगरेट क्यों पीते हो? उसका उत्तर था- आनंद आता है। अब तुम्हीं बताओ, धुएं को अन्दर खींचने में और बाहर निकालने में क्या आनंद है। धुएं का आनंद से क्या संबंध है? आनंद का संबंध तो आत्मा से, अन्तरात्मा से है। अन्तर्तम से है। मैंने उस युवक से कहा- फिर एक काम करो। तुम सिगरेट पीते हो, सिगरेट का कश खींचते हो, धुआं अन्दर खींचते हो, अब एक काम और करो, जो धुंआ अन्दर खींचा है उसे बाहर निकालने की अपेक्षा गले के नीचे उतार लो तो ज्यादा आनंद आ जाएगा। युवक ने कहा- ऐसा नहीं हो सकता। मैंने कहा- क्यों? उसने कहा- ऐसा करना तो खतरे से खाली नहीं। मैंने कहा- तो सुन लो, अगर ऐसा करना खतरे से खाली नहीं तो वैसा करना भी खतरे से खाली नहीं है। पता है आपको, एक सिगरेट पीने से पांच मिनट की आयु कम होती है। एक बात का ख्याल और रखना, दुनिया में यदि किसी चीज को खींचा जाए तो वह बड़ी होती है, लेकिन सिगरेट इसका अपवाद है। सिगरेट को जितना खींचो (कश लेते समय) उतनी कम होती है। यह संकेत है कि ज्यों-ज्यों सिगरेट कम हो रही है, तुम्हारी आयु भी कम हो रही है। और सिगरेट क्या है? सिगरेट कागज में लपटी हुई तम्बाखू है। जिसके एक तरफ धुआँ होता है और दूसरी तरफ बेवकूफ। मेरे कहने का कुल मतलब इतना है कि व्यसन तुम्हारे आंतरिक जीवन को खोखला बना देता है। नशा मुक्त जीवन ही दुःख मुक्ति का मार्ग है। पहले आदमी शराब पीता है। फिर शराब आदमी को पीने लगती है। आदमी तो एक बार ही शराब पीता है, लेकिन शराब जीवन भर आदमी को पीती है। शराब और कबाब, सुरा और सुन्दरी के शौकीन लोग जीवन के अन्तिम क्षणों में कुत्ते की मौत मरते हैं। और मैं नहीं चाहता कि तुम कुत्ते की मौत मरो। मैं तो चाहता हूँ कि तुम इज्जत से जियो और इज्जत से मरो। और इसके लिए तुम्हें व्यसन-मुक्त जीवन जीने का संकल्प करना होगा। अपने आदर्शों को राम-कृष्ण, बुद्ध, महावीर के अमृत उपदेशों को व्यवहारिक जीवन में उतारना होगा।

धर्म निषेधात्मक नहीं है, धर्म विधायक है। मैं तुम से नहीं कहता कि तुम क्रोध छोड़ दो। मैं कहता हूँ, करुणा को जन्म दो। मैं नहीं कहता कि तुम मदिरालय मत जाओ। मैं कहता हूँ, मन्दिर जाओ, सत्संग में जाओ। मैं नहीं कहता कि तुम रात्रि भोजन त्याग कर दो। मैं कहता हूँ, दिन में खाओ। मैं नहीं कहता कि तुम धन-दौलत छोड़ दो। मैं कहता हूँ कि भीतर भी एक धन-दौलत है। उसे खोज लो, तो धर्म विधायक है। सकारात्मक है। मुझे पता है जिस दिन तुम्हें भीतर का धन मिल जाएगा, भीतर की दौलत दिख जाएगी, अन्तरंग की सुगंध आ जाएगी, उस दिन बाहर की धन-दौलत अपने आप ही छूट जाएगी। जैसे किसी को हीरे-मोती मिल जाए तो कंकर-पत्थर अपने आप छूट जाते हैं वैसे ही जिसे अन्तरंग की संपदा मिल जाती है तो बाह्य संपदाएँ स्वयं छूट जाती है। तुम भी आत्म सम्राट बनो, अपने मालिक बनो, यही मेरी हार्दिक आकांक्षा है।

❖❖❖

क्रोध को जीतो, क्योंकि ....

➤ संकलन-कमल कुमार जैन, मेहतवाड़ा

- *क्रोध- यह पूर्व का तप क्षण भर में भस्म कर देता है*
- *क्रोध- यह जलती हुई धुआँ रहित अग्नि है।*
- *क्रोध- यह चित्त में परिताप पैदा करता है।*
- *क्रोध- यह वैर व विरोध को बढ़ाता है।*
- *क्रोध- यह आत्मा की शुभगति का नाश करता है।*
- *क्रोध- यह व्रतों का नाश करने वाला है।*
- *क्रोध- यह आत्मिक स्वभाव से विचलित करता है।*
- *क्रोध- यह परस्पर मैत्री का नाश करता है।*

❖❖❖

सुपर साइन्टिस्ट : महावीर

➤ मुनिश्री १०८ प्रज्ञासागरजी महाराज

प्रभु महावीर को हुए आज करीब २५९३ वर्ष हो चुके हैं। उन्होंने अपनी ३० वर्ष की अल्पावस्था में प्रव्रज्या को धारण कर १२ वर्ष अहर्निश कठोरतम साधना की। अपनी दुरूह साधना के बल पर उन्होंने ४२ वर्ष की उम्र में केवल ज्ञानमय दिव्य ज्योति को प्राप्त किया। पश्चात् प्रभु ने दिव्य ज्ञान को प्राप्त कर मंगलमय उपदेश दिए। वे उपदेश प्रभु की समकालीन परिस्थितियों के ही समाधान नहीं थे, अपितु वर्तमान की विकटतम समस्याओं का भी श्रेष्ठतम समाधान हैं।

सम्प्रति, यद्यपि विज्ञान ने कम्प्यूटर का निर्माण करके मनुष्य के अस्तित्व को बौना कर दिया है और धर्म के नाम पर होने वाले बाह्य क्रियाकाण्डों, अत्याचारों, उन्मादकारी प्रवृत्तियों के विरुद्ध मानव मात्र को संघर्षशील बना दिया है और मनुष्य की आवश्यकता के विरुद्ध 'आविष्कार कर आविष्कार को आवश्यकता की जननी बना' विषय सुख/इन्द्रिय सुख के क्षेत्र का विस्तार कर दिया है। और आपस में राष्ट्रों की दूरियाँ कम कर दी हैं। फिर भी समूची मानव जाति दुःखी और क्लान्त है। कारण कि आपसी दूरियाँ कम करने वाले विज्ञान ने मन की दूरियाँ बढ़ा दी है।

सम्प्रति, मनुष्य जातिवाद, समाजवाद, अलगाववाद, रंगभेद, मनभेद, मतभेद, भुखमरी, दहेज प्रथा आदि सामाजिक कुण्ठाओं से ग्रस्त है ऐसी स्थिति में वह अपने परिचित परिजनों के बीच रहते हुए भी अपरिचित/अजनबी/पराया दूसरा बना हुआ है। इन सबसे मुक्ति का एक ही उपाय है, प्रभु महावीर के सदुपदेशों का अनुकरण, अनुसरण। उच्चारण की बजाय आचरण।

प्रभु महावीर ने जो भी कहा, अपने आचरण के माध्यम से कहा। क्योंकि वे कलम की अपेक्षा कदम पर ज्यादा विश्वास रखते थे। उनकी जीवन चर्या और चर्चा एक थी कोई फर्क नहीं था। प्रभु का समूचा जीवन हृदय था, कोई तर्क नहीं था। तर्क तो खोपड़ी की खुजलाहट मात्र है जो बुद्धि के चातुर्य से प्रगट होता है। परन्तु प्रभु तो हृदय की बात करते थे उन्होंने जो भी कहा आत्मसात करके/हृदयस्थ करके कहा। इसीलिए प्रभु अपने साधनाकाल में १० वर्ष तक मौन रहे। जब तक उन्हें पूर्ण ज्ञान केवल ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ, आत्म साक्षात्कार नहीं हुआ, तब तक वे अपने हर कदम के माध्यम से उपदेश देते थे। यही कारण है कि प्रभु मौन होने पर भी मुखर थे। इसलिए प्रभु ने मुख की बजाय मौन से ज्यादा उपदेश दिए। उच्चारण के बगैर आचरण से उपदेश दिए।

प्रभु की कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था इसलिए आज से हजारों वर्ष पूर्व कही जाने वाली उनकी दिव्य वाणी आज भी विज्ञान की कसौटी पर खरी उतर रही है। उनके द्वारा प्रतिपादित सत्य को आज तक कोई नकार न सका। अभी कुछ ही वर्षों पूर्व वैज्ञानिक श्री जगदीशचन्द्र 'बसु' ने अपने प्रयोगात्मक प्रेक्टिकल के द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया कि पेड़-पौधों में



भी हमारी ही तरह संवेदन की शक्ति मौजूद है। वे भी सुख-दुःख का अनुभव करते हैं। उन्हें किसी के द्वारा काटे पीटे जाने पर पीड़ा और खाद-पानी दिए जाने पर प्रसन्नता होती है। इसका मतलब उनमें भी चेतना विद्यमान हैं वे भी एक जीवात्मा है। यही बात प्रभु ने हजारों वर्ष पूर्व कही थी कि पेड़-पौधे भी एकेन्द्रिय स्थावर जीव होते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि प्रभु महावीर वैज्ञानिक ही नहीं परम वैज्ञानिक थे, साइन्टिस्ट ही नहीं 'सुपर साइन्टिस्ट' थे।

प्रभु महावीर ने अपनी परम वैज्ञानिक दृष्टि से कहा, जो व्यवहार तुम्हें अप्रिय हो वैसा दूसरों के साथ कदापि मत करो। यदि तुम्हें दूध पसन्द है तो दूसरों को भी दूध पिलाओ यदि तुममें दूध पिलाने का सामर्थ्य नहीं है तो उसे विष पिलाने का भी तुम्हें अधिकार नहीं है। यदि आप किसी को जीवन नहीं दे सकते, तो किसी का जीवन छीन भी नहीं सकते।

इसीलिए तो प्रभु महावीर ने कहा था- 'तुम जिओ औरों को जीने दो।' यदि तुम जीना पसन्द करते हो तो संसार का प्रत्येक प्राणी भी जीना पसन्द करता है। जैसे हमारे अन्दर जीव है वैसे ही अन्य प्राणियों के अन्दर जीव विद्यमान है। यदि हम अपनी दैहिक सुख-सुविधाओं के लिए अन्य प्राणियों को प्राणविहिन करते हैं तो यह धार्मिक ही नहीं, शासनिक, प्रशासनिक, सामाजिक और व्यक्तिक अपराध है। महापाप है। चाहे वो कत्ल या हत्या हो, परिवार नियोजन या भ्रूण हत्या हो, ये सब कुकृत्य प्रभु महावीर की दृष्टि में हिंसा ही है। प्रभु महावीर द्वारा उद्घोषित 'जियो और जीने दो' का सूत्र अहिंसा का सिंहनाद है।

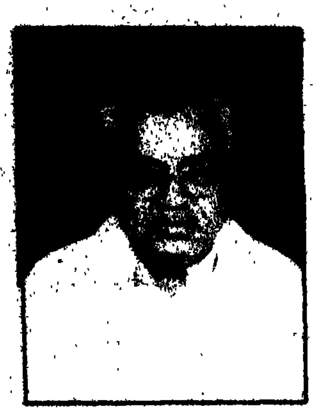
ये अहिंसा ही सद्कर्म है। अहिंसा ही धर्म है, अहिंसा ही धर्म का मर्म है। इसी अहिंसा के माध्यम से विनाश की कगार पर खड़े इस विश्व को बचाया जा सकता है, अन्यथा एक दिन हिंसा का दावानल इसे अपने आक्रोश में समाहित कर लेगा और हम देखेंगे अपनी आँखों से हिंसा का वीभत्स तांडव। इस तांडव को देखने के पूर्व ही हम माँ अहिंसा की गोदी में बैठकर किलकारियाँ भर लें। और प्रभु महावीर के अमृत उपदेशों का अमृतपान कर लें।

श्री चौबीसी वेदी एवं मूर्ति के दानदाताओं के नाम

- सेजमलजी चम्पालालजी जैन, भंवरा.................................श्री आदिनाथ भगवान
- मनोहरलालजी छोगमलजी सेठिया, आष्टा.................................श्री अजितनाथजी
- अमरमलजी सेजमलजी सेठिया, आष्टा.................................श्री संभवनाथजी
- बाबूलालजी राजमलजी जैन, गवाखेड़ा.................................श्री अभिनंदजी
- लाभमलजी फूलचंदजी सेठिया, बम्बई.................................श्री सुमतनाथजी
- सुमनचन्दजी मिट्ठूलालजी, भोपाल.................................श्री पदमप्रभुजी
- बाबूलालजी हंसराजजी, हराजखेड़ी.................................श्री सुपार्श्वनाथजी
- निर्मलकुमारजी मन्नूलालजी श्रीमोड़, आष्टा.................................श्री चंद्रप्रभु भगवान
- बसंतीलालजी नंदिमलजी जैन, आष्टा.................................श्री पुष्पदंतजी
- मूलचन्दजी छोगमलजी (जादूगर) आष्टा.................................श्री शीतलनाथजी
- फूलचंदजी नन्नूमलजी जैन, आष्टा.................................श्री श्रेयासनाथजी
- सूरजमलजी हंसराजजी, हराजखेड़ी.................................श्री वासुपुज्यजी
- राजमलजी रतनलालजी सेठी, आष्टा.................................श्री विमलनाथजी
- अशोककुमारजी लाभमलजी श्रीमोड़, आष्टा.................................श्री अनंतनाथजी
- ताराचन्दजी हमीरमलजी, आष्टा.................................श्री धर्मनाथजी
- दीपचन्दजी छोगमलजी श्रीमोड़, आष्टा.................................श्री शांतिनाथजी
- बाबूलालजी कुंवरलालजी जैन, भंवरा.................................श्री कुंथुनाथजी
- मनोहरलालजी राजमलजी जैन, लसूड़ियावाले.................................श्री अरहनाथजी
- सेजमलजी छोगमलजी जैन, आष्टा.................................श्री मल्लिनाथजी
- अनूपकुमारजी केशरीमलजी जैन, आष्टा.................................मुनि सुव्रतनाथजी
- सुहागमलजी सेजमलजी सेठिया, आष्टा.................................श्री नमीनाथजी
- पं. कन्हैयालालजी नारे, बम्बई.................................श्री नेमीनाथजी
- अशोक कुमारजी फूलचंदजी कासलीवाल आष्टा.................................श्री पार्श्वनाथजी
- भंवरलालजी प्यारेलालजी, शुजालपुर मंडी.................................श्री महावीरजी

काँच की रचनायें एवं अन्य कार्य के दानदाताओं की सूची

नाम	रचना का नाम
श्रीमती किरणबाई ध.प. श्री निर्मलकुमार श्रीमोड़, आष्टा	श्री सम्मेद शिखरजी
श्री नेमचन्द जी गोपालमल जी बाजल, आष्टा	श्री पावापुरजी
श्री दि.जैन महिला मंडल, आष्टा	श्री सोनागिरजी
श्री लाभमल जी सेठिया, बम्बई	श्री गिरनारजी
श्री कैलाशचंद जी केसरीमल जी, आष्टा	श्री श्रवणबेलगोला जी
श्री अशोककुमार-अनिलकुमार जी श्रीमोड़, आष्टा	श्री समवशरणजी
श्रीमती सुगनबाई ध.प. श्री दीपचंद जी श्रीमोड़, आष्टा	श्री चंपापुरजी
श्री घेवरमलजी सेजमलजी सेठिया, आष्टा	श्री बड़वानीजी
श्रीमती शक्करबाई ध.प. श्री मन्नुलालजी बेरछावालार	श्री मुक्तागिरजी
श्री मिश्रीलालजी प्यारेलालजी, मेहतवाड़ा	श्री षटलेश्या
श्री अनिलकुमारजी (महावीर उपहार गृह), आष्टा	सीताजी की अग्नि परीक्षा
श्री कल्याणमलजी मिश्रीलालजी बड़जात्या, आष्टा	श्री सिद्धवरकुट
श्री डॉ. मगन जैन, आष्टा	भरत चक्रवर्ती के पुत्रों का वैराग्य
श्री बाबूलालजी जीतमल जी, आष्टा	भरत बाहुबली युद्ध
श्री घेवरमलजी ADI किला, आष्टा	श्री महावीरजी
श्रीमती सरला ध.प. श्री सुरेशचंद्र जी सिंघई, आष्टा	श्री संसार बिंदु
श्री सूरजमलजी हंसराज जी हराजखेड़ीवाले, आष्टा	कमठ का उपसर्ग
श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री नरेन्द्रकुमार श्रीमोड़, आष्टा	वेदी के सामने का खंबा इंद्र सहित
श्रीमती वर्षा जैन ध.प. श्री सुरेन्द्रकुमार श्रीमोड़, आष्टा	वेदी के सामने का खंबा इंद्र सहित
श्री दिगम्बर जैन महिला मंडल, आष्टा	त्रिमूर्ति वेदी के सामने का खंबा
श्री शीलचंद जी जैन दूधडेरी वाले, आष्टा	वेदी के साइड का बड़ा खंबा
श्रीमती बसंतीबाई ध.प. श्री मिठुलाल जी बुधवारा, आष्टा	श्री नंदीश्वर द्वीप
श्रीमती मधुबाला ध.प. श्री लक्ष्मीकांत जी जवेरी, बम्बई	माता के सोलह स्वप्न



सम्यक्त्व चारित्र की विशेषता

➤ वाणी भूषण, प्रतिष्ठाचार्य
पंडित पारसमल जैन शास्त्री

अनादिकाल से यह प्राणी मिथ्यात्व रूपी अन्धकार में भटक-कर संसार में परिभ्रमण कर रहा है। आत्महित का लक्ष्य नहीं होने से मिथ्यात्व के उदय में वह कुदेव, कुगुरु कुशास्त्र की उपासना में लीन है। आचार्यों ने इस जन्म-मरणादि रूप संसार की सतत् सन्तति का विच्छेद करने के लिए निश्चय सम्यक्-दर्शन की उत्पत्ति को कारण भूत, वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी गुणों से युक्त अरिहन्त देव, उनके द्वारा प्रणीत अनेकान्तमय आगम शास्त्र एवं विषयों की आशा, आरम्भ, परिग्रह रहित ज्ञान-ध्यान-तप में रत ऐसे निर्ग्रथ गुरू के यथार्थ श्रद्धान रूप व्यवहार सम्यक् दर्शन साध्य हैं जो कि निश्चय सम्यक् दर्शन के लिए साधन हैं। निश्चय सम्यक साध्य है, इसी बात को स्पष्ट करते हुए क्रमशः हमारे परम पूज्य आचार्यों ने स्पष्ट कहा है कि :

विषयाशा वशातीतो निरारम्भो परिग्रहः ।
ज्ञान ध्यान तपोरक्तः तपस्वी सः प्रशस्यता।।
(रतनकाण्ड श्रावकाचार- स्वामी समन्तभद्राचार्य)
मोहतिमिराय हरणे दर्शन लाभाव वाम संज्ञानः।
राग द्वेष निवृत्यै चरणं प्रतिपद्यते साधुः।।
मोक्ष मार्गस्य नेत्तारं भेत्तारं कर्मभूभृताम।
ज्ञातांर विश्व तत्वानाम् वंदे तद्गुण लब्धये।।
(तत्वार्थ सूत्र- आचार्य उमास्वामी)

न्याय शास्त्र का नियम है कि 'साधनात् साध्य विज्ञानम् इति अनुमानम्' साधन के बिना साध्य की उत्पत्ति सम्भव नहीं होती इसलिए व्यवहार सम्यक् दर्शन प्रथम उपादेय है किन्तु निश्चय सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र आत्मा का निज गुण है, फिर मिथ्यात्व के उदय व ज्ञानावरणादि कर्मों के पाने के लिए सम्यक् चारित्र का अवलम्बन् आवश्यक है।

यहाँ चारित्र के साथ सम्यक् विशेषण इसलिए दिया है, क्योंकि वह दर्शन व ज्ञान का उद्बोधक है, जहाँ सम्यक् चारित्र हो वहाँ सम्यक् दर्शन ज्ञान होगा ही होगा। सम्यक् चारित्र के दो भेद हैं- (१) देश व्रत (२) महाव्रत।

(१) देश चारित्र- अप्रत्याख्यानावरण कषाय के अभाव में पंचम देश व्रत नाम के गुण स्थान में प्रतिमाधारी श्रावकों को ही होता है।

(२) सकल चारित्र- प्रत्याख्यानावरण कषाय के अभाव में छट्ठे प्रमन्तविरत नामक के गुण स्थान से निर्ग्रंथ मुनिराज के लिए होता है।

इस सम्यक् चारित्र का इतना महत्व है कि इसके बिना मात्र दर्शन ज्ञान के होने पर सर्वार्थ सिद्धि के देव तैतीस सागर पर्यन्त तत्व चर्चा में निमग्न रहते हुए भी मुक्ति को प्राप्त नहीं होते। आदिनाथ तीर्थंकर से लेकर महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर जन्म से सम्यक् दर्शन और तीन ज्ञान के धारी होने पर भी उन्हें केवल ज्ञान व मोक्ष को प्राप्त करने के लिए सम्यक् चारित्र को अंगीकार करना ही पड़ा। अतएव यह निश्चित है कि सम्यक् दर्शन ज्ञान की चर्चा से मुक्ति नहीं होती है। हाँ, सम्यक् दर्शन का अपना अस्तित्व है, इसके बिना सम्यक् चारित्र समीचीनता को नहीं पाता, किन्तु मात्र सम्यक् दर्शन के गीत गाने से मुक्ति महल में प्रवेश नहीं किया जा सकता है। पंचमकाल में महान् आचार्य कुन्द-कुन्द, अकलंक देव, विद्यानन्द, पूज्यपाद आदि आचार्यों ने भी पाक्षिक, नैष्ठिक, साधक, गृहस्थों को सम्यक् चारित्र का उपदेश दिया और स्वयं भी व्रत, समिति, गुप्ति रूप चारित्र को धारण किया। उनकी महान् आत्मायें आज भी हमारे लिए आदर्श है। इसलिए सम्यक् चारित्र मुक्ति को प्राप्त करने के लिए आचरणीय है। इस चारित्र को प्राप्त करने के लिए बड़े-बड़े इन्द्र भी तरसते हैं, किन्तु क्या करें नरक, देव, तिर्यंच गति में यह चारित्र हो ही नहीं सकता। किन्हीं-किन्हीं तिर्यंचों को देश व्रत रूप चारित्र होता है, सिर्फ मनुष्य गति ही एक ऐसी गति है जिसमें सकल व्रत रूप चारित्र हो सकता है और यदि मनुष्य यह सुन्दर नरभव पाकर भी हेय, उपादेय का ज्ञान नहीं, मांसादि, अभक्ष्य पदार्थ, रात्रि भोजन, अनछने पानी का त्याग नहीं, नित्य देव दर्शन का नियम नहीं, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील सेवन व परिग्रह संचय में बहुमूल्य समय को खो रहा है। जिसके न कोई व्रत है, ना ही संयम तथापि वह अपने आपको ज्ञानी समझते हुए सम्यक् चारित्र की परिकर रूप सामग्री का संयम् तप आदि को जड़ की क्रिया मानता है, द्रव्य रूप अणुव्रत महाव्रत को मात्र विकार मानता है अथवा विषय भोग आदि आत्मा नहीं, शरीर करता है, इत्यादि

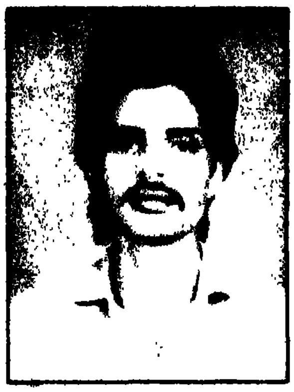
रूप में जिनागम के विरुद्ध कहने व आचरण करने वाला कदापि सम्यक् दृष्टि नहीं हो सकता चाहे वह कितना ही तत्व-चर्चा करने वाला हो। उसकी गणना मिथ्यादृष्टि में ही होगी वह कुन्द-कुन्द देव व अन्य गुरु आर्ष ग्रन्थों का समागम पाकर भी रतनत्रय की उपलब्धि को प्राप्त नहीं होगा।

यह नरभव पाकर भी यदि चारित्र धारण नहीं किया तो हमारा जीवन उन पशु तुल्य है जो कि सिर्फ पेट भरना जानते हैं 'चारित्र हीनेन पशुभिः तुल्यं' किन्तु इस मनुष्य भव को पाकर जिन्होंने चारित्र को धारण किया, वे धन्य हैं वे मुनिराज जो कि इस मनुष्य भव को सार्थक बनाने के लिए इस विषय काल में भी चारित्र धारण किए हुए हैं और वे इसके फल को अवश्य प्राप्त करेंगे।

प्रत्येक मानव का कर्तव्य है कि वह इस महारत्न सम्यक् चारित्र को शक्ति प्रमाण धारण करे और 'चारित्रं खलु धम्मो' इस सूत्र को सार्थक कर सके तो अच्छा होगा। नहीं तो उतने का श्रद्धान तो अवश्य करे।

➤ महावीर नगर, भोपाल (म.प्र.)

❖❖❖



वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैन धर्म का योगदान

➤ निर्मल कुमार जैन (शिक्षक)

शांति एवं सहअस्तित्व के प्रभावशाली वक्तव्यों के पीछे भी विश्व के राष्ट्रों में असुरक्षा की भावना व्याप्त है। विकासशील राष्ट्र भी अपनी एकता व अखण्डता की रक्षा करने में अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं है। ऐसा क्यों? प्रश्न उठने के साथ ही साथ यह बात स्पष्ट नजर आती है कि जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के पाठ को विस्मरण कर डाला है। केवल यह नारा, नारे के रूप में विश्व के देशों के पास रह गया है। ऐसी स्थिति में वैज्ञानिक उन्नति एवं भौतिकवाद की ओर अग्रसर विश्व सुखी नहीं है। सभी दूर भुखमरी, भ्रष्टाचार, तोड़-फोड़ एवं हिंसा का बोलबाला है। इन परिस्थितियों को दूर करने में जैन धर्म के सिद्धान्त आज भी समर्थ हैं। मेरी तो मान्यता यहाँ तक प्रगाढ़ रूप से है कि सत्य, अहिंसा, अचौर्य, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य के सिद्धान्तों का अनुसरण कर विश्व के राष्ट्र न केवल अपनी उन्नति कर सकते हैं बल्कि जीव मात्र को सुखी एवं शांतिपूर्ण जीवन दे सकते हैं।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त एक बार तो 'अहिंसा परमो धर्मः', 'जीयो और जीने दो' के सिद्धांत को अपने जीवन मे तथा संसार के प्राणी मात्र में निहार कर देखो तो समस्त राष्ट्रों को अपनी सुरक्षा की चिन्ता कभी नहीं रहेगी और न ही अस्त्र-शस्त्रों की दौड़ में धन का अपव्यय ही होगा और जो धन इस प्रकार बचता है उस धन का उपयोग मानवता के सर्वांगीण विकास के लिए किया जा सकेगा। साथ ही साथ 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्' का उपयोग अपने जीवन के साथ-साथ दूसरे प्राणियों के जीवन के साथ करके देखें और हमारी जो दूसरे प्राणियों के साथ 'शठे शाठ्यम् समाचरेत्' का भाव अनादिकाल से प्रवृत्ति में विराजमान है उसे अनिवार्य रूप से त्यागना होगा। यह दोनों ऊपर संस्कृत की उक्तियों का सन्दर्भ देकर जो बात लिखी है वह जैन धर्म की नहीं है वह केवल प्राणीमात्र की भावना मात्र है। यदि हम अपने जीवन में अनेकांत एवं स्याद्वाद का अनुपालन लें, तो आवश्यक रूप से करना स्वीकार कर लेने से व्यर्थ के विवादों का अन्त होगा 'सह अस्तित्व के अनुपालन से हिंसा समाप्त होगी।'

आज वर्तमान में यह देखने में आता है कि मनुष्य की आवश्यकताएँ इतनी बढ़-चढ़ कर हो चुकी हैं जिनकी पूर्ति होना सम्भव नहीं है। इसलिए मानव भविष्य के सुख हेतु भ्रष्टाचार और अनैतिकता को प्रोत्साहन देकर दुःखी होता है, फिर भी उसकी अंध श्रद्धा है कि मैं सुखी हूँ।

इस प्रकार मानव वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैन धर्म के अचूक सिद्धान्तों का पालन करे तो न केवल मनुष्य बल्कि प्राणी मात्र शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेगा।

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदम्,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वम्।
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मान् विद् धातु देवः॥

➤ ग्राम-कोटरी, तहसील- आष्टा

अहिंसा की गंगा

➤ श्रीपाल जैन 'दिवा'

करुणा जिसके हृदय में हिलोरें ले रही हो, दया जिसके चेहरे से टपकी पड़ रही हो, स्वस्थ तन में मन-वचन-कर्म की त्रिवेणी तीर्थ बन गई हो, अचौर्य के सद्भावों ने निश्छलता एवं निर्मलता की गंगा-यमुना बहा दी हो, जीवन यापन के अतिरिक्त परिग्रह-जीवन से हवा हो गया हो, ऐसे व्यक्ति को जैन कहते हैं। वह अहिंसा शासन की स्थापना में निर्भय होकर गर्दन कटाने का साहस भी रखता है। चारों ओर हिंसा का बोल-बाला हो वहाँ भी वह मौन नहीं रह सकता। घोर अन्याय उसका मुँह बन्द नहीं कर सकता। अत्याचार सहन करने का पाप वह ढो नहीं सकता। हिंसा के ताण्डव को निष्प्राण-सा खड़ा रहकर देख नहीं सकता। फिर वह मूक निरीह-निर्दोष पशु-पक्षियों की बर्बर हत्याओं के द्वारा खून की नदियों को बरदाश्त कैसे करे? जिस देश में दूध-घी की नदियाँ बहना चाहिए, वहाँ की धरती को खून से रंगा जा रहा है। पशुओं के कत्ल से खून के ड्रम भरे जाते हैं। उस रक्त को टॉनिक बनाने वाली अंग्रेजी दवाई बनाने वाली कम्पनियों को भेजा जाता है। कम्पनी उस रक्त से हीमोग्लोबिन आदि टॉनिक बनाती है, जिसे अधिकांश लोग टॉनिक के रूप में धड़ल्ले से पीते हैं।

हमारे यहाँ आयुर्वेद व प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में जड़ी - बूटियां, छाल - पत्तियों, फल - फूलों, सब्जी- भाजी, पानी-मिट्टी आदि शाकाहारी पदार्थों से उपचार किया जाता है। ये उपचार पद्धतियाँ पूर्ण रूप से अहिंसा पर आधारित हैं। भारतीय संस्कृति व भारतीय जीवन शैली सद्भावों व सुख-शांति का अमृत बरसाती हैं। समता भाव से 'जीओ और जीने दो' के अमृत संदेश को चरितार्थ करती है। हम ही हमारी इस धरोहर की उपेक्षा करते हैं। पश्चिम की हिंसक उपचार पद्धति पर बिना विचार किये चलने लगते हैं। समझने और जागने का समय आ गया है।

पशुओं के खुर - सींग व आँतों को उबालकर बनाये जिलेटिन का उपयोग धड़ल्ले से हो रहा है। जिलेटिन से केप्सूल के खोल बनाए जाते हैं। केप्सूल के साथ हम जिलेटिन का भी भक्षण करते हैं जो पशु उत्पाद है। जितना अधिक जिलेटिन का उपयोग किया जावेगा उसकी माँग बढ़ेगी और माँग की पूर्ति पशुओं के कत्ल के द्वारा ही होगी। इसी तरह जिलेटिन व एल्बोमिन (रक्तांश) का प्रयोग बाजारू आइसक्रीम में भी होता है। वह भी अभक्ष्य है। इसका प्रचलन तीव्र गति से बढ़ा है। इसकी पूर्ति के लिए भी पशु-हत्या आवश्यक हो जाती है।

कोसे व रेशम की साड़ियों का उत्पादन भी हजारों-करोड़ों ककूनों को उबाले जाने पर हत्या का प्रतिफल है। रेशम के कीड़ों के ऊपर खोल-सा उन्हीं के द्वारा बनाया जाता है। इसे ककून कहा जाता है। इन ककूनों को उबालने पर रेशम की उपलब्धि होती है। रेशम की साड़ी पहिनी बहन के शरीर पर हजारों रेशम के कीड़ों की उबली लाशें होती हैं। जितना रेशम व कोसा के कपड़े का हम व्यवहार करेंगे उतनी उसकी माँग बढ़ेगी। माँग-पूर्ति के इस खेल में पशुओं का कत्लेआम होता रहेगा। कीड़े-मकोड़ों को उबाला व तला जाता रहेगा। यह हिंसा का हाहाकार मनुष्य को चैन से रहने नहीं देगा। इससे मुक्ति के उपाय भी हैं। दवाइयों में पशु-उत्पादों का प्रयोग बन्द किया जाना चाहिए। खान-पान पहनावे में अहिंसक पद्धति से बनाये पदार्थ वस्त्रादि का प्रयोग करना चाहिए। शाकाहार का प्रचार-प्रसार जन-जन तक हो इसके भागीरथ प्रयत्न होना चाहिए। इस प्रयत्न से हृदय परिवर्तन की स्थिति बने तो पशुओं का कटना बन्द हो।

भारत सरकार की माँस-चमड़ा निर्यात नीति पर रोक लगे। माँस-चमड़े के व्यापार को राज्याश्रय मिलना बन्द हो। जितने भी शासकीय होटल हैं उनमें माँस-मछली-अंडे के व्यंजन परोसना बन्द किये जावें। रेल व हवाई जहाजों में भी केवल शाकाहारी व्यंजनों की व्यवस्था रखी जावे। दूरदर्शन से अंडे का प्रचार बन्द करवाया जावे। माँस-मछली के व्यंजनों को बनाने की विधियों का दूरदर्शन से प्रसारण बन्द करवाया जावे। इस प्रकार से शाकाहारी एवं अहिंसक लोगों की भावना को ठेस लगती है यह उनके शाकाहारी बच्चों को माँसाहार की ओर प्रवृत्त करने का षड्यंत्र भी है। माँसाहार से एसिडीटी, लकवा, चर्मरोग, अल्सर, कैंसर, उच्च रक्तचाप, हार्ट अटैक आदि जान लेवा बीमारियाँ होती हैं। यह तथ्य वैज्ञानिक लोग सिद्ध कर चुके हैं। फिर ऐसी आहार पद्धति का प्रचार-प्रसार

क्यों? देश के नागरिकों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करना कब बन्द होगा। उसके खिलाफ आपको खड़ा होना पड़ेगा। अहिंसा की रक्षा के हित में अपने प्राण भी बलिदान करना पड़ सकते हैं। उसके लिए भी तैयार रहना है। इस देश से मुर्गा-माँस उद्योग, सुअर माँस उद्योग, गो-माँस उद्योग, मत्स्योद्योग इन सारे उद्योगों को विदा करना पड़ेगा। अण्डा उद्योग को भी लुढ़काना पड़ेगा। इन उद्योगों के स्थान पर दुग्ध शालाओं की स्थापना, सब्जी-फल उद्यानों का लगाना, जड़ी-बूटियाँ उगाना, मसाले उगाना, सूखे मेवों की खेती इन उद्योगों की स्थापना की जानी चाहिए। अतीत में इन्हीं के बल पर भारत सोने की चिड़िया कहलाता था।

पेड़-पौधों से पर्यावरण शुद्ध रहता है। अहिंसक पद्धति से जीवन-यापन समाज में, विश्व में सुख-शांतिकारक भी होता है। पर अफसोस! हिंसा पर उतारू रावण राज्य स्थापित करने वाली सरकार को कैसे समझाया जाये? सरकार केवल आन्दोलन की भाषा समझती है। आन्दोलन के द्वारा ही वह आन्दोलित होती है, सुनती है। हमारी अहिंसा की आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज समझी जा रही है। अतः अब हमें नींद हराम करने वाले नगाड़े बजाने पड़ेंगे। इसके लिए कायरता का खोल उतारकर फेंकना पड़ेगा। निर्भय होकर अहिंसा के झंडे के नीचे संगठित होना पड़ेगा। धर्म भेद भूल-कर सभी शाकाहारी व अहिंसावादियों को एक होना पड़ेगा। संख्या का गणित बड़ा प्रभावशाली होता है। संख्या से (वोट से) यह हिंसक सरकार भी डरती है और किसी से नहीं डरती। भारत के हम सब अहिंसक नागरिक धर्मभेद भूलकर अहिंसा के झंडे के नीचे एक होकर विरोध की आवाज लगा दें तो सरकार की नींद हराम हो सकती है। सरकार झुक सकती है। सरकार की नींद हराम होगी तभी हिंसा का हाहा-कार बन्द होगा अन्यथा नहीं।

दिल्ली में एक आन्दोलन-- एक करोड़ जनमानस की भीड़ हिंसा के विरोध में हो। देखो फिर संख्या का कमाल। सरकार की कुर्सी हिलने लगे तो सरकार हमारी बात सुने और मानवता के हित के अनुकूल निर्णय लेने को विवश हो। देश में बूचड़खाने, पोल्ट्री प्रोसेस प्लांट, पौल्ट्री फार्म, पोर्क प्रोसेस प्लांट, हेचरीज आदि सब हत्यारे घर बन्द करवाये जा सकते हैं। दमदारी हम में होना चाहिए। निवेदन में एकता की शक्ति का तेज जरूरी है। उद्योग और प्लांट कहकर जो शब्द-जाल का छल किया जा रहा है, उसे एकता की शक्ति का तेज भस्म कर सकता है। बशर्ते आप निर्भय होकर सच्चे अहिंसक की भांति संकल्प कर लें तो सरकार स्वयं हमारे साथ अहिंसा की जय बोलने लगेगी। पर मर्दानगी आपको धारण करना पड़ेगी। स्मरण रहे- अहिंसा का नाटक करने वाले किसी सरकार को झुका नहीं पायेंगे न अहिंसा की रक्षा कर पायेंगे। सब कुछ ठीक हो सकता है। बाहर अहिंसा की गंगा बहेगी यदि आपके अंदर पहले बहे तो।

'अहिंसा धर्म की जय'

शाकाहार सदन,
एल.आई.जी. ७५, केशर कुंज
हर्षवर्द्धन नगर, भोपाल-३ (म.प्र.)
फोन - ५७१११९

" नेकी से विमुख हो
जाना और बदी करना
निःसंदेह बुरा है मगर
सामने हंसकर बोलना और
पीठ पीछे चुगलखोरी करना
उससे भी बुरा है "

प्रतिष्ठा - पंच कल्याणक - गजरथ संदर्भ एक परिचय

➤ अशोक कुमार जैन (एम.ए.)

प्रतिष्ठा क्या है ?

शिल्पकार के कर कौशल द्वारा पाषाणादि का जिनेन्द्र भगवान की मूर्ति रूप में परिणमन होते हुए भी, तब तक पूज्यता का प्रादुर्भाव नहीं होता है, जब तक प्रतिष्ठा शास्त्रानुसार यथाविधि प्राण प्रतिष्ठा संस्कार न किए जावें। अर्थात् प्रतिमादिक में जिनेन्द्र भगवान की स्थापना ही प्रतिष्ठा है।

प्रतिष्ठा का महत्व -

प्रतिष्ठित प्रतिमा साधक की दृष्टि में पाषाणादि की मूर्ति न रहकर साक्षात जिनेन्द्र भगवान की प्रति कृति बन जाती है। सम्मुख पहुँचते ही उसके भावों में निर्मल प्रवाह होता है कि मैं साक्षात जिनेन्द्र भगवान की शरण में हूँ। और दर्शन मात्र से जिनेन्द्र पदवी का बन्ध होता है।

प्रतिष्ठा की सार्थकता-

जिनेन्द्र भगवान की पंच कल्याणक प्रतिष्ठा विधि में सम्पूर्ण विश्व का कल्याण निहित है। प्रतिष्ठा कार्य के द्वारा पूजन के परिणामों में अवर्णनीय निर्मलता तथा विशुद्धता की वृद्धि, पाप कर्मों का क्षय तथा पुण्य की प्राप्ति होती है।

पंच कल्याणक क्या है?

जिस प्रकार जगत में द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव तथा भवात्मक संसार परिभ्रमण स्वरूप पाँच प्रकार के अकल्याणक है। उसी प्रकार से जीव के संसार परिभ्रमण से मुक्त होने के पाँच कल्याणक है। इनके पूर्ण होने पर आत्मा परमात्मा बन जाती है। आत्मा से परमात्मा की यात्रा ही पंच कल्याणक है। मार्ग में पाँच ठहराव है।

(१) गर्भ कल्याणक- जिनेन्द्र भगवान का माता के गर्भ में आना ही गर्भ कल्याणक है।

(२) जन्म कल्याणक- जगत के जीवों को सुख और शान्ति प्रदान करने वाला, उन देवाधिदेव के जन्मोत्सव का पुण्य अवसर जन्म कल्याणक कहलाता है।

(३) तप कल्याणक- विवेक जागृत होने पर इन्द्रियों की दासता को त्याग कर मोहनीय कर्मों को जीतने के लिए दीक्षा लेकर किया गया उद्यम तप कल्याणक है।

(४) ज्ञान कल्याणक- आत्म शक्ति के द्वारा ज्ञानावरण मोहनीय आदि कर्म शत्रुओं का नाश होने पर सर्वज्ञता रूप आत्म प्रकाश होता है। अर्थात् केवल्य की प्राप्ति होती है उसे केवल ज्ञान कल्याणक कहते हैं।

(५) मोक्ष कल्याणक- केवल्य ज्ञान की अवस्था में जिनेन्द्र भगवान अपनी दिव्य वाणी के द्वारा संसार के समस्त जीवों को अविनाशी सुख तथा शांति का मार्ग बतलाते हैं। इसके पश्चात् उत्कृष्ठ ध्यान के प्रसाद से अघातिया कर्मों का अंत कर सिद्ध भगवान बनते हैं। इसी मोक्ष पुरुषार्थ को मोक्ष या निर्वाण कल्याणक कहते हैं।

आत्मा-परमात्मा के मिलन का सम्पूर्ण विज्ञान है- पंच कल्याणक

प्रतिष्ठाएँ कब से ?

प्रतिष्ठाओं की परम्परा का सूत्रपात सर्वप्रथम आदि ब्रह्मा भ. ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र चक्रवर्ती भरत ने किया था उन्होंने सिद्ध क्षेत्र कैलाश पर ७२ जिन बिम्ब प्रतिष्ठा विधि को प्रकाश में लाने की महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की थी।

अकृत्रिम चैतालयों की प्रतिष्ठा नहीं होती है क्योंकि वे अनादि निधन स्वतः प्रतिष्ठित हैं किन्तु कृत्रिम चैत्यालयों की प्रतिष्ठा होना आगम प्रमाण परम्परा है।

भरत ने भगवान बाहुबली की मूर्ति भी स्थापित की थी तब से आज तक अनेक प्रतिष्ठाएँ हो चुकी हैं।

प्रतिष्ठा कैसी हो ?

प्रतिष्ठा व्यवसाय न बनें।

ऊपरी दिखावटी अथवा टीम टाम से होने वाली प्रतिष्ठा सच्चे अर्थों में प्रतिष्ठा नहीं है कल्याणकों के दृश्य दिखाने का कौशल एवं आंतरिक विधि के प्रति सजगता नितान्त आवश्यक है।

समाज को प्रतिष्ठाओं को अर्थ उपार्जन का माध्यम नहीं बनाकर प्रतिष्ठाओं में आंतरिक मन्त्रोच्चारण विधि के महत्व पर ध्यान देकर प्रतिष्ठा को महत्वपूर्ण बनायें।

आजकल पंच कल्याणक प्रतिष्ठाओं में पंच कल्याणक विधि के दृश्यों को गौण कर प्रतिष्ठा मंच पर मनोरंजन के रूप में नृत्य, गीत, फिल्म प्रदर्शन जैसे मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जो कि सर्वथा अवांछनीय है।

दर्शकों को अनावश्यक कार्यक्रमों से प्रभावित कर उनसे रुपये बटोरने का, एवं उपार्जित धनराशि का अपव्यय प्रतिष्ठा कार्यक्रम की बदनामी एवं अपयश का कारण न बने।

तीर्थंकरों के परम पावन जीवन चरित्र और दिव्य सन्देश उजागर रूप जिन शासन की महिमा बढ़ाने के उद्देश्य से प्रतिष्ठा होना नितान्त आवश्यक है।

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव की सार्थकता :

पंच कल्याणक से उपार्जित धन राशि का सदुपयोग निम्नानुसार हो तभी पंच कल्याणक की सार्थकता सिद्ध हो सकती है -

- धन राशि को पाठशालाओं के हित में लगाया जाए।
- संगीत, सिलाई, बुनाई कक्षाएँ चलाई जाएं।
- पुस्तकालय वाचनालय खोले जाएं।
- उच्च कोटि के ग्रन्थ/विशेषांक खरीदकर लोगों को अच्छा साहित्य पढ़ने की भावना जागृत की जाये।
- अतिदीन लोगों को प्रति वर्ष धन्धे मुहैया कराए जायें।
- नए मन्दिरों की रचना से पूर्व पुराने मन्दिरों का सही-सही जीर्णोद्धार कराया जावे।
- निराश्रित/अनाथ बच्चों के लिए संरक्षण गृह खोले जायें।
- निराश्रित महिलाओं के विवाह सम्पन्न कराए जायें।
- अध्यात्म के भाव जगाकर निराश्रितों को उदासीन आश्रमों में रखा जाए।
- बुद्धिजीवियों को सम्मानित करके उन्हें पुरस्कृत किया जाए।
- निर्धनों की बेटियों की शादी सम्पन्न कराने में सहयोग दिया जाये।

पंच कल्याणकों से अर्जित धन का उपयोग उक्त ढंग से बहुआयामी होगा तभी सामान्य जन लाभान्वित हो सकेगा।

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा क्यों ?

चतुर्थ काल (सतयुग) में साक्षात् स्वयं तीर्थंकर जन्म धारण करते थे, साक्षात् इन्द्रदेव और मानव कल्याणक संस्कार मनाते थे और उनके माध्यम से अखिल विश्व का कल्याण होता था।

अब यह कलिकाल पंचमकाल है, इसमें तीर्थंकर जन्म धारण नहीं करते, देव तथा इन्द्र भी नहीं आते। अतः स्वाभाविक कल्याणक महोत्सव का साक्षात्कार नहीं है।

इस कारण आज मानव अज्ञानता से अधर्म, अन्याय, अत्याचार की ओर प्रवृत्त हो गया है।

परन्तु मानव, बुद्धिजीवी, विवेकी, पुरुषार्थी और सुन्दर है, इसको भी प्राचीन तीर्थंकरों के पावन चरित्र तथा उनके अवर्णनीय महत्व को ज्ञातकर अपने कल्याण करने की तीव्र आकांक्षा आत्मा में उदित हुई, उसकी पूर्ति करने के लिए मावन ने तीर्थंकरों के स्थान पर तदनुरूप मूर्ति का निर्माण कर उसमें स्थापना निक्षेप की पद्धति से तीर्थंकर की स्थापना की और शास्त्रोक्त विधि से पंच कल्याणक प्रतिष्ठा द्वारा उनको तीर्थंकर जैसा महापुरुष मान लिया और उनके गुणों की नित्य भजन, पूजन, मनन और कीर्तन करने से मानव शक्ति के अनुसार अधर्म, अज्ञान को छोड़कर आत्महित में प्रवृत्त होने लगा है।

प्रतिष्ठा का महत्व-

प्रतिष्ठा का यही महत्व है कि मूर्ति में मूर्तिमान का स्मरण कर आत्म कल्याण करना है। यह पाषाण की पूजन नहीं है किन्तु स्थापना की दृष्टि से मूर्ति का माध्यम लेकर परम लक्ष्य मूर्तिमान तीर्थंकर के गुणों का अर्चन-मनन करना है।

मानव से महामानव बनने की यात्रा है, पंच कल्याणक

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा का फल

विधि पूर्वक तथा पवित्रता के साथ परिपूर्ण होने वाला, पंच कल्याणक महोत्सव व्यक्ति तथा समाज के लिए समृद्धि, शान्ति तथा आनन्दकारक होता है।

निष्कपट भाव से तीर्थंकर भगवान की आराधना करने वालों के समस्त दुःख दूर होते हैं, तथा कामनाओं की स्वतः पूर्ति होती है।

विश्व शान्तिदायी, दयामयी पंच कल्याणक रूप महायश में मन, वचन, काय से सहयोग देने वाले तथा इससे आनन्दित होने वाले जीवों को महान पुण्य का बंध होता है।

गजरथ क्या है ?

पंच कल्याणक महोत्सव के सानंद समाप्त होने पर जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा को रथ पर विराजित करते हैं। उस रथ को हाथी द्वारा खींचा जाता है, इस प्रकार गजों द्वारा सम्पन्न होने वाली प्रतिष्ठा को गजरथ प्रतिष्ठा कहते हैं। जिनेन्द्र पंच कल्याणक महोत्सव में गजरथ द्वारा पंच कल्याणक मंडप की सात प्रदक्षिणा की जाती हैं। जिस समय गज युगल अथवा और भी अधिक संख्या युक्त गज समुदाय मस्त, झूमता तथा झूलता हुआ रथ को खींचता है तब वह अवर्णनीय दृश्य दर्शकों के चित्त को अपूर्व आनन्द प्रदान करता है। गजरथ की सात परिक्रमा होने पर ही प्रतिष्ठाकारक अपने को कृतार्थ अनुभव करते हैं।

त्रिखण्ड गजरथ में कौन कहाँ ?

गजरथ के तीन खण्ड होते हैं -

प्रथम खण्ड- श्री जिनेन्द्र प्रभु की प्रतिमा के साथ प्रतिष्ठाचार्य एवं प्रमुख यज्ञ नायक, सौधर्म इन्द्र, तीर्थंकर के माता-पिता और चार इन्द्र होते हैं।

द्वितीय खण्ड- शेष इन्द्र और इन्द्राणियाँ

तृतीय खण्ड- पंच कल्याणक प्रतिष्ठाकारक के परिवार-जन व अन्य इन्द्रादिक बैठते हैं।

जनपद सदस्य, आष्टा

❖❖❖

सुख की खोज

➤ रोहिताश जैन

एक व्यक्ति सम्पन्न होते हुए भी अपने को दुःखी महसूस करता था। उसने अधिक वैभव होने पर ही सुख की कल्पना की थी। वह मनोकामना पूर्ति हेतु एक सिद्ध पुरुष के पास गया।

सन्त ने कहा- तुम सर्वसुखी मनुष्य का कुर्ता मांग कर लाओ उसे मन्त्रित कर दूंगा। उसे पहनते ही तुम सर्व-सुखी हो जाओगे।

वह व्यक्ति दर-दर भटकता रहा, पर किसी ने भी अपने को सर्व सुखी नहीं बताया। मुद्दतों तक ठोकरें खाने पर वह निराश घर लौटने लगा।

रास्ते में एक अलमस्त मिला। उसने अपने को सर्व सुखी कहा। पर जब कुर्ता मांगा तो उसने कहा- मैं तो मुद्दतों से नंगा ही रहता हूँ। कुर्ता मेरे पास कहाँ है। वह समझ गया कि सुख एक मानसिक स्थिति है। उसका धन होने न होने से कोई सम्बन्ध नहीं।

गौ धन, गज धन, बाज धन और रतन धन खान।

जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।।

➤ ग्राम- कोठरी,
तहसील-आष्टा
जिला-सीहोर

आष्टा नगर में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव की सार्थकता तब है जब हम...

➤ श्रीमती इन्द्रा जैन, आष्टा

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव समिति के कार्यकर्ताओं की पवित्र भावना है कि

- पंच कल्याणक महोत्सव में हजारों-लाखों साधर्मी जन आवें, इसमें सफलता नहीं है

क्योंकि वह तो आयेंगे ही ?

- वह सुन्दर ढंग से ठहरेंगे और भोजन करेंगे और जल पियेंगे, इसमें सफलता नहीं है

क्योंकि वह तो करेंगे ही

- हजारों-लाखों रुपए एकत्रित हो, इसमें सफलता नहीं है

क्योंकि वह तो होंगे ही

- दर्शन, पूजन, वन्दन, भजन, भक्ति, प्रवचन तथा एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम हों इसमें सफलता नहीं है

क्योंकि वह तो होंगे ही

<u>सार्थकता -</u>

हमारी सफलता तो इस बात में है कि यह सब कार्यक्रम देखकर हमारा अंतरंग एवं बहिरंग जीवन कितना सुधरा है तथा राग, द्वेष, कषाय का मैल कितना कम हुआ है या और दुगना होकर बढ़ गया है तथा कितना सादगीपूर्ण, व्यवहारिक, संयमित जीवन हमने यहाँ आकर जीना प्रारम्भ किया है। हम पंच कल्याणक महोत्सव की सफलता तब मानेंगे जब हम पंच कल्याणक में जाकर कुछ अन्तर में स्व का निर्णय करके आयेंगे तथा कुछ न कुछ संयम साधना की प्रतिज्ञाएं लेकर जायेंगे।

<u>संकल्प-</u>

आइये हम संकल्प करें पंच कल्याणक में आकर हमें क्या-क्या करना है तथा भावी जीवन कैसे बिताना है। आइये हम दृढ़ संकल्पित होकर संकल्प लें कि :

- रात्रि भोजन कभी नहीं करेंगे और सदैव जल छानकर ही काम में लेंगे। दिन में एक या दो बार ही शान्ति पूर्वक शुद्ध भोजन ग्रहण करेंगे।
- प्रतिदिन देव दर्शन आदि छह आवश्यक नियमों का पालन करेंगे।
- आजीवन या वर्ष/माह में, अष्टमी चतुर्दशी एवं अष्टान्हिका, दस लक्षण आदि विशिष्ट पर्वों में ब्रह्मचर्य से रहेंगे।
- लिपस्टिक आदि का प्रयोग नहीं करेंगे।
- रेशम के वस्त्र साड़ी आदि का प्रयोग नहीं करेंगे।
- अष्टमी, चतुर्दशी एवं विशिष्ट पर्व के दिनों में हरी सब्जियों का उपयोग नहीं करेंगे।
- २२ प्रकार के अभक्ष्य का त्याग करेंगे।
- प्रतिदिन सोते, उठते समय नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करेंगे।
- प्रत्येक प्राणी मात्र के प्रति दया, समता, सद्‌भावना तथा धर्म वात्सल्य का भाव रखेंगे।
- कभी किसी के प्रति कषाय, राग, द्वेष, छल, कपट आदि के भाव नहीं करेंगे।

❖❖❖

मानव से महामानव बनने की यात्रा है
पंच कल्याणक

***

पंच शब्द का अर्थ है
न्याय करने वाला मानव



वेद पुराणों में जैन धर्म

➤ राजमल जैन, कोठरी

वेदों में ऋषियों द्वारा जैन तीर्थंकरों (मुख्य प्रचारकों) के नामों का उल्लेख मिलता है, वेद के जिन मंत्रों में जैन तीर्थंकरों के नाम (अर्हत) का उल्लेख है।

अर्हन् बिभर्षि सायकानि धन्वा हंत्रिषकं जयतं विश्वरूपम्।
अर्हन्निदं दय से विश्वभम्वं न वा ओ जीयो रुद्रत्वदस्ति।।

-ऋग्वेद अ. २ सूक्त ३३ वर्ग १७

हे अर्हन्! तुम वस्तु स्वरूप धर्म रूपी बाणों को उपदेश रूपी धनुष को, तथा आत्मचतुष्टय रूप आभूषणों को धारण किए हो। हे अर्हत्! आप संसार के सब प्राणियों पर दया करते हो और हे कामादिक को जलाने वाले! आपके समान कोई रुद्र नहीं है।

वेदों में इस युग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव, ७वें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ, २२वे तीर्थंकर अरिष्टनेमि के नामों का उल्लेख व उनकी स्तुति भी पाई जाती है जैसे-

ऋषभं मा समासानां सपत्नानां विषासहितम्।
हन्तारं शत्रूर्णा कृधि विराजं गोपितं गवाम्

- ऋग्वेद

इस मंत्र में ऋषभ को देवता मानकर उनकी स्तुति की गई

'ॐ सुपार्श्वमिन्द्र ह्वे'

- यजुर्वेद

इसमें ७ वें तीर्थंकर सुपार्श्व नाथजी का नामोल्लेख करके उन्हें आहुति प्रदान की गई है।

इसी प्रकार २२वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथजी की स्तुति व पूजा की है।

वाजस्य नु प्रसवआवभूवे मा च विश्वा भूवनानि सर्वतः
स नेमि राजा परियाति विद्वान प्रजां पुष्टि व वर्ध्दयमानों अस्मै स्वाहा।

- यजुर्वेद अ. ९ मंत्र २५

इस मंत्र में नेमिनाथजी की स्तुति करते हुए उन्हें आहुति प्रदान की गई है।

वेदों के सिवाय भारत के पाणिति आदि वैयाकरणों से भी बहुत प्राचीन वैयाकरण शाकटायन अपने उणादि, प्रकरण के एक सूत्र में 'जिन' शब्द प्रयोग किया और ये 'जिन' ही जैन धर्म के सर्वेसर्वा हैं।

इसके अतिरिक्त मोहन जोदड़ो सिन्ध की खुदाई में जो सील व सिक्के प्राप्त हुए हैं उनमें से कुछ पर नमो जिनेश्वराय लिखा है तथा कुछ सिक्कों पर ध्यानस्थ भगवान ऋषभदेव की मूर्तियाँ व उनके नीचे बैल का चिन्ह मौजूद है। जो जैन शास्त्रों में वर्णित लक्षणों से पूर्ण रूप में मिलता है और जिसे पुरातत्वज्ञ विद्वान प्रोफेसर चन्दा ने ऋषभदेव की मूर्ति स्वीकार किया है।

सभी पुरातज्ञों ने उसे ५००० वर्ष प्राचीन स्वीकार किया है इससे सिद्ध है कि अब से ५००० वर्ष से भी पूर्व जैन धर्म का प्रकाश यहाँ फैला हुआ था।

सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक प्रकांड विद्वान श्री विसेंट स्मिथ साहब लिखते हैं-

'इन खोजों से लिखित जैन परम्परा का अत्यधिक समर्थन हुआ है वे इस बात के स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण हैं कि जैन धर्म प्राचीन है। ईसवी सन् के प्रारम्भ में भी चौबीस तीर्थंकर अपने-अपने चिन्ह सहित निश्चय पूर्वक माने जाते थे।'

सिद्धान्त महोदधि, महामहोपाध्याय, डा. सतीशचन्द्र एम.ए., पी.एच.डी., प्रिंसीपाल संस्कृत कालेज कलकत्ता ने लिखा है - जैनमत तब से प्रचलित हुआ जब से संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ मुझे इसमें किसी प्रकार उज्र नहीं है कि जैन धर्म वेदान्तादि दर्शनों से पूर्व का है।

विद्यानिधि, वेद तीर्थ, धर्मभूषण पं. श्री विरुपाक्ष वडियर एम.ए. प्रोफेसर संस्कृत कालेज, इन्दौर ने चित्रमय जगत में लिखा है-

'ईर्ष्या द्वेष के कारण धर्म प्रचार को रोकने वाली विपत्ति के रहते हुए भी जैन शासन कभी पराजित नहीं हुआ सर्वत्र

विजयी होता रहा है। अरहंत देव साक्षात परमेश्वर स्वरूप है। इसके प्रमाण भी आर्य ग्रन्थों में पाए जाते हैं। अरहंत परमेश्वर का वर्णन वेदों मे भी पाया जाता है।'

भागवत पुराण के अनुसार-

ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक थे। भागवत पुराण के अलावा विष्णु पुराण, वायु पुराण, लिंग पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, मार्कण्डेय पुराण, अग्नि पुराण आदि में भी भगवान ऋषभदेव और उनके पिता आदि का वर्णन है जो जैन पुराण से मिलता है।

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ विद्वान, साहित्य रत्न, स्व. लाला कन्नोमल एम.ए. सेशन जज धौलपुर ने अपने एक लेख में लिखा था-

सभी लोग जानते हैं कि जैन धर्म के आदि तीर्थंकर श्री ऋषभ देव स्वामी हैं जिनका काल इतिहास परिधि से कहीं परे है।

ऐतिहासिक गवेषणा से मालूम होता है कि जैन धर्म की उत्पत्ति का कोई निश्चित काल नहीं है।

संसार प्रचलित विविध मत मतान्तरों एवं उनके इतिहास की गवेषणा करते हुए फ्रांस के प्रोफेसर श्री लुई रेनाक पी.एच.डी. पेरिस कहते हैं-

'नए धार्मिक आन्दोलन चलाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जैन धर्म में दुःखी दुनिया के हित के लिए सब कुछ मौजूद है। उसका ऐतिहासिक आधार भी सारभूत है। जैन धर्म ने ही पहिले पहिल अहिंसा का प्रचार किया। दूसरे धर्मों ने उसे वहाँ से लिया।'

जैन धर्म को विश्व धर्म प्रतिपादित करते हुए कलकत्ता यूनिवर्सिटी के वाइस चासंलर सुप्रसिद्ध धर्म और दर्शन शास्त्र के महान विद्वान डॉ. कालीदास नाग कहते हैं।

जैन धर्म किसी खास जाति या सम्प्रदाय का धर्म नहीं है, बल्कि यह अंतर्राष्ट्रीय सार्वभौमिक और लोकप्रिय कल्याण-कारक धर्म है। जैन तीर्थंकरों की महान आत्माओं ने संसार के राज्यों को जीतने की चिन्ता नहीं की- राज्यों को जीतना कोई कठिन नहीं बल्कि उनका ध्येय स्वयं पर (अपने विकारों पर) विजय प्राप्त करने का रहा। यही एक महान ध्येय है जिसमें मानव जीवन की सार्थकता का रहस्य छुपा हुआ है। लड़ाइयों में कुछ समय के लिए शत्रु दब जाता है, दुश्मनी का नाश नहीं होता। हिंसक युद्धों से संसार का कल्याण नहीं होता। यदि किसी ने आज महान परिवर्तन करके दिखाया है तो वह अहिंसा सिद्धान्त है। जिसकी खोज संसार की समस्त खोजों और उपलब्धियों से महान है।

मनुष्य का स्वभाव है कि नीचे की ओर जाना परन्तु जैन तीर्थंकरों ने प्रथम यह बताया कि मनुष्य को अहिंसा का सिद्धान्त ऊपर उठाता है।

उपर्युक्त सम्पूर्ण प्रमाणों तथा निष्पक्ष विद्वानों की गवेषणात्मक सम्मतियों से सिद्ध है कि जैन धर्म संसार के सम्पूर्ण धर्मों से स्वतंत्र समीचीन एवं प्राचीन है।

सच्चा श्रद्धान, सच्चा ज्ञान और सच्चा चरित्र ही मोक्ष मार्ग है

हमारे मित्र तीन प्रकार के होते हैं

हमसे प्रेम करने वाले

हमारी ओर उदासीन रहने वाले

हमसे नफरत करने वाले

अहिंसा से ही विश्व शान्ति सम्भव है

➤ वीरेन्द्रकुमार जैन 'विमल', आष्टा

आज समूचा विश्व महाविनाश की आशंका से भयाक्रांत है। पश्चिमी एशिया में धधक रही युद्ध की आग दावानल का रूप धारण करती जा रही है। हथियारों की घन-घनाहट और बमों की धांय-धांय के बीच मानवता सहमी हुई है। हमारे अपने देश की स्थिति भी इससे अलग नहीं। पंजाब, कश्मीर और पूर्वोत्तर प्रान्तों में इन्सानी खून को पानी की तरह बहाया जा रहा है। मानवीय संवेदना, आस्था और विवेक का एकदम अभाव सा हो गया है। इस शताब्दी के प्रारम्भ में विश्व की प्रज्ञा ने जिस सुन्दर विश्व की परिकल्पना की थी, शताब्दी के अन्त में वह कल्पना, चूर-चूर होती दिखाई दे रही है। यह शताब्दी विज्ञान के पराक्रम की थी, लेकिन वही पराक्रम अब सर्वनाश का कारण बनता नजर आ रहा है। आखिर ऐसा क्यों हुआ? इसलिए कि वैज्ञानिक प्रगति को हमने मूल्यों के साथ नहीं जोड़ा न आज हमारा जीवन सुरक्षित है और न ही अस्मिता।

बहुत अन्धेरा है, लेकिन आशाएँ टूटी नहीं है। हमारे पास आज भी विचार और दर्शन की ऐसी थाती है जिसमें पीड़ित मानवता का कवच बनने की शक्ति है। अहिंसा का शाश्वत महामन्त्र आज पुनः विश्व को शान्ति का सन्देश दे सकता है। आततायी हिंसा का सामना सिर्फ अहिंसा से ही किया जा सकता है। 'हिंसा' अविचार, अविवेक और अनास्था की परिणति है जबकि अहिंसा का मूलमंत्र विचार, विवेक और आस्था से उत्पन्न होता है।

आज विश्व में फैले विनाश के घटाटोप के बीच सिर्फ अहिंसा की जीवन पद्धति ही मानव समाज को सर्वनाश से बचा सकती है। अहिंसा का सिद्धान्त हमारे देश में एक प्रयोग सिद्ध होकर हजारों वर्षों से प्रतिष्ठित है। इसी सिद्धान्त की ध्वजा फहराते हुए भगवान महावीर ने 'जियो और जीने दो' का सुन्दर दर्शन दिया था। इस शताब्दी में महात्मा गांधी ने अहिंसा को मूलाधार बनाकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ संघर्ष किया और विजय पाई।

सिर्फ भारत ही नहीं अब तो दुनिया भर के लोग अहिंसा के सिद्धान्त को समझने की कोशिश करते हुए दिखाई दे रहे हैं। दक्षिण अफ्रीका के रंगभेदी शासक भी अहिंसा के समक्ष नत-मस्तक होते दिखाई दे रहे हैं। एशिया लातिन और अफ्रीका के गरीब राष्ट्र ही नहीं बल्कि यूरोप के समृद्ध देश भी युद्ध की विनाशकारी विभीषिका के खिलाफ अहिंसा का झंडा लहरा रहे हैं। खाड़ी युद्ध होने से पूर्व और बाद की स्थिति परिचायक है कि दुनिया की मानवता हिंसा की प्रवृत्ति और हथियारों के संचय के खिलाफ तेजी से जागृत होती जा रही है। अहिंसा का सिद्धान्त निहत्थे आदमी की आत्मिक शक्ति का सिद्धान्त है। मानवता तमाम मतभेदों से ऊपर उठकर समता, स्वतन्त्रता और बन्धुत्व के नव विश्व का निर्माण अपनी इसी (अहिंसारूपी) आत्मिक शक्ति के बल पर कर सकती है। इस शक्ति को पहले भगवान महावीर ने ही पहचाना इसलिए उन्होंने कहा था- 'अहिंसा परमोधर्म'आज जरूरत है इसी बात को फैलाने की। आज पूरे देश में अराजकता और हिंसा का वातावरण व्याप्त है। आज की पहली आवश्यकता है। मनुष्य की मानसिकता बदलने की। इसके लिए जरूरी है कि खान-पान की शुद्धता स्थापित की जाए। माँसाहार पर रोक लगाई जाए। हिंसा की प्रत्येक गतिविधि को अपराध घोषित किया जाए। जीवों के प्रति प्रेम और करूणा के भाव अहिंसा मार्ग पर चलते हुए प्रकट होते हैं।

सम्राट अशोक द्वारा कलिंग विजय के पश्चात् शानदार उत्सव मनाया जा रहा था। अशोक अपनी माता का बहुत सम्मान करते थे। माँ का विशेष आशीर्वाद प्राप्त करने उनके कक्ष में पहुँच कर अपना संक्षिप्त प्रयोजन प्रकट करते हैं और गर्व से कहते हैं- माँ! मैंने ढाई लाख शत्रुओं का वध कर कलिंग विजय प्राप्त की। राजमाता आशीर्वाद देती उसके पहले ही फूट-फूट कर रोने लगी व बोली- बेटा उन मारे गए ढाई लाख लोगों में एक तू भी होता तो मेरे एवं तेरे परिवार पर कैसी बीतती! जरा सोच! जिन माताओं के लाल चले गए, जिन सुहागिनों के सुहाग उजड़ गए तेरी विजय से उन निर्दोषों पर क्या गुजरी होगी? माता के रुदन से अशोक का दृष्टिकोण बदल गया। उत्सव रद्द कर अहिंसा के मार्ग पर चलने, उपदेश लेने बुद्ध की शरण में पहुँच गया। अशोक के पश्चात् कनिष्क ने भी अशोक का ही अनुकरण किया। अतः उन्हें इतिहास में अशोक द्वितीय की उपाधि दी गई। मुगल-काल के बादशाहों में अकबर को अपने समकक्ष शासकों की अपेक्षा अधिक ख्याति प्राप्त हुई और महान कहलाए क्योंकि उन्होंने भी अपने समय के अन्य शासकों की अपेक्षा अहिंसा का मार्ग अपनाया था।

अहिंसा का सच्चा अर्थ है अभय, शांति, प्रेम व हिल-मिल कर रहना। महावीर प्रभु ने संसार के समस्त प्राणियों को मानवता का संदेश दिया और विश्व मैत्री का सूत्र रखा, जिसके द्वारा कालान्तर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत को स्वतन्त्रता दिलाई, जिसके लिए हमारे देश के कई उग्र-वादी नेताओं ने प्रयत्न किया लेकिन वे सफल नहीं हुए और अन्त में सफलता, अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही मिली। सोना तो आखिर सोना है।

आज हिंसात्मक वातावरण से अबोध शिशुओं के मन में हिंसा वैमनस्यता व घृणा के बीज बोये जा रहे हैं। इससे पूर्व कि ये पुष्प (शिशु) पल्लिवित हो हमें महावीर के अहिंसावाद को अपनाना होगा। अगर हमने ऐसा नहीं किया तो निश्चय ही यह पृथ्वी व प्रकृति हिंसक कार्यों से कुपित हो जाएगी और हमारा धर्म और हमारी संस्कृति सभी हिंसा रूपी बाढ़ में बह जायेंगे।

अतः हमें चाहिए कि हम महावीरत्व को अपनाकर देश को अखण्ड व समृद्ध बनायें तथा विश्व शान्ति की सुरक्षा करें।

❖❖❖

संयम

➤ श्रीमती संगीता जैन, अलीपुर आष्टा

एक लकड़हारा अपनी गरीबी से अत्यन्त परेशान था। अगर उसे सुबह की रोटी मिल जाती तो शाम की नसीब नहीं होती। उसने अपनी गरीबी से छुटकारा पाने के लिए आत्म-हत्या करने की सोची और उसने सोचा कि गरीबी से छुट-कारा पाने का सबसे अच्छा उपाय है। मरने के विचार से घर से निकला और घने जंगल की ओर रवाना हुआ। जैसे ही जंगल में गया। उसने देखा कि एक पेड़ के नीचे एक नग्न मुनिराज बैठे हैं। लकड़हारा मुनिराज को देखकर आश्चर्य में पड़ गया और सोचने लगा कि मेरे पास तन ढकने के लिए कम से कम एक धोती तो है, इनके पास तो फटी लंगोटी भी नहीं है। आखिर ये दिन भर करते क्या है? क्या खाते, क्या पीते होंगे। क्यों न एक दिन इनके साथ रहकर इनकी दिनचर्या देखें। यह विचार करके लकड़हारा वहीं बैठ गया।

सूर्य आसमान में चढ़ने लगा। आहार का समय होने लगा। मुनिराज ने शुद्धि की और विधि लेकर आहार के लिए नगर की ओर चल पड़े। लकड़हारा भी मुनिराज के साथ हो गया। मुनिराज नगर में पहुँचे। नगर में सेठ-साहूकार आदि मुनिराज को पड़गाहने लगे। लकड़हारा विभिन्न दृश्य को देख-कर सोचने लगा कि यह मामला क्या है? एक नंगे व्यक्ति को सब अपने घर में क्यों बुला रहे हैं। वह चुपचाप इस दृश्य को देखता रहा। मुनिराज एक सेठ के यहाँ आहार लेकर जंगल की ओर रवाना हो गए। सेठाणी उस लकड़हारे को ब्रह्मचारी समझकर उसे आदर सहित भोजन कराते हैं। लकड़हारा भर पेट भोजन कर जंगल की ओर चला जाता है और मन ही मन सोचने लगता है। यह काम अच्छा है, काम-धाम कुछ करना नहीं और पेट भर भोजन कर अपना दिन व्यतीत करो। लकड़हारा मरने का विचार छोड़ कर मुनिराज के पास आकर बैठ गया।

किसी तरह एक दिन कटा, दूसरा दिन आया। सूर्य आसमान में चढ़ने लगा। पर मुनिराज तो ध्यानस्थ रहे। आहार को नहीं उठे, क्योंकि वे एक माह में एक बार आहार पर उठते थे। लकड़हारे ने देखा कि ये मुनिराज तो आहार को नहीं जा रहे। आंखें बन्द करके बैठे हैं। क्यों न मैं कपड़े उतार कर नग्न होकर भोजन को चला जाऊँ।

बस! फिर क्या था। उसने कपड़े उतारे मुनिराज का पिच्छी, कमण्डल उठाया और आहार को निकल पड़ा।

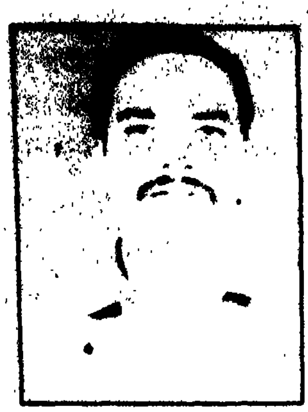
नगर के सभी लोगों ने उसे नव-दीक्षित मुनिराज समझ-कर भक्ति से पड़गाया और आहार करवाया। लकड़हारा वापस जंगल आया और पिच्छी, कमण्डल रखकर वापस धोती पह-नने को हुआ। तभी मुनिराज ने अपना ध्यान तोड़ा और अपने अवधिज्ञान से जानकर कहा- वत्स तुम्हारी आयु तीन दिन की शेष है, अपनी आत्मा का कल्याण करो और संयम को स्वीकार करो।

उस लकड़हारे ने मुनिराज की वाणी सुनकर तत्क्षण जैन दीक्षा ले ली और जीवन पर्यन्त अन्न, जल का त्याग कर दिया। संयम के साथ मुनिराज का मरण हुआ। अगले भव में वह सम्राट चन्द्रगुप्त हुए जो जैन धर्म के अन्तिम मुकुटबद्ध राजा थे।

❖❖❖

मन

➤ डी.पी. परमाल, उ.श्रे. शिक्षक



'पूर्ण आदर्श का प्रतिबिम्ब ही पवित्र विचार है। इस पवित्र विचार से ही सृष्टि का विकास हुआ है। इस विकास की शब्दों में व्याख्या ही दर्शन शास्त्र है'

मन विषयक सिद्धांत इस प्रकार है -

बाह्य जगत में,संसार में, मानव की इन्द्रियों को जो सुख होता है उसे वे अपनी मति बुद्धि सबका मेल मिलाकर कार्य करता है। इन्द्रियाँ सिर्फ जानकारी देती हैं काम करता है मन।

मन में सृजनात्मक शक्ति है। वह विचार करता है और निश्चय करता है। आंशिक अनुभव से पुराना अनुभव जाग उठता है। और मन मति तथा प्रज्ञा को प्रभावित करता है।

चेतना किसी से उत्पन्न नहीं होती है। मानव में चेतना का प्रवाह हो रहा है। मन स्वयं बडा शक्तिशाली है, वह आतंरिक चेतना से लाभ उठाता है मन की गति अबाध है। वह संकल्प करता है, कार्य करता है स्वयं उससे अनुभव प्राप्त करता है।

जेम्स की पुस्तक चार्ल्स डार्विन का सिद्धांत जो उन्होनें १८७३ में लिखी थी 'पशु तथा मनुष्य में भावना की अभिव्यक्ति' डारविन ने स्वयं लिखा था कि हरेक घटना का कारण होता है। शरीर के भिन्न अवयव जैसा व्यवहार करते है, उसी से शरीरधारी की भावना व्यक्त होती है पर इन अनुभवों का उपयोग आकस्मिक नहीं होता है, इनका घनिष्ट संबंध व्यक्ति के जीवन से होता है यदि वह सिद्धांत मान ले तो काम,क्रोध,मोह यह सब शरीर के अनुभवों से संबंधित है मन कहीं कुछ नहीं रह जाता है। पर डारविन अवयवों का उपयोग व्यक्ति के जीवन से संबंधित मानते है तब यह क्यों न मान लें कि शरीर के अवयव मनुष्य के मन की आज्ञा के अनुसार कार्य करते है।

संसार में जितने अनुभव संकलित करता है वे आत्मा में संचालित होते है और ये सब अनुभव मानव के मनोवैज्ञानिक जीवन की एकता स्थापित करते है। मानव की संवेदनशील इंद्रियों का ज्यों-ज्यों विकास होता जाता है, और उसके शरीर की शिराऐं ज्यों-ज्यों विकसित होती जाती है उन्हीं के साथ-साथ उनकी प्रारंभिक मानसिक क्रिया भी विकसित होती रहती है। उसकी संवेदनशीलता अनुभव संचित करती है जो देखता है,उससे प्राप्त करता है इस अनुभव दार्शनिक इसी एकीकरण को मन की वह तटस्थ अवस्था कहेगा जिनमें न राग है न द्वेष है। वह पूर्णत: संयत, अनुद्विग तथा बंधन मुक्त है।

'सिकन्दर के विजय अभियान की एक बडी उपलब्धि इन्ही सिद्धांत पर आश्रित थी। अत: शरीर की प्रत्येक क्रिया का संचालन में मन सहयोग करता है।'

धार्मिक आधार विषयक सिद्धांत :-

'मन मतंग माने नहीं,

जब लगि धको न खाय।

जैसे विधवा स्त्री,

गर्भ रहे पछताय।।

अर्थात मन इतना चंचल है कि वह जो भी दृश्य देखता है उसे प्राप्त करने के लिए लालायित हो जाता है। परंतु वह उस दृश्य,वस्तु को पा नहीं सकता और वृथा अपनी जान परेशानी में उलझा देता है। जब मन एक बार कोई कठिनाई में फँस जाता है तो फिर उससे दूर जाने की सोचता है,जब. तक जीवन लीला अंतिम सोपान की ओर पदार्पण कर गयी होती है।

सांसारिकता में न फँसने के लिए मनुष्य को अपने मन के लिए समझाना चाहिए जैसे कहा गया है-

'यह संसार मोह का दल-दल

इसमें मत फँस जाना।

चतुर नर मन को समझाना।।'

मन जहाँ जाने को उत्सुक हो ठीक उसकी विपरीत दिशा में विचार कर उस विपरीत दशा को ही यदि मनुष्य ग्रहण करें तो ईश्वर की अनुभूति साक्षात्कार,परमानन्द सहजता से प्राप्त हो सकता है। इसीलिए कहा गया है-

'मन के हारे हार है,

मन के जीते जीता।'

यदि मन में प्रबल इच्छा शक्ति हो तो दुनिया का कोई भी कार्य आसानी से किया जा सकता है, क्योंकि कार्य करने के पहले,उसकी भूमिका बनाना आवश्यक है। मन को अच्छा या बुरा बनाने में प्रतिदिन खाने वाले भोजन का विशेष महत्व है जैसे कहा गया है-'जैसा खाओं अन्न वैसा बने मन' इसलिए व्यक्ति को सत्वगुण युक्त भोजन करना चाहिए जिससे मन में नेक विचार आते है। नेक विचार आना ही संसार सागर पार करने की प्रथम सीढ़ी है। अर्थात ईश्वर प्राप्ति का प्रथम मार्ग है।

श्री राम चरित मानस में मन के संदर्भ में एक बहुत ही सुन्दर दृश्य अवतरित हुआ देखिए-

'मन महु तरक करै,कवि लगा

तेहि समय विभीषण जगा।

राम-राम तेहि सुमिरन कीन्हा

ह्रदय हरष कवि सज्जन चीन्हा।।'

जब हनुमानजी माता सीता का पता लेने लंका पहुँच जाते है तब लंका में प्रवेश करने के बाद उनके मन में नाना प्रकार के तर्क, विचार उत्पन्न होते है। संयोग से उसी समय विभीषणजी जग जाते है। यहाँ विभीषण का जागने से तात्पर्य श्री हनुमान के मन में जो निशारुपी नाना प्रकार के तर्क अपने अर्न्तमन में आ रहे थे वह नष्ट हो गये जब उन्होंने भगवान श्रीराम जी का नाम अपने श्रवनों से सुना फिर क्या था, उनके मन को प्रभु की शरण में ले जाने का रास्ता मिल गया। अतः उनके 'श्री हनुमान जी' के ह्रदय में विभीषण रुपी सज्जन समाहित हो गया, उन्होंने सज्जन अर्थात अच्छे मार्ग को पहचान लिया। फिर माता सीता का पता सहज ही में मिल गया।

यदि मनुष्य ठीक इसी प्रकार अपने मन को सन या अच्छे व्यक्तियों अच्छे कर्मों की और लगाएगा तो दुर्गम कार्य भी सहज हो जाते है।

हाथी हो तो महावती बुलालऊ,

दे दे अंकुश मुरकालाऊ,

लोहा हो तो लोहार बुलालाऊं,

दे दे घन कुटवा दऊँ।।

सोना हो तो सुनार बुलालाऊँ,

नाना आभूषण गणवादऊँ,

मन तोहे कौन जतन समझाऊँ।।

➤ शास्त्री स्मृ.वि.मंदिर
आष्टा

तीन आवश्यक बातें

➤ संकलन-सुनील कुमार श्रीमोड़, आष्टा

- **तीन की कामना करो**
  स्वास्थ्य, संतोष, मित्रता
- **तीन को नियम से करो**
  भजन, व्यायाम, भोजन
- **तीन के लिए प्रयत्न करो**
  स्वतन्त्रता, आत्म निर्भरता, प्रसन्नता
- **तीन को सदा मान दो**
  माता, पिता, गुरु
- **तीन से घृणा करो**
  निर्दयता, परनिंदा, अभिमान
- **तीन की सराहना करो**
  परिश्रम, समय की पाबंदी, सहनशीलता
- **तीन में दृढ़ रहो**
  साहस, प्रेम, सज्जनता
- **तीन पर नियंत्रण करो**
  क्रोध, व्यवहार, निंदा
- **तीन पर दया करो**
  दुर्घटनाग्रस्त, भटका यात्री, विधवा
- **तीन का संग छोड़ो**
  मिथ्यावादी, व्याभिचारी, जुआरी
- **तीन को ह्रदय से निकाल दो**
  राग, द्वेष, मोह
- **तीन की हँसी मत उड़ाओ**
  वृद्ध, पागल, अपंग
- **तीन की प्रशंसा करो**
  स्वाभिमानी, मधुर व्यवहारी, ईमानदारी
- **तीन से सदा बचो**
  हिंसा, झूठ, चोरी
- **तीन आँसुओं को पवित्र मानो**
  प्रेम के, करुणा के, समानुभूति के



त्रिमूर्ति एवं चौबीसी वेदी नव निर्माण का संयोग

➤ निर्मलकुमार श्री मोड़ (मंत्री)

पावन आष्टा नगर सुरम्य सलिला पार्वती नदी के तट पर स्थित है। यहाँ पर अनेक प्राचीन अवशेष हैं। भूतकाल में यहाँ के राजा-महाराजा किले पर निवास करते थे।

उसी किले की मनोरम घाटी पर अत्यंत प्राचीन भव्य दि. जैन मंदिर स्थित है, जिसमें एक वेदी चौबीसी भगवान की। एक शांतिनाथ भगवान की एवं एक वेदी अतिशययुक्त बड़े बाबा आदिनाथ भगवान की है जो कि किवदंती के अनुसार पार्वती नदी के तट (बावंर के बड़ के पास) से मिली है।

जब यह प्रतिमाजी मिली तो विवाद का केन्द्र बनी परंतु तत्कालीन निर्णयानुसार प्रतिमा को रस्सियों से बांध दिया गया और निर्णय किया कि यदि यह मूर्ति रातभर में अपने स्थान से एक हाथ आगे बढ़ गयी तो दिगम्बर जैनों की होगी। बड़े बाबा का चमत्कार हुआ और प्रतिमा अपने स्थान से आगे बढ़ गई। तदुपरांत प्रतिमाजी किले मंदिरजी में विराजमान कर दी गई।

इस प्रकार यह मंदिर दि. जैन समाज की अमूल्य धरोहर है। आष्टा नगर में बहुत समय से मुनियों का चार्तुमास नहीं हो पाया था। जिसका क्रम सन् १९८० से शुरू हुआ। जब पूज्य आचार्य १०८ श्री सीमंधर सागरजी महाराज का चार्तुमास अत्यन्त आनंद और उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। बाद में परम पूज्य आचार्य रत्न १०८ श्री दर्शनसागरजी महाराज एवं १०८ श्री विनयसागरजी महाराज का चार्तुमास हुआ। जिनकी पावन प्रेरणा से मंदिरजी की व्यवस्था संचालन हेतु नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया।

सन् १९८५ में श्री दि. जैन महिला मंडल की भावना जाग्रत हुई कि किले मंदिरजी में प्रथम मोक्षगामी भगवान बाहुबली की मूर्ति लाकर विराजमान की जाए। तब जयपुर जाकर मूर्ति का आर्डर दिया गया। कुछ समय पश्चात् अत्यंत मनोज्ञ, मनोहारी भगवान बाहुबली की प्रतिमाजी को आष्टा ले आया गया। मूर्ति को विराजित करने हेतु यत्रतत्र स्थान की खोज की जाने लगी परंतु होनी कुछ और ही थी।

मी. कुंवार बदी १ दिनांक १९.९.१९८६ को भगवान बाहुबली ने चमत्कार दिखा दिया और अपने साथ-साथ नवीन चौबीसों वेदी एवं त्रिमूर्ति की स्थापना का मंगल सुविचार समाज के सामने आया। जिसके प्रेरक परम पूज्य आचार्य १०८ श्री दर्शनसागरजी महाराज के संघस्थ आष्टा समाज के गौरव पूज्य मुनिश्री १०८ श्रुतसागरजी महाराज थे उन्होंने इस कार्य हेतु समाज को प्रेरणा दी। महाराज श्री ने २२-८-९० को मुनि दीक्षा सुसनेर में ग्रहण की।

बड़े बाबा की कृपा से उपरोक्त योजना क्रियान्वयन हेतु स्वीकृत हो गई। शुभ कार्य में देरी क्या। फिर चला सिलसिला चौबीस वेदियों एवं मूर्तियों के बनवाने हेतु दानदाता तैयार हो गए। भगवान आदिनाथ एवं भरतजी की मूर्ति एवं त्रिमूर्ति वेदी बनवाने हेतु भी दान की घोषणा हो गई।

अब फिर से समाज में एक विचार मंथन प्रारंभ हुआ कि चौबीसों वेदी एवं त्रिमूर्ति स्थापना हेतु निर्माण कार्य कहाँ पर किया जाए। उसी समय किला मंदिरजी के पास में श्रीमोड़ बंधुओं का एक भूखण्ड मंदिरजी के रास्ते से लगा हुआ था वह उन्होंने स्वेच्छा से मंदिरजी को दान देने की घोषणा कर दी और वह जगह मंदिरजी परिसर में विलीन कर दी गई, जिससे मंदिरजी के बाहर काफी लंबा-चौड़ा प्रांगण हो गया। परिणामतः लोगों की यह भावना बनी कि इस योजना को खुली जगह पर क्रियान्वित की जाए।

परंतु संयोग से आदरणीय प्रतिष्ठाचार्य पं. सूरजमलजी ब्रम्हचारी बाबा सा. निवाई वाले आष्टा प्रवास पर आए और उन्होंने यह विचार रखा कि इस योजना को वर्तमान मंदिर के आसपास दोनों तरफ चौबीसी वेदी एवं बीच में त्रिमूर्ति वेदी स्थापित की जाए। जब यह विचार समाज के सामने आया तो आष्टा समाज पहले से ही मंदिरजी में स्थानाभाव के कारण त्रस्त था अतः यह निश्चय किया गया कि इस पुनीत कार्य को जीर्णोद्धार में परिवर्तित कर मंदिरजी को लंबा-चौड़ा किया जावे। इसमें पहले से स्थापित चौबीसी वेदी अपने स्थान पर रहे एवं उसके आसपास दोनों तरफ बारह-बारह वेदियों का निर्माण किया जाए एवं बीच में प्राचीन वेदी के ठीक पीछे त्रिमूर्ति वेदी बनवाई जाए।

फिर शनैः शनैः यह योजना मूर्तरूप लेने लगी। समाज के समस्त लोगों ने तन-मन-धन से अपनी मंगल भावना को

साकार करने में अटूट सहयोग दिया और निर्माण कार्य तेजी से होने लगा। फिर दि. ५-९-१९९३ को मंदिरजी की प्राचीन दीवालों को हटाकर मंदिरजी को चौड़ा करने हेतु कारसेवा का आयोजन किया गया। तब समाज में व्याप्त उत्साह, उमंग दर्शनीय था। बच्चे, वृद्ध एवं जवानों से लेकर महिलाओं तक ने इस कारसेवा में दिन-रात भाग लेकर दीवारों एवं छत को हटाकर एक बड़े हाल में परिवर्तित कर दिया। मंदिरजी का एक हाल हो जाने के पश्चात् त्रिमूर्ति वेदी का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ एवं उसके साथ-साथ आसपास दोनों तरफ दो वेदियों का निर्माण कार्य भी दानदाताओं की स्वीकृति प्राप्त होने के पश्चात प्रारंभ किया गया। साथ में मंदिरजी में काँच की दर्शनीय रचनाएं एवं खम्बों पर काँच का कार्य एवं प्रमुख सिंहद्वार एवं तीनों सामने के प्रवेश द्वार बनवाने का भी काम शुरू किया गया।

कार्य लगभग अपनी पूर्णता की ओर था वेदियाँ बिना मूर्तियों की प्रतिष्ठा के सूनी-सूनी लगने लगीं। फिर समाज की भावना आष्टा नगर में एक भव्य और ऐतिहासिक पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव का आयोजन करने हेतु हुई।

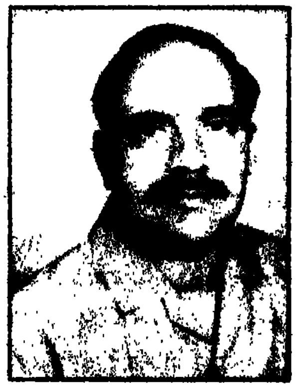
दि. १ मई ९५ से ७ मई ९५ तक यह विशाल महोत्सव परम पूज्य आचार्य रत्न १०८ श्री भरतसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में एवं प्रतिष्ठाचार्य वाणीभूषण, संहिता सूरी पं. श्री विमलकुमारजी सौंरया टीकमगढ़ के निर्देशन में मनाने का निश्चय किया गया। इस प्रकार किला मंदिरजी में जो कार्य एक लघु रूप में संपन्न होना था बड़े बाबा की चमत्कारिक प्रेरणा से एक वृहद रूप लेकर लगभग पूर्णता की ओर है।

मंदिर जीर्णोद्धार में एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के इस विशाल आयोजन में समस्त दि. जैन समाज आष्टा एवं आसपास के क्षेत्र के साधर्मी महानुभावों ने तन-मन-धन से जो सहयोग एवं मार्गदर्शन दिया, उसके लिए श्री दि. जैन पंचायत कमेटी, आष्टा हृदय से आभारी है।

❖❖❖

विनय व्यवहार

➤ कैलाशचन्द्र जैन



शीश नमा अरहंत को सिद्धन करूँ प्रणाम।

आचार्य उपाध्याय सर्व साधु का ले सुखकारी नाम।।

आज कल के इस भौतिकवादी युग में प्रायः देखने में यह आ रहा है कि हर मनुष्य में अपने से बड़े-छोटे के प्रति विनय व्यवहार का धीरे-धीरे लोप होता जा रहा है। यदि हम मनुष्यों को अपने जीवन को शांति के पथ पर ले जाना हो तो विनय व्यवहार को अपने जीवन में लाना होगा। तभी हम अपने जीवन में शांति पा सकते हैं। अपने से बड़ों के प्रति आज्ञा मानने का भाव रखकर मनवचन काय से नम्र बनना तथा अपने से छोटों के प्रति स्नेह तथा उन्हें अपने समान योग्यता वाला समझकर मन वचन काय से नम्रतापूर्वक व्यवहार करना ही विनय व्यवहार है।

प्रातः जागरण के बाद जो भी प्रथम मिले इस प्रकार के वचनों से व्यवहार करना चाहिए -

देव शास्त्र गुरु को	नमोस्तु
माता-पिता व विद्यागुरु को	प्रणाम
क्षुल्लक, ऐलक, आर्य को	वंदामि
ब्रह्मचारी को	वंदन
सजातीय भाई व मित्रों को	जय जिनेन्द्र, जुहार, जयवीर
पुत्रों को व पुत्रियों को	सुखी रहो

आदि पात्रता के अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

विनय व्यवहार का प्रयोजन स्वपर शांति व उन्नति का वातावरण बनाना है।

अतः विनय-व्यवहार करके अपने सत्यपथ को निर्बाध बनाना आवश्यक है।

इस आशय के साथ जय-जिनेन्द्र।

➤ पुराने थाने के पास, आष्टा



आचार्य मुनि श्री १०८ भरत सागरजी महाराज

➤ महेन्द्र कुमार जैन, कोठरी

भारत की हृदय स्थली शस्य श्यामला मालव भूमि का यह परम सौभाग्य है कि वह उन ऐतिहासिक क्षणों में अपनी सम्पूर्ण निष्ठा, आत्मीयता, शोभा, शालीनता, सुषमा के साथ आपकी वन्दना में नतमस्तक है।

आपकी करुणा का कोई ओर- छोर नहीं है, वह अपरिमित और महान् है, उसने संकीर्णताओं की समस्त अन्धी जर्जर प्राचीरें को ढहा दिया है। यही कारण है कि आपका तेजोमय चरित्र-संबलित वाणी सहस्त्र-सहस्त्र जनों को परितृप्त करती है। वास्तव में आप 'सत्वेषु मैत्री' की परम ज्योति की सर्वोपरि प्रस्तुति हैं, इसलिए प्राणी मात्र आपमें आत्म कल्याण को साकार हुआ अनुभव करती है।

'अहिंसा परमो धर्म' का मंत्र सूत्र आपके हृदय में जीवन्त जाग्रत हुआ है। आप जहाँ एक ओर मनुष्य को कर्तव्य की प्रेरणा देते हैं, वहीं उसे उसके व्यक्तित्व के प्रति भी जगाते हैं।

मुनि श्रेष्ठ! आपने अपनी अभीक्ष्ण ज्ञान साधना द्वारा श्रमण चिन्तन के गहन गम्भीर तत्वों को अपनी सहज सुबोध वाणी में सर्वजन सुलभ किया है। अपने लोक मंगलकारी प्रवचनों द्वारा लोकमानस को परितृप्त किया है। आपकी धर्म सभाएँ जहाँ मौन को भी सुना जा सकता है, लगभग समवशरण रूप ही होती है, ऐसा समवशरण जिसमें सहस्त्र-सहस्त्र मंत्रमुग्ध जन तत्व चिन्तन की गहराइयों में अनायास ही डूब जाते हैं और आपके शब्द कलश उनका भाव विभोर मस्तकाभिषेक करते हैं। आपकी वाणी में मृदुता, सरलता एवं वात्सल्यता होने से जैन-अजैन सभी प्रभावित होकर यम, नियम व्रत, संयम आदि लेकर सत्पथ के मार्ग पर चल रहे हैं।

हे! संत शिरोमणि....

यह लक्ष लक्ष मालव निवासियों के हृदयों का पुनीत नवनीत है कि आपने अपनी प्रखर प्रांजल साधना, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगमयी वाणी व भारत की समस्त उज्जवलताओं के अभिमन्थन द्वारा मानव मात्र को नया विश्वास, नई आशा, अभिनव आस्था और चिर स्मरणीय प्रेरणा दी है।

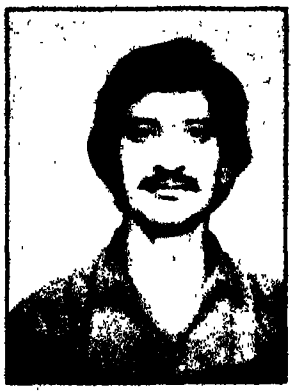
आपका यह दिव्यावदान प्राणीमात्र को अहिंसा, मनुजता, सत्य, स्नेह तथा आत्मीयता की ओर उन्मुख करेगा, जिससे सर्वत्र शांति, सुख, समता और समृद्धि अपनी शीतल चाँदनी से इसका अभिषेक कर सकेंगे।

आस्था नगरी को आस्थावान बनाने में आपका भ्रमण अविरल गुजरात प्रांत से मालव अंचल में चैत्र सुदी ३ संवत् २०४४ ई. सन् १९८८ में झाबुआ, धार, इन्दौर, हाटपीपल्या, सोनकच्छ, लोहारदा, सतवास, अजनास, खातेगांव, नेमावर (सिद्ध क्षेत्र) में आचार्य श्री कुन्द कुन्द द्विसहस्राब्दी समारोह एवं श्री दि. जैन सिद्ध क्षेत्र नेमावर, मेला शताब्दी समारोह दि. ८, ९, १० अप्रेल १९८९ सानन्द सम्पन्न करते हुए कन्नौद, आष्टा प्रवास पर आस्था नगरी को आस्थावान बनाने स्वरूप उच्चारित शब्दों का सिंहनाद (१९८९ की भविष्य-वाणी) 'आष्टा में पंच कल्याण १९९५ से पूर्व नहीं होगा' सार्थकता ले रही है।

❖❖❖

सिद्धत्व की प्राप्ति का दर्शन है
पंच कल्याणक

आत्मा परमात्मा के मिलन का सम्पूर्ण विज्ञान है
पंचकल्याणक



क्यों बनें शाकाहारी

➤ महेन्द्र कुमार जैन 'जादूगर', आष्टा

भारतीय संस्कारों में शाकाहार को भक्ष्य (खाने योग्य) व मांसाहार को अभक्ष्य माना गया है। बदलते परिवेश में बढ़ती मांसाहार की प्रवृत्ति व उससे होने वाली बीमारियों की ओर वैज्ञानिकों का ध्यान गया। शोध करने पर ज्ञात हुआ कि अधिकांश बीमारियों की जड़ मांस भक्षण ही है।

बर्लिन में स्वास्थ्य अधिकारियों ने १९०४ प्रौढ़ व्यक्तियों के स्वास्थ्य पर ११ साल तक निगरानी रखी और पाया कि मांस-मछली खाने वालों से ज्यादा सेहतमंद और स्वस्थ वे हैं जो इसका सेवन नहीं करते हैं। यह बात भी ज्ञात हुई है कि अधिक मांस खाने वालों को दिल का रोग होने का खतरा रहता है।

ब्रिटेन के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. बी. माग्रेट ने 'वर्ल्ड कांग्रेस आन क्लीनिकल' में कहा कि जो शाकाहारी है उन्हें रक्तचाप का रोग नहीं होता। उच्च रक्तचाप वालों को छह सप्ताह तक जब शाकाहारी भोजन देकर इसका परीक्षण किया तो उक्त बीमारी नियंत्रण में पाई गई।

मांसाहार से उत्पन्न होने वाले रोग

<u>मांसाहार निम्न असाध्य रोगों को जन्म देता है-</u>

१. हृदय रोग व उच्च रक्तचाप :- रक्त वाहिनियों की भीतरी दीवारों पर कोलेस्टेरोल की तहों का जमना मुख्य कारण है। कोलेस्टोरोल का सर्वाधिक प्रमुख स्रोत अण्डा, मांस, मलाई, मक्खन व घी है। १०० ग्राम अण्डा प्रतिदिन लेने से जरूरत से ढाई गुना अधिक कोलेस्टोरोल प्राप्त होता है।

२. ऐपीलेप्सी (मिर्गी) :- यह इन्फेक्टेड मांस व बगैर धुली सब्जियाँ खाने से होता है।

३. आंतों का अल्सर, अपेन्डिसाइटिस, आंतों और मल द्वार का कैंसर :- ये रोग शाकाहारी की अपेक्षा माँसाहारी में अधिक पाए जाते हैं।

४. गुर्दे की बीमारियाँ :- अधिक प्रोटीनयुक्त भोजन गुर्दे खराब करता है। शाकाहारी भोजन फैलावदार होने से पेट जल्दी भरता है। अतः उससे मनुष्य आवश्यकता से अधिक प्रोटीन नहीं ले पाता, जबकि मांसाहार से आसानी से आवश्यकता से अधिक प्रोटीन खाया जाता है।

५. संधिवात रोग, गठिया, अन्य वायु रोग :- मांसाहार यूरिक एसिड की मात्रा बढ़ाता है, जिससे जोड़ों पर जमाव हो जाने से ये रोग उत्पन्न होते हैं। यह देखा गया है कि मांस, अण्डा, चाय, कॉफी इत्यादि छोड़ने पर इस प्रकार के रोगियों को लाभ पहुँचा है।

६. एथेरोसक्लेरोसिस :- रक्त धमनियों का मोटा होना भोजन में पोली सैचुरेटेड फैटस कोलेस्टेरोल व केलोरीज का आधिक्य है, मांसाहारी भोजन में, इन पदार्थों की अधिकता रहती है, जबकि शाकाहारी भोजन में बहुत ही कम सब्जी, फल इत्यादि में ये पदार्थ न के बराबर होते हैं। शाकाहारी भोजन इस रोग से बचाने में सहायक है।

७. कैंसर :- यह जानलेवा रोग मांसाहारियों की अपेक्षा शाकाहारियों में बहुत कम पाया जाता है।

८. आंतों का सड़ना:- अण्डा, मांस आदि खाने से पेचिस मन्दाग्नि आदि बीमारियाँ घर कर जाती हैं। आमाशय कमजोर होता है व आंतें सड़ जाती हैं।

९. विषावरोधी शक्ति का क्षय :- मांस, अण्डा खाने से शरीर की विषावरोधी शक्ति नष्ट होती है और साधारण-सी बीमारी का भी मुकाबला नहीं कर पाता। बुद्धि स्मरण शक्ति कमजोर पड़ती है। विकास मंद हो जाता है। कुछ अमरीकी व इंग्लैंड के डाक्टरों ने अण्डे को मनुष्य के लिए जहर कहा है।

१०. त्वचा के रोग :- एक्जिमा, मुंहासे आदि त्वचा की रक्षा के लिए विटामिन ए का सर्वाधिक महत्व है, जो गाजर, टमाटर, हरी सब्जियों आदि में ही बहुतायत में होता है। यह शाकाहारी पदार्थ जहाँ त्वचा की रक्षा करते हैं वहीं मांस, अण्डे, शराब इत्यादि त्वचा रोगों को बढ़ावा देते हैं। त्वचा में जलन महसूस करने वाले रोग के रोगी मांसाहारी ही पाए गए।

अन्य रोगों जैसे- माइग्रेन, इन्फेक्शन से होने वाले रोग स्त्रियों के मासिक धर्म सम्बन्धी रोग आदि भी मांसाहारियों में ही अधिक पाए जाते हैं।

सारांश में जहाँ शाकाहारी भोजन प्रायः प्रत्येक रोग को रोकता है वहीं मांसाहारी भोजन प्रत्येक रोग को बढ़ावा देता है। शाकाहारी भोजन आयु बढ़ाता है तो मांसाहारी भोजन आयु घटाता है।

सभी ने कहा 'अहिंसा'

➤ संकलन- कु. अलका जैन,
एम.एस.सी.

■ 'हे अग्नि! तू मांस-भक्षकों को अपने ज्वालामय मुख में रख ले'

— ऋग्वेद १०-८७२

■ 'जंगली जानवरों को पीड़ा नहीं देना चाहिए।'

— कुरान शरीफ-५

■ 'जो कोई अन्य प्राणियों के साथ दया का व्यवहार करता है, अल्लाह उस पर दया करता है, मूक पशुओं की खातिर अल्लाह से डरो।'

— कुरान शरीफ ६-६८

■ 'तुझे हत्या नहीं करना चाहिए'

— ईसाई धर्म

■ 'जो कोई मांस-मछली खाता है और मादक वस्तुओं का सेवन करता है उसके तमाम पुण्य नष्ट हो जाते हैं'

— गुरुनानक देव

■ 'मांस-मछलियाँ खाते हैं, सुरा पान से हेत।
वे नर नरकहिं जायेंगे, माता-पिता समेत।।'

— कबीरदास

■ 'तिल भर मछली खाय के, कोटि गऊ दे दान।
काशी करवट ले मरे, तो भी नरक निदान।।'

— कबीरदास

■ 'जो पशुओं की अनीतिपूर्वक हत्या करता है, उसके शरीर के अंग छिन्न-भिन्न किये जायेंगे।'

— आर्द २७४-१९२ (पारसी ग्रन्थ)

■ मांस-मांस सब एक है, मुर्गी, हिरनी, गाय।
आँख देख नर खात है, ते नर नरकहिं जाय।।

— गुरुनानक देव

■ 'देवी माँ भगवती के सामने पशुओं का वध करते हो, जबकि दुर्गा सतशती में पढ़ते हो कि - 'या देवी सर्व भूतेषु दया रुपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै।'

■ एक तरफ दया की अवतार सिद्ध करते हो, और दूसरी तरफ माँ के पुत्रों को उसीके सामने काटते हो, यह कैसी बात है?

■ वेद सम्पूर्ण धर्मों का मूल ग्रन्थ 'वेद अखिले धर्म' मनु ने लिखा है वह वेद आदेश देता है कि मितम्य चक्षुसा सर्वाणि भूतानि समिक्षन्ताम ।

— यजुर्वेद

मित्र अर्थात् स्नेह की दृष्टि से सभी प्राणियों को देखो।

■ किसी के प्राणों को पीड़ा देना अच्छा नहीं, बल्कि दूसरों के प्राणों की रक्षा के लिए इतना ही सावधान होना चाहिए, जितना कि अपने प्राणों के लिए। क्योंकि अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है।

— महावीर स्वामी

हमें जगत के सभी जीवों के प्रति घृणा और द्वेष से रहित होकर प्रेम का व्यवहार रखना चाहिए।

अतएवं, मांस भोगी बन्धुओं को अण्डे का खाना तुरन्त ही त्याग देना चाहिए।

अहिंसा की पुकार से

❖❖❖

आत्म विकास का क्रम है, पंच कल्याणक

[redacted]

➤ संकलन-
श्रीमती कलावती जैन, (एम.ए.)
कोठरी

१. निज पर शासन.. फिर अनुशासन

२. जैन धर्म की क्या पहचान .... सत्य, अहिंसा, प्रेम का ज्ञान

३. महावीर का क्या उद्घोष.. देखो अपना-अपना दोष

४. महावीर ने क्या सिखलाया .... समता का है पाठ पढ़ाया

५. महावीर का क्या संदेश.. करो प्रेम छोड़ो द्वेष

६. आलोकित नभधरा दिगंत.. सच्चा है दिगम्बर पंथ

७. वीतरागता की क्या पहचान .... परिग्रह का जहाँ नहीं नाम निशान

८. दिगम्बर मुनियों का क्या उद्घोष.. जन-जन में हो धार्मिक जोश

९. आत्म तत्व का करें विकास .... इन्द्रिय सुख की छोड़े आस

१०. घर-घर में हो शाकाहार.. मिट जायेंगे व्याधि विकार

११. यदि चाहते सुख से जीना .... सादा जीवन सदा बिताना

१२. जो करें हमारा विरोध.. समता धारें, करें न क्रोध

१३. जैन धर्म का सुविधान .... अपने से अपना कल्याण

१४. सिनेमा, दारु और ताश .... जीवन का कर रहे सर्वनाश

१५. मोह माया धोखा है .... त्याग कर लो मौका है

१६. न राग में न द्वेष में.. विश्वास दिगम्बर भेष में

१७. तन को करता कौन खराब .... माँस, अण्डा और शराब

१८. स्याद्वाद के महाप्रचारक .... जय महावीर-जय महावीर

१९. प्राणीमंत्र के महाउद्धारक.. जय महावीर-जय महावीर

२०. हर माँ का बेटा कैसा हो.. भगवान महावीर जैसा हो

२१. हर बेटे की माँ कैसी हो .... त्रिशला माँ जैसी हो

२२. क्या कहता है जैन धर्म.. सब जाने जीवन का मर्म

भगवान के समक्ष अर्घ्य में चावल चढ़ाने का महत्व

➤ श्रीमती प्रेमलता जैन, भोपाल

गेहूँ, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि एक दलीय अन्न कहलाते हैं। चना, मसूर, मूंग, अरहर (तूअर) आदि द्विदलीय दालान्न कहलाते हैं। चावल, कोदी, सांवरिया, कुटकी आदि धान्य कहलाते हैं। इनमें अन्न और दालान्न भूमि में बोने पर अंकुरित होते हैं। अर्थात् उनमें प्राण बीज विद्यमान रहता है, जिसके अंकुरित होने पर पादप का विकास होता है। किन्तु चावलादि को बोने पर अंकुरण नहीं होता। मूर्ति के समक्ष चावल चढ़ाते या पूजन में चावल का अर्घ्य चढ़ाते समय हमें यह भावना भाना चाहिए कि जिस प्रकार अक्षत (चावल) अंकुरित नहीं होते हैं अर्थात् जन्म-मरण का चक्कर इनके साथ नहीं होता है ऐसी ही परिणति मेरी हो जावे कि मैं भी जन्म मरण के चक्र पाश से मुक्ति पा जाऊँ।

चावल चढ़ाने में अहिंसा का पालन भी हो जाता है। दूसरे अन्नों को चढ़ाने में उक्त भाव भी नहीं आ सकते और सूक्ष्म अहिंसा के पालन में भी बाधा है, क्योंकि दूसरे अन्न अंकुरित होने की क्षमता रखते हैं। उनमें बीज प्राण होता है। अतः तीर्थंकर भगवान के समक्ष गेहूं, ज्वार, मूंग आदि अन्न नहीं चढ़ाये जाने चाहिए। ऐसी क्रिया सम्पूर्ण रूप से निर्दोष नहीं है। चावल शोध कर चढ़ाने में कोई दोष नहीं है। साधुओं को चावल चढ़ाना कतई आवश्यक नहीं है। क्योंकि वे अपरिग्रही हैं।

दिगम्बर जैन मुनियों को चावल अर्घ्य चढ़ाया जाता है ऐलक क्षुल्लक को नहीं। क्योंकि ऐलक क्षुल्लक पूर्ण रूप से अपरिग्रही नहीं होते। उन्हें दुपट्टा लंगोट का शल्यभाव रहता है।

चावल श्वेत रंग के होते हैं। बाह्य आवरण रहित होते हैं। श्वेत रंग प्रकाश का भी होता है। अतः दर्शन करते समय चावल चढ़ाकर हमें यह भावना भी भाना चाहिए कि मैं भी कर्मों के आवरण को हटाकर अपनी शुद्ध बुद्ध आत्मा को पा सकूं। जैसे धान का छिलका (आवरण) हटाने पर शुद्ध श्वेत अक्षत की प्राप्ति होती है। मेरे में ज्ञान रूपी श्वेत प्रकाश फैले जिससे अज्ञानान्धकार दूर हो और मैं स्वयं को पहचान सकूं।

हमें चावल चढ़ाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वे टूटे न हों। बिना टूटे चावल ही चढ़ाना चाहिए। बिना टूटे चावलों को ही अक्षत कहते हैं। अक्षत चढ़ाने पर ही हम ऐसी भावना भायें कि मैं भी अक्षत स्थिति को प्राप्त कर सकूं। अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होऊं। सभी मोक्ष प्राप्त परमात्मा अक्षत होते हैं। क्ष-विहीन होना। क्ष ही क्षरण है। क्षरण है तो सृजन (जन्म) है अर्थात् जन्म-मरण चक्र से मुक्त होऊं। यह आवश्यक नहीं कि चावल बहुत अधिक ही चढ़ाये जावें। चावल चढ़ाते समय प्रदर्शन की नहीं दर्शन करने की आवश्यकता है। तिस पर भी हमारी भाव शुद्धि ही सर्वोपरि रहेगी भाव शुद्धि या समर्पित भाव का ही महत्व है। बिना चावल के भी दर्शन हो सकते हैं और ढेर सारे चावल चढ़ाकर भी दर्शन हो सकते हैं और ढेर सारे चावल चढ़ाकर भी दर्शन नहीं हो पाते। भगवान के दर्शन भावाधारित हैं।

धान्य में कोदी, सांवरया, कुटकी की अपेक्षा चावल ही अर्घ्य के लिए सर्वश्रेष्ठ धान्य है। चावल का आकार लगभग वैसा ही होता है जैसे हम भगवान के समक्ष दोनों हाथ जोड़ते हैं। अन्य धान्य गोल से होते हैं। चावल की दोनों नोंक झुकी सी रहती है। चावल चढ़ाने के बाद हम भी विनम्रता पूर्वक सिर झुकाते हैं। पंचाग नमस्कार या साष्टांग नमस्कार करते हैं। अतः चावल सर्वश्रेष्ठ धान्य है भगवान को चढ़ाने के लिए।

जिस प्रकार अन्न, दालान्न, और धान्यों में चावल का स्वाद सर्वश्रेष्ठ है। ऐसे ही संसार के स्वादों में मोक्ष का स्वाद सर्वश्रेष्ठ है उसी को मैं चखूं ऐसी भावना भाई जानी चाहिए।

◆◆◆

तुम्हारे सम्बन्ध तुम व्यवस्थित न करो एवं एक दूसरे के साथ प्रेम, शान्ति एवं संवादिता से न चलो तब तक तुम अधिक कार्यों की ओर बढ़ नहीं सकोगे।



नारी अबला नहीं सबला है

➤ श्रीमती पदमा कासलीवाल

कौन कहता है कि नारी अबला है? जिसने बड़े-बड़े चक्रवर्ती सम्राटों और छत्रपतियों को अपनी गोदी में खिलाया और उन्हें संस्कारी बनाया, जिसने करोड़ों लोगों पर शासन करने वाले नेता-महात्माओं को धर्म का पहला पाठ पढ़ाया, जिसने महावीर-राम-कृष्ण जैसे देवताओं को जन्म देकर संसार की रचना की। वह नारी अबला नहीं, वात्सल्यमयी करुणा की देवी है- सबला है। सादगी, सरलता, स्वच्छता, स्नेह और संतोष का अतिसुंदर श्रृंगार कर पतितों को पावन करने वाली नारी ही है। महासती सीता, महारानी चेलना, अंजना, चंदनबाला, लक्ष्मीबाई, दुर्गावती भारतीय संस्कृति की जीवंत प्रहरी रही है। पाश्चात्य चिंतन के अनुसार - 'नारी एक गहरा सागर है। नारी का इतिहास आंसू का भी है और फूलों का भी' कहा है-

नारी है सुंदरता जग की - नारी है श्रृंगार

नारी न्याय, नीति नारी है - नारी जग का प्यार

नारी रस, नारी कौशल है - नारी कला महान्

नारी बिन पुरुष जीवन रह जाता सुनसान

नारी खुद अभिशाप झेलकर - देती है वरदान

नारी का सम्मान जहाँ पर वह घर स्वर्ग समान

आज की नारी अपनी पीढ़ियों से मीलों आगे है। कल की ममतामयी, लावण्यमयी नारी आज की छात्राएँ हैं। नारी में गजब की प्रभावपूर्ण आकर्षक क्षमता, माँ का सा प्यार व सैनिक सा अनुशासन होता है। रणभूमि हो या आर्थिक मोर्चा - चण्डी का रूप धारण कर विजयश्री दिलाने की सामर्थ्य है आज की नारी में। भारतीय नारी ने अपने बलिदानों के माध्यम से समय-समय पर ऐसी ज्योति प्रज्जवलित की है, जिसके प्रकाश में पुरुषों ने अपना पथ् निकाला है।

आज जहाँ पीड़ित है जगत्, दहेज-दंभ छल बल से

शांति दिला समाज संवार दे, नारी अपने भुजबल से

संयम का पाठ पढ़ाने वाली संस्था तथा समाज के उत्कर्ष की आधारशिला नारी ही है। भगवान ऋषभ की पुत्रियों ने संयम व्रत धारण कर सिद्ध कर दिया था कि स्त्रियों में अनन्त शक्ति है। मुनि तरुणसागरजी के अनुसार- 'शरीर में जो स्थान नाड़ी का है, वही समाज में नारी का है।' जहाँ नारी की पूजा होती है, वहां देवता विचरण करते हैं। ठीक ही है-

वह समाज कैसे सशक्त हो, कैसे पूर्ण सबल हो

जिस समाज की क्षमताओं का आधा अंग शिथिल हो

मत घूंघट से ढको, न दहेज की बलिवेदी दो

नारी शक्ति असीम, सृजन का उसे अवसर दो।

➤ अध्यक्ष, चेतना महिला मंडल,
आष्टा

◆◆◆

मनुष्य जीवन का सच्चा माप

पर्वत की चोटी पर पाइन वृक्ष होना तुम्हारे भाग्य में न हो तो, तुम एक पौधा तो बनो। परन्तु वह ऐसा कि एक छोटे झरने के तीर पर उगा हुआ एक उत्तम छोटा सा पौधा।

तुम वृक्ष न बन सको तो पौधा बनना। तुम राजमार्ग न बन सको तो पगडंडी बनना। सूर्य न बन सको तो एक आधा तारा बनना। विजय और पराजय का आधार सिद्धि के बड़प्पन में नहीं है, तुम जो कुछ भी हो उसमें उत्तम बनो।

मित्रों तुम किस लिए जन्मे हो गम्भीरतापूर्वक विचार करो और फिर उसे सिद्ध करने में पूरी लगन से तन्मय हो जाओ। आत्मसिद्धि के प्रति इस तरह की जागृत प्रयत्नशीलता, यही मनुष्य जीवन का सच्चा माप है।

➤ मार्टिन लूथर किंग

एक चिंतन

जैनत्व के लड़खड़ाते कदम

➤ विमलकुमार जैन

जैन धर्म आदिकाल से है। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह एवं पंचशील के सिद्धान्त से सारे विश्व का मार्गदर्शन करता आ रहा है। यही कारण है कि जैन धर्म के न मानने वाले भी, जैन धर्म के सिद्धान्तों, त्याग, तपस्या से बहुत प्रभावित हैं। जैन धर्म के सिद्धान्त व्यवहारिक एवं पूर्णरूपेण वैज्ञानिक हैं। जैन धर्म सभी धर्मों का समान रूप से आदर करता है। जैन धर्म के ग्रन्थों में कहीं पर भी अन्य धर्मों के बारे में निन्दा की बातें नहीं लिखी गई हैं। निन्दा करना ही निन्दा को जन्म देना है। जैन धर्म के सन्त भी दूसरे धर्म के प्रति निन्दा भाव नहीं रखते अपितु उनकी आदर्श बातों को ग्रहण करने के भाव निहित रहते हैं।

इन्हीं आदर्श एवं उच्च परम्पराओं के कारण, जैन धर्म के मानने वाले लोगों के प्रति, आम जनता की एक अलग ही धारणा है। उनकी एक अलग पहचान है।

प्राचीनकाल में जैन व्यक्ति को बहुत ही आदर्श व्यक्ति माना जाता था। न्यायालय में उसके साक्ष को सत्यता से भी ऊपर माना जाता था। उनके कहने मात्र से व्यक्ति की जमानत हो जाती थी। राज दरबारों में उनकी सलाह को सर्वोच्च माना जाता था और उनके निर्णय को अन्तिम। कहने का आशय यह है कि जैन व्यक्ति को उनके आचार-विचार से विश्वसनीय माना जाता था।

लेकिन अब हवा विपरीत बह रही है। जिन बातों को कभी हम सपने में भी नहीं सोचते थे उन्हें किया जा रहा है। कहीं फेशन के नाम पर, तो कहीं पाश्चात्य संस्कृति की नकल के नाम पर, तो कहीं झूठी शान के लिए।

आजकल मेजोर्टी की आड़ में क्या-क्या नहीं होता यह आप सभी से छिपा नहीं है। शराब, माँस, अण्डा जैनों के भोजन का अंग होता जा रहा है। जिसे कभी हम देखना तो दूर उसका नाम लेना तक पसंद नहीं करते थे। ये बात जैनत्व को कलंकित करने वाली है।

इसके अलावा तथाकथित धार्मिक, सामाजिक नेता आजकल, मृत्यु भोज, विवाह, मामेरा आदि का विरोध कर रहे हैं। लेकिन भटकती युवा पीढ़ी की ओर किसी का ध्यान नहीं गया, जो कि गलत कार्य कर समाज को कलुषित कर रही है।

मृत्यु भोज, विवाह, मामेरा आदि का विरोध हो रहा है, जबकि ये प्रथा सही मायनों में देखी जावे तो कहीं न कहीं से व्यक्ति को समाज से जोड़ने का काम कर रही है। मृत्युभोज में लोग आते हैं। नाते, रिश्तेदारी वालों से मिलना हो जाता है। विवाह में भी शुभ चिन्तक, हितैषी, रिश्तेदार भाग लेते हैं। मामेरा भी भाई और बहन के बीच स्नेह को बढ़ाने वाला प्रायोजन है। इस प्रकार के आयोजनों का एक लाभ यह है कि इनमें नई रिश्तेदारी के अवसर भी सुलभ होते हैं, फिर भी इनका विरोध हो रहा है। मैं उक्त प्रथाओं की वकालात नहीं कर रहा हूँ और न ही यह आशय है कि यह प्रथाएँ सही हैं। इस माध्यम से मैं उस ओर ध्यान दिलाना चाहूँगा जो उक्त प्रथाओं से भी ज्यादा घातक हैं। उस ओर किसी का ध्यान क्यों नहीं गया या फिर समाज के तथाकथित नेता इस बात को नजर अंदाज कर रहे हैं।

यदि समाज को सुधारना है तो पुनः नए सिरे से उक्त समस्या की ओर ध्यान देना होगा, मनन करना होगा, चिन्तन करना होगा। मात्र भाषणबाजी समाज को सबसे नीचे दर्जे का समाज बना कर रख देगी। जो हम कह रहे हैं, उसे करना होगा कसौटी पर खरा उतरना होगा।

मैंने भी इस समस्या को लेकर मनन और चिन्तन किया है कि आखिर समाज को कलुषित करने वाली कौन-सी शक्तियाँ हैं। मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि अन्य कारणों के साथ सबसे महत्वपूर्ण कारण व्यक्ति का अति धनाढ्य होना है। कुछ इसके अपवाद हो सकते हैं।

मैंने शादी-विवाह के अवसर पर यह महसूस किया है कि दहेज प्रथा हमारे समाज की एक समस्या बनी हुई है। जिससे पीछा छुड़ाना मुश्किल है। यदि समाज में कोई गरीब व्यक्ति कुछ नगदी लेकर सूक्ष्म रूप से विवाह करता है, तो मैं यह समझता हूँ कि वह समाज के साथ उपकार कर रहा है, जबकि वह ली हुई राशि को पुनः दूसरी (बहन आदि की) शादी में खर्च करना होती है। इसके विपरीत धनाढ्य लोग शादी-विवाह में लाखों रुपये फिजूल खर्च कर देते हैं। दहेज में लाखों रु. का सामान ले लेते हैं और इस शादी को आदर्श

विवाह का नाम देते हैं। कहते हैं हमने नगदी नहीं लिया और बेचारे उन गरीब लोगों को कोसते हैं कि उन्होंने ५-१० हजार लेकर दहेज लिया है। यदि धनाढ्य व्यक्ति शादी-विवाह पर फिजूल खर्च की बचत करे तो इससे समाज की ५-१० बेटियों की शादी हो सकती है और अन्तर्जातीय विवाह को रोका जा सकता है।

इसके अलावा जैन समाज को लज्जित करने वाला भी उच्च वर्ग है। जो ऊपर से आदर्श और अन्दर से खोखला है। आज प्रत्येक व्यक्ति शोहरत हासिल करने की अन्धी दौड़ में शामिल है। इसे प्राप्त करने के लिए कुछ भी क्यों न करना पड़े। इसी का परिणाम है कि जैन समाज की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है।

इस समय समाज संकट के दौर से गुजर रहा है, ऐसा लग रहा है। युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध में दिग्भ्रमित है। समय रहते इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो इसके परिणाम बहुत ही विकराल होंगे। यह समाज को न जाने कहाँ छोड़ेगी, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है।

इस समस्या के निदान के लिए समाज सुधारने को सम्पन्न व्यक्तियों को आगे आना चाहिए एवं ठोस पहल करना चाहिए। ताकि दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी को पुनः अपना खोया सम्मान प्राप्त हो सके। इस पुनीत कार्य के लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को त्याग करना होगा, स्वार्थ त्यागना होगा, झूठे भाषणों एवं खोखली आदर्शता से दूर रहना होगा और यह त्याग सम्पन्न व्यक्तियों से होना चाहिए। जो कर सकते हैं। गरीब वर्ग तो अपने आप उनके पीछे हो लेगा। प्रत्येक व्यक्ति मात्र इतना त्याग कर दे कि विवाह आदि आयोजन सादगी रूप से हों उसमें फिजूल खर्ची न हो, मात्र [illegible] तक सीमित हो अन्य रूढ़िवादी बातें समाप्त हों। ये छोटी-छोटी बातें न केवल समाज को सुधार सकती हैं बल्कि भावनात्मक एकता भी पैदा कर सकती है।

आज हमने अपने आदर्श खो दिए हैं। जो आदर्श हमारे समाज ने दिए उसे ग्रहण कर दूसरे समाज सुधर रहे हैं और हम अपने मार्ग से भटक गए हैं।

जैन धर्म के मानने वालों की विवाह पत्रिका पर लिखा रहता है। प्रीतिभोज का समय सायं ५ बजे से आपके आने तक यानि रात्रिभोज को खुला निमंत्रण है। विवाह के अवसर पर सभी वर्गों का एक साथ भोजन करना जिसमें भक्ष्य, अभक्ष्य सभी प्रकार के भोजन करने वाले लोग सम्मलित होते हैं।

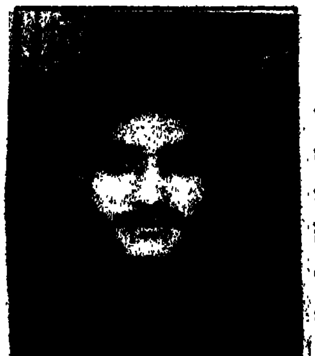
सामूहिक विवाह में केवल कमजोर आय वाले वर्गों का भाग लेना एवं सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा उसका नेतृत्व करना, लेकिन अपने लड़के, लड़कियों का विवाह घर से करना। सन्देह को जन्म देता है। इन सब बातों पर चिन्तन करना होगा, मनन करना होगा एवं नई पीढ़ी को जैन कहलाने लायक बनाना होगा। उन्हें सुसंस्कारित करना होगा। तभी हमारा इस महान उत्सव श्री पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं गजरथ महोत्सव में भाग लेना एवं ऐसे आयोजनों को करवाना सार्थक होगा। अन्यथा यह स्थिति जैन समाज को कहाँ लाकर खड़ा कर देगा। कहना मुश्किल होगा।

➤ मेहतवाड़ा, आष्टा (म.प्र.)

❖❖❖

जैन धर्म और ईश्वर

➤ मनोज कुमार जैन 'सुपर' बुधवारा, आष्टा



जैन धर्म का यह एक विशेष सिद्धान्त है कि वह ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हुए भी उसे किसी व्यक्ति विशेष में ही केंद्रित नहीं मानता है। बल्कि प्रत्येक आत्मा में ईश्वरत्व शक्ति स्वीकार करता है।

जैन धर्म किसी एक अनादि-सिद्ध परमात्मा को तो नहीं मानता है, परन्तु अब तक कर्म रूपी मैल को अलग करके जितनी आत्मा मुक्त (परम आत्मा) हो चुके हैं और आगे भी होते रहेंगे वे सभी मुक्तात्मा, सिद्धात्मा, परमात्मा भगवान या ईश्वर हैं।

जैन धर्मानुसार वे रागद्वेषादि १८ दोषों से छूट जाते हैं तथा उनके अनन्त दर्शन, ज्ञान सुख वीर्य आदि आत्मिक गुण प्रकट हो जाते हैं वे लोक के अग्र भाग में स्थित सिद्धालय में जा विराजते हैं।

संसार के किसी भी कार्य से उनका कोई संबन्ध नहीं रहता है। जैसे धान से छिलका अलग हो जाने से चावलों में उगने की शक्ति नहीं रहती। उसी प्रकार संसार में उत्पन्न होने का कारण कर्मरूपी बीज नष्ट हो जाने पर सिद्धात्माओं को संसार में फिर कभी भी जन्म नहीं लेना पड़ता और वे सदा अपने निराकुल सुख में लीन रहते हैं। कर्म शत्रुओं को जीतने के कारण उनको जिन या जिनेन्द्र कहते हैं।

● अभिमान समस्त पाप की जड़ है।

● राग, द्वेष, मोह संसार की जननी है।



जैन क्या है ?

➤ दीपक जैन 'कंचन', आष्टा

जैन जाति नहीं, वंश नहीं, सम्प्रदाय नहीं तथा संघ भी नहीं है। जैन जिन शब्द से बना है। जिन या जिनेन्द्र ऐसी भव्य आत्मा जिसने अपनी इन्द्रियों को जीतकर सांसारिक आवागमन से मुक्त हो, सिद्धत्व पा लिया है। तथा वे सांसारिक जीवों को आत्म कल्याण का मार्ग दिखा रही हैं ताकि कोई भी आत्मा परमात्मा बन सके।

जिनेन्द्र के इस पथ पर चलने वाला कोई भी व्यक्ति जैन है। अर्थात् सभी दुर्गुणों को जीतकर जैन बना जा सकता है। जैन शब्द में दो मात्राएँ हैं जो श्रद्धा व चारित्र की द्योतक हैं। इनके हट जाने के बाद जिस प्रकार सिर्फ जन शब्द रह जाता है उसी प्रकार व्यक्ति के जीवन से श्रद्धा व चारित्र हट जाने पर वह जीवित रहते हुए भी उद्देश्य शून्य रह जाएगा।
जैन शब्द अंग्रेजी में JAIN अक्षरों में लिखा जाता है।
J यानी जस्टिस- न्याय, तटस्थता, मध्यस्थ भाव।

A यानी अफेक्शन - प्रेम, स्नेह।

I यानी इन्ट्रोस्पेक्टीव - आत्म निरीक्षणकर्ता

N यानी नोबल - उम्दा, परहित चिंतक, पर पीड़ा वेधव्य
उक्त चार गुणों के धारक सभी जैन हैं।

आज सभी जन्म से जैन हैं। जैन के घर जन्मा इसीलिए उसे जैन कहा जाता है। पर कर्म से जैन हो जाए तभी वह सच्चा जैन है।

जैन यानी निर्व्यसनी, प्रामाणिक, भला, उदार, दूसरों का भला करने वाला, पाप भीरू और अहिंसक।

जैन यानी अहिंसा का पुजारी, अनेकांत का चाहने वाला स्याद्वाद में बोलने वाला और वाणी में सत्यवादी।

जैन सभी व्यसनों के त्यागी हो। यम, नियम, संयम को पालने वाला हो। करुणा दया से भरपूर हो। जैन को श्रावक भी कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ श्रद्धावान, विवेकवान तथा क्रियावान है।

जैन में यह चार गुण चाहिए -
प्राणीमात्र में - मैत्री भाव गुणीजनों में - प्रमोद भाव
दीन-दुःखी के प्रति - करुणा भाव
खिन्न, अशिष्ट व अज्ञानियों की ओर - उदासीनता व उपेक्षा के भाव।

बच्चों की कलम से



खुशियों का दिन आया

➤ शैलेन्द्र कुमार जैन 'शैलू', आष्टा

आया रे आया रे देखो, महोत्सव पंच कल्याणक आया।
झूम उठी आस्था की नगरी, इतनी खुशियाँ लाया॥

चल रही उमंग उत्साह की हिलौरें, गरिमामयी तैयारियाँ।
नर-नारी जुट गये बाल गण, भूल गये रुसवाईयाँ।
आचार्य भरत सागर ने भी, कर ली आने की तैयारियाँ।
नगरी बनी दुल्हनियाँ सारी, चल पड़ी पुरवाइयाँ॥

चैताली का राग जमेगा, डी.पी. कौशिक भावेंगे।
झूम उठेंगे सारे श्रोता, रवीन्द्र जैन जब गावेंगे।
आवेंगे जब विशिष्टजन, हम पुल्कित हो जावेंगे।
विश्व कल्याण की मंगल भावना, विमल सौंरया भावेंगे।

धारो जल्दी इन्द्रों के पद्, दिक्-छप्पन कुमारियाँ।
बन जावे छटा रंगीली, फूल उठें फुलवारियाँ।
प्रथम बार मालव अंचल में, होगी गजरथ की सवारियाँ।
ढोल-धमाके और नगाड़े, कुहुँक उठे शहनाईयाँ॥

चौबीसी में प्राण प्रतिष्ठा, त्रिमूर्ति संग होवेगी।
बड़े बाबा की आशीष घनेरी, मन की कालिख धोवेगी।
जल्दी आवो प्यारे स्वजन, घड़ी हाथ न आवेगी।
पुण्यावसर जाने पर तो, किस्मत भी पछतावेगी॥

◆◆◆

अहिंसा व शाकाहार जैनेतर, धर्म धर्मात्माओं की दृष्टि में

➤ भानुकुमार जैन

सृष्टि के आदिकाल में अविकसित मानव प्राणी भी अन्य वन पशुओं की भांति कंदराओं में निवास करता था तथा उन्हीं की तरह अपेक्षाकृत कम बलशाली पशुओं, पक्षियों को मारकर कच्चा ही माँस भक्षण करता था। काल की गति के साथ-साथ स्वानुभवसे, हानि और लाभ के विवेक से, आदि-मानव शनैः शनैः प्रगति की ओर अग्रसर होता रहा। समूहों की स्थापना, काष्ठ के घोंसले या गुफानुमा आवासों का निर्माण, अग्नि उत्पन्न करने की कला आदि से परिचित होते ही माँस के स्थान पर फल-फूल, वनस्पति का सेवन बढ़ता गया।

पूर्व अर्जित अनुभवों के क्रमबद्ध संकलन-संस्कारों के आदान-प्रदान से मानव मस्तिष्क का विकास हुआ। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र खोज और आविष्कार उसे प्रगतिशील और सुसंस्कृत करते रहे। जीवन की सुदीर्घता की आकांक्षा तथा जीवनयापन में सहज सुगम संपन्नता ही वर्तमान प्रगति के सोपान का मूलाधार है। यही सूत्र आज भी मानव को निरन्तर लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की गति में उत्प्रेरक है।

जीवन के विभिन्न आयामों का अध्ययन विभिन्न दृष्टि-कोणों से किया गया। यह प्रक्रियायें परिणाम तथा संचित ज्ञान विभिन्न दर्शन कहलाए। जिन्होनि स्व के अनुभवों से लाभ उठाया जो जीवन प्रक्रिया को समझ सके उन महापुरुषों ने अपने ज्ञान को परोपकार हित प्राणीमात्र को कल्याणकारी धर्म के रूप में प्रतिपादित कर प्रचार प्रसार किया।

इन अवतारों, तीर्थंकरों तथा महापुरुषों को मूढ़, हठी रक्तपिपासुजनों का विरोध सहना पड़ा। ऐसे व्यक्ति भी थे जो निर्बलों पर अत्याचार करना अपना अधिकार समझते थे। ये व्यक्ति अब भी आदिमानव सम अविकसित मस्तिष्क वाले मानव ही थे जो आखेट, हिंसा व माँस भक्षण को पौरुष का प्रतीक समझते थे। वे व्यक्ति दुराग्रही थे जो समझते-बूझते सन्मार्ग को त्याग हिंसा, असत्य, चौर्य, कुशील व परिग्रह को प्रश्रय दे अपने मिथ्या अहम् की तुष्टि को लक्ष्य बनाए हुए थे।

सभी धर्म पैगम्बर, अवतार एक स्वर से अहिंसा के परिपालन हेतु आदेश देते हैं। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' आदि वेद वाक्य समस्त समष्टि के प्राणियों को अभय प्रदान करते हुए उनके सुख की मंगल कामना करता है। 'जियो और जीने दो' स्वयं के जीवन की रक्षा के साथ-साथ अन्य प्राणियों के जीने के अधिकार की रक्षा का संदेश देता है। विश्व में प्रचलित सभी धर्म व आस्थायें समस्त जीवों पर दया करना, अहिंसा-मय आचरण का आदेश देते हैं।

आज की वैज्ञानिक शोधों ने भी माँस भक्षण को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध कर दिया है जो लोग माँस भक्षण करते हैं उनमें तामसिक प्रवृत्तियाँ स्वयं ही जन्म ले लेती है। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से क्रूर, जिव्हा के क्षणिक स्वाद के लिए जीव हत्या कर देने वाले हत्यारे, अविकसित आदि मानव ही हो सकते हैं, जिसके कि मस्तिष्क का अब तक विकास नहीं हो सका है। वे दुराग्रही ही हो सकते हैं, जो स्वहित की चिन्ता भी नहीं करते। माँस भक्षी व्यक्ति किसी भी धर्म का अनुयायी होने का अधिकारी नहीं है। ऐसे व्यक्ति मात्र हठी या अविवेकी ही हो सकते है।

कुरान शरीफ में कहा गया है कि 'ऐ खुदा! तू सभी प्राणियों पर दया की दृष्टि रखना जानवरों को मारना और खेती को तबाह करना, जमीन में खराबी फैलाना है और अल्लाह खराबी पसन्द नहीं करता।'

ईसा मसीह ने कहा कि 'ईश्वर बड़ा दयालु है। उसकी आज्ञा है कि मनुष्य पृथ्वी से उत्पन्न होने वाले फल और अन्न से जीवन निर्वाह करे। मेरे शिष्यों! जीव हिंसा और माँस भक्षण से सदैव दूर रहना। हमेशा शाकाहारी भोजन करना।'

गुरू नानक ने कहा- 'मेरे शिष्यों, तुम माँस और शराब का सेवन मत करना। माँसाहारियों के हाथ का खाना-पीना भी घोर पाप है।

उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में हम स्वयं ही निर्णय करें कि हम किस धरातल पर खड़े हैं। हमें क्या करना उचित है। हम प्रगतिशील, सुसंस्कृत ज्ञान सम्पन्न मानव हैं- तदनुसार ही हमारा आहार-विचार व आचरण हो।

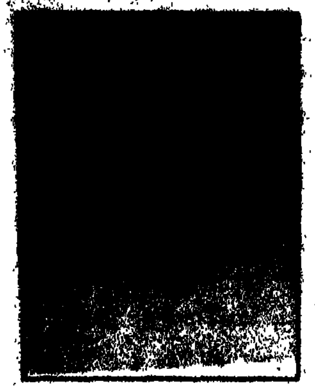
➤ नेमीनगर (जैन कालोनी),
इन्दौर

◆◆◆

बहुत ढूंढा पर महावीर कहीं दिखाई नहीं दिया

➤ सुनील गंगवाल, सोनकच्छ
सम्पादक- 'तरुण क्रांति'

बात छोटी सी है, पर है चुभने वाली। क्योंकि तीर्थंकर महावीर को हम २६०० वर्षों से ढूंढ रहे हैं लेकिन कोई भी साधक आज तक न तो महावीर को ढूंढ पाया, न ही महावीर बन पाया, न ही किसी को महावीर बना पाया। हम कितने ही महावीर को पत्थर में तराश चुके किन्तु जीवन्त महावीर की मात्र कल्पना ही रह गयी है। पुराणों के उन तथ्यों को मान ले कि कलयुग में महावीर पैदा हो ही नहीं सकते तो क्या कलयुग में महावीर को जिया भी नहीं जा सकता है?



हम हर वर्ष भगवान महावीर की जयंति बड़ी ही धूमधाम से मनाते हैं और हम मात्र भगवान महावीर के अनुयायी होने का ढोंग रचाते हैं। यह कैसी विडम्बना है कि आज यदि हम अपने आसपास के वातावरण पर दृष्टिपात करें तो हम पाते है कि सारा विश्व अशांति की ज्वाला से संतप्त है। मानव ही क्या प्रत्येक प्राणी सुख व शांति की खोज में भटक रहा है परन्तु उसने कभी भी मन में यह चिन्तन पैदा नहीं किया कि मैं जो कर रहा हूँ वह सार्थक है या मात्र भेड़चाल। बस किये जा रहा है, किये जा रहा है... क्योंकि हमनें बाहरी सुखाभास इन्द्रिय जन्य सुख जो कि निश्चय ही दुख है, सुख माना है। हमने जड़ शरीर की क्रियाओं को सुख माना है। आनंददायक माना है। दो चार पूजायें की, माला फेरी, व्रत-उपवास कर लिए और हमने माना कि हम कृत-कृत्य हो गये। दो-चार लाख रुपया दान में दे दिया और समाज में सम्मान मिलने लगा। दानवीर, धर्मवीर आदि न जाने क्या क्या उपाधियाँ मिल गई और हम ऐसे चलने लगे मानों हम चौड़े और बाजार सकड़ा हो।

हमने अंतर से नहीं वरन् सिर्फ लोक दिखावा किया है। समाज में प्रतिष्ठा मिली, पूजा होने लगी और साथ ही हमारी स्वार्थ सिद्धी भी होने लगी तो उसी में आनन्द मनाने लगे। परंतु इतना सब कुछ करने के बाद भी हमारे अंतरमन में प्रज्वलित दाह समाप्त नहीं हुई, सुख प्राप्त नहीं हुआ जिसे प्राप्त करने के लिए हमनें इतना सब कुछ किया।

ऐसा क्यों हुआ? यदि एक बार भी ऐसा गंभीर प्रश्न हमारे अंतरमन में उठ जाता तो उसका सहज समाधान प्राप्त किए बिना रहता नहीं।

विश्व के इस रंगमंच पर महावीर आज तक क्यों नहीं मिला, यह हमारा प्रश्न हो सकता है और इसका एक ही कारण हो सकता है कि हमनें आज तक महावीर को अंतर में नहीं खोजा क्योंकि प्रत्येक आत्मा स्वभाव से परिपूर्ण और अनन्त गुणों की स्वामी है। सुख भी आत्मा का ही गुण रहा है, यही कारण है कि आत्मा को भूलकर जो प्रयत्न हमनें सुख प्राप्ति के लिए किए वे सभी निष्फल रहे।

आज के इस संक्रमण काल में जब मनुष्य, मनुष्य के अस्तित्व के लिए बाधक, घातक बन रहा है। ऐसी स्थिती में महावीर हमसें ओर दूर होते जा रहे है। यदि प्रेम की आँखों से खोजे तो महावीर खोये नहीं है। लेकिन हम उन्हें अर्चना और आरती में खोज रहे है और वे नहीं मिल पाते। हजार वर्ष भी मुद्राओं से भरी तिजोरी की पूजा करने से उसमें रखी मुद्रायें उपलब्ध नहीं हो सकती। करोड़ों दीपकों से अंधकार को भगाया नहीं जा सकता, अंधकार को भगाने के लिए तो आलोक भरा अप्रकाशित दीपक चाहिए। क्या हमनें स्वयं में ऐसा ज्ञान दीप सजाकर महावीर को देखने का साहस किया है?

नहीं। हमने उस महावीर को परिग्रह की बदलियों से ढककर ही देखा है। तभी तो आज हमारी उम्रभर की गई पूजाऐं कृतार्थ नहीं हो रही? हजार शास्त्रों का अध्ययन हमारी ज्ञान क्रांति का हेतु क्यों नहीं बन पा रहा है? कौन सी बात रह गयी जो हम महावीर से इतने फासले पर खड़े हुए हैं।

इसका एक ही उत्तर हो सकता है कि आज परिग्रह के प्रासादों में अपरिग्रह घुट रहा है, दम तोड़ रहा है। हमारे परिग्रह ने महावीर जैसे अनन्त व्यक्तित्व को भी मंदिर की चार दीवारों में बंद कर दिया है। सच पूछा जाय तो हम वह दिव्य दृष्टि ही पैदा नहीं कर पाते जिसके प्रतिफल में हम हमारे महावीर को देख पाये क्योंकि जब तक हमारा दर्शन आत्म केन्द्रित होकर बंधेगा नहीं वह महावीर को नहीं खोज पायेगा। पहले जीवन के सत्य का दर्शन करना चाहिये और उसी दर्शन के जागरण में महावीर प्रकट होगा।

धर्म के नाम पर हम बाहर कुछ भी संयोजित कर ले लेकिन जब तक हमारा अंतरमन अन्तर्यात्रा के लिए चरण नहीं धरता तब तक महावीर को पाने की कतई सम्भावना नहीं दिखती।

आज बड़े-बड़े स्मारक महावीर स्वामी की याद में बनाये जा रहे है, लेकिन भीतर के टूटते खण्डहर के जीर्णोद्धार की कोई ललक पैदा नहीं हो पा रही है। इस ललक को निमन्त्रण देना है जिसके आलोक में महावीर स्वयं प्रतिबिम्बित हो जावेंगे और इस मानव समाज को एक महावीर और मिल जावेगा क्योंकि कितने ही महापुरुष ज्ञानी-ध्यानी महावीर को ढूंढते-ढूंढते परलोक सिधार गये किंतु कोई भी आज तक महावीर को नहीं ढूंढ पाया। महावीर तुम स्वयं हो, तुम ही हो महावीर। हाँ! हाँ!! यह सच है कि महावीर तुम ही हो ...... तुम ही हो महावीर.......।

◆◆◆

ई.सन् १९०७ के संदर्भ में : श्री दिगम्बर जैन समाज आष्टा

➤ सुरेन्द्रकुमार जैन एम.ए.(भू.) बी.एड

वर्तमान काल में यातायात व संचार के साधनों के विकसित हो जाने की दशा में, देश क्या विदेश तक की सामाजिक जानकारी होना सहज बात है। परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सामाजिक संगठन बने। अब तो पूरा समाज एक-दूसरे के सम्पर्क में है तथा सैद्धांतिक, वैचारिक, रचनात्मक इत्यादि प्रत्येक स्तर पर संगठित होकर किसी भी समस्या का समाधान पा लेता है। अखिल भारतीय दिगम्बर जैन समाज की किसी भी प्रकार की जानकारी किसी भी स्थल पर प्राप्त की जा सकती है।

लेकिन एक समय था जबकि समग्र भारत वर्ष में दिगम्बर जैन समाज की जनसंख्या कितनी है, कहाँ-कहाँ निवास करते हैं, उनकी उप-जातियाँ कितनी है। मंदिर, अतिशय क्षेत्र, शास्त्र, उनका स्थानीय परिवेश, आर्थिक दशा क्या है। इत्यादि किसी भी प्रकार की व्यवस्थित जानकारी एक स्थल पर ज्ञात नहीं थी।

इसी आवश्यकता व जिज्ञासा से वशीभूत होकर बम्बई निवासी दो भ्राता- श्री माणिकचन्द हीराचन्द जवेरी एवं नवलचन्द हीराचन्द जवेरी ने समग्र राष्ट्र में अपने निजी खर्च पर एक सर्वेक्षण कराने का निश्चय किया। इस सर्वेक्षण का प्रारम्भ १५ नवम्बर १९०७ को हुआ। इस दल ने रेलगाड़ी, बैलगाड़ी व पैदल यात्राएँ कीं, तथा अपना कार्य पूर्ण करने में इसे लगभग ७ वर्ष का समय लगा, व खर्च रु. १५,००० हुआ। तत्पश्चात् श्री दिगम्बर जैन डायरेक्टरी का प्रकाशन किया गया।

उक्त पुस्तक मुझे तीर्थाटन के समय दि. जैन पार्श्वनाथ मंदिर, तिजारा जिला-अलवर राजस्थान के शास्त्र भंडार में देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिसमें आष्टा नगर के दिगम्बर जैन समाज के संदर्भ में संकलित जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूँ, इस आशा के साथ कि हमारे वर्तमान परिवेश से तात्कालीन दशा का सम्बन्ध जोड़ने पर रोचक अनुभूति होगी।

नगर में मंदिर- एक गृह मंदिर (गंज मंदिरजी)

एक चैत्यालय

(किला मंदिरजी शिखर बंद नहीं होने से चैत्यालय)

शास्त्रों का संग्रह - २०० शास्त्र

सामाजिक संगठन - श्री दिगम्बर जैन सभा
श्री दिगम्बर जैन पाठशाला

समाज की जनसंख्या संबंधी जानकारी :

क्र.	उप-जाति	घरों की संख्या	जनसंख्या
१.	पद्मावती पोरवाल	३४	१०९ व्यक्ति
२.	खंडेलवाल	१३	६० व्यक्ति
३.	जांगड़ा पोरवाल	१०	३० व्यक्ति
४.	गोला पूरे	०२	१० व्यक्ति
	योग	५९ घर	२०९ व्यक्ति

समाज के पाँच प्रतिनिधि परिवारों की जानकारी

नाम	उप-जाति	व्यवसाय
श्री चम्पालाल मिश्रीलालजी	खंडेलवाल	लेन-देन
श्री किशनराम भवानीरामजी	खंडेलवाल	लेन-देन
श्री सुआलाल हजारीलालजी	पद्मावती पोरवाल	वैद्यजी
प. सुखसेन सुन्दरलालजी	गोलापूरे	अध्यापन
श्री राजाराम नंदरामजी	जांगड़ा पोरवाल	चौधरी

पुस्तक के संदर्भ में जानकारी-

नाम-'श्री भारत वर्षीय दिगम्बर जैन-डायरेक्टरी'

प्रकाशन- १९१४ ई. प्रकाशक- ठाकुरदास भगवानदास जवेरी, बम्बई

प्रति- २००० मूल्य- ८.००

पंच कल्याणक

एवं

गजरथ महोत्सव के

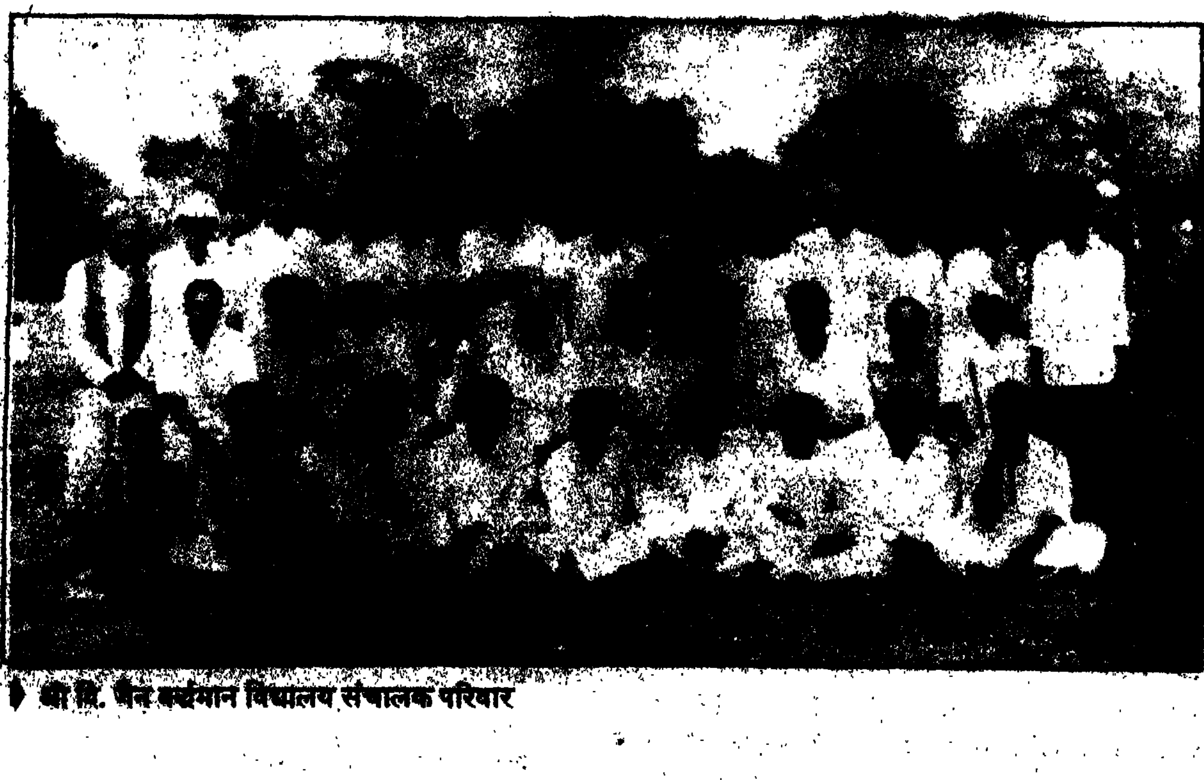
पावन अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनाएँ

"संस्कारों का सूत्रपात"

श्री दि. जैन वर्द्धमान विद्यालय

बड़ा बाजार, आष्टा



श्री दि. जैन वर्द्धमान विद्यालय संचालक परिवार

भोजन व्यवस्था में आर्थिक सहयोगी

श्री अशोककुमारजी फूलचन्दजी कासलीवाल, आष्टा

श्री कल्याणजी मिश्रीलालजी बड़जात्या, आष्टा

श्री राजमलजी रतनलालजी सेठी, आष्टा

श्री डॉ. जैनपालजी राजमलजी जैन, कोठरी

श्री माणकचंदजी पाटोदी, लोहारदा

श्री निर्मलकुमारजी मन्नूलालजी श्रीमोड़, आष्टा

श्री माणकचन्दजी मन्नूलालजी श्रीमोड़, आष्टा

श्री चेवरमलजी सेजमलजी सेठिया, आष्टा

श्री बाबूलालजी मन्नूलालजी श्रीमोड़, आष्टा

श्री कपूरचन्दजी गंगवाल, कैलाशचन्दजी टोंग्या (सोनकच्छवाले), आष्टा

श्री अरिहन्त ट्रेडर्स, कृषि उपज मंडी, आष्टा

श्री अशोक ट्रेडिंग कंपनी, कृषि उपज मंडी, आष्टा

श्री बाबूलालजी महेन्द्रकुमारजी जैन, अलीपुर आष्टा

श्री जैन ट्रेडर्स, मांगीलालजी जैन, कृषि उपजमंडी, आष्टा

श्री मोतीलालजी कासलीवाल, आष्टा

श्री आदिनाथ ट्रेडर्स एवं न्यू विकास ट्रेडिंग कम्पनी, कृषि उपज मंडी, आष्टा

श्री छीतरमलजी जीतमलजी जैन, कृषि उपज मंडी, आष्टा

श्री जैनपालजी कल्याणमलजी जैन, बाखल, आष्टा

श्री राजकुमारजी सेठिया, बड़ा बाजार, आष्टा

श्री अशोककुमार अनिलकुमार श्रीमोड़, बड़ा बाजार, आष्टा

श्री एम.के. चौधरी (रेंजर सा.), आष्टा

श्री खुशीलालजी मिश्रीलालजी जैन, देवास

श्री मध्यप्रदेश ट्रान्सपोर्ट कम्पनी, आष्टा

श्री बाबूलालजी जीतमलजी जैन, बुधवारा, आष्टा

श्री विपिनकुमारजी महेन्द्रकुमारजी श्रीमोड़, आष्टा

श्री सुहागमलजी सेजमलजी सेठिया, बड़ा बाजार, आष्टा

श्रीमती गुलाबबाईध.प.अनोखीलालजी सेठिया, बड़ा बाजार, आष्टा

श्री मोहनलालजी म.प्र. ट्रांस., भोपाल

श्रीमती सुन्दरबाई धर्मपत्नी स्व. मूलचंदजी जैन, बुधवारा, आष्टा

श्रीमती गुणमालाबाई धर्मपत्नी ताराचन्दजी जैन, बुधवारा, आष्टा

श्री बसन्तीलालजी सवाईमलजी (नमकवाले), बुधवारा, आष्टा

श्री गुलाबचन्दजी मिट्ठूलालजी जैन, बुधवारा, आष्टा

श्रीमती शक्करबाई धर्मपत्नी स्व. राजमलजी जैन (लसूड़िया पार वाले), आष्टा

श्री बाबूलालजी हंसराजजी जैन (हराजखेड़ी वाले), आष्टा

श्री रवीन्द्रकुमारजी अमृतलालजी जैन (जैन ब्रदर्स), भोपाल

श्री बसन्तीलालजी मन्नूलालजी जैन, श्रीमोड़ आष्टा

श्री दिगम्बर जैन महिला मंडल, आष्टा

श्री दिगम्बर जैन समाज, अहमदाबाद (राज.)

श्री दिगम्बर जैन महिला मंडल, आष्टा

श्री भंवरलालजी कचरूमलजी जैन, आष्टा

श्री सवाईमलजी धनरूपमलजी जैन, आष्टा

श्री ओमप्रकाशजी जैन, ललेन

श्री दिगम्बर जैन युवामंच, आष्टा

श्री फूलचन्दजी नथूमलजी जैन (नमक वाले), आष्टा

श्रीमती सावित्रीबाई धर्मपत्नी श्रीमलजी जैन, नजरगंज, आष्टा

श्री सवाईमलजी सूरजमलजी जैन, नजरगंज, आष्टा

श्री सुजानमलजी सूरजमलजी जैन, नजरगंज, आष्टा

श्री संजय कुमारजी इमरतीलालजी जैन, बुधवारा आष्टा

श्री अनिलकुमारजी जैन (महावीर) बुधवारा, आष्टा

श्री रखबलालजी सुन्दरलालजी जैन, बुधवारा, आष्टा

श्री अमरचन्दजी गुलाबचन्दजी त्रिलोकचन्दजी जैन नारे, भिल्ला

श्री सुहागमलजी सूरजमलजी जैन, खजूरियाकायम

श्री सुन्दरलालजी हंसराजजी जैन, हराजखेड़ी

श्री बाबूलालजी कुंवरलालजी जैन, भंवरा

श्री मांगीलालजी प्यारेलालजी जैन, भंवरा

श्री मगनलालजी हजारीलालजी जैन, भंवरा

श्री मोतीलालजी मिश्रीलालजी जैन, मेहतवाड़ा

श्रीमती बसन्तीबाई धर्मपत्नी मगनलालजी जैन, मेहतवाड़ा

श्री महावीर जीनिंग फेक्ट्री (देवकुमारजी जैन) जावर

श्री महावीर जीनिंग फेक्ट्री (कमलकुमारजी जैन) जावर

श्री नूतनकुमारजी बागमलजी जैन, जावर

श्री राजकुमारजी कोमलचन्दजी जैन, जावर

श्री सुमतलालजी मूलचन्दजी जैन, जावर

श्री सुमतलालजी मनोहरलालजी जैन, जावर

श्री सुबोधजी जैन (असि. इंजीनियर पी.एच.ई.), आष्टा

श्री झुमरलालजी पन्नालालजी सेठी, रामगंजमंडी

श्री केवलचंदजी रतनलालजी लुहाड़िया, रामगंजमंडी

श्री रमेशकुमारजी जायबर वाले, सीहोर

श्री देवचंदजी जावड़िया वाले, सीहोर

श्री सिंघई बागमलजी रामलालजी जैन, सारंगपुर

श्री भेरूलालजी हीरालालजी जैन, डाबरी

श्री महेन्द्रकुमारजी जैन (नगर पालिका), आष्टा

श्री अनूपकुमारजी केशरीमलजी श्रीमोड़, आष्टा
श्री दिगम्बर जैन अरिहन्त मंडल, आष्टा
श्री रामलजी छोगमलजी जैन (सिंगारचवरी वाले), अलीपुर, आष्टा
श्री अनिल ट्रेडर्स, श्री सुन्दरलालजी जैन, कृषि उपज मंडी, आष्टा
श्री माखनलालजी गबूलालजी जैन (भूफोड़ वाले), आष्टा
श्री लाभमलजी सुनीलकुमारजी सेठिया, बम्बई
श्री सुहागमलजी जैन (रोडवेज), भोपाल
श्री धर्मचन्दजी गोधा, खातीवाला टैंक, इन्दौर
श्री राजमलजी छोगमलजी (खाचरौद वाले), अलीपुर, आष्टा
श्री विमलकुमारजी सुन्दरलालजी जैन, विक्रमपुर
श्री संतोष कुमारजी बाबूलालजी जैन, बावड़ीखेड़ा
श्री बाबूलालजी अम्बारामजी जैन, बावड़ीखेड़ा
श्रीमती बसन्तीबाई धर्मपत्नी सौभागमलजी जैन, पोलायकलां
श्रीमती फूलकुंवरबाई धर्मपत्नी इन्दरमलजी जैन, शुजालपुर सिटी
श्री मनोहरलालजी राजमलजी जैन भंवरावाला (नगर पालिका), आष्टा
श्रीमती शारदाबाई धर्मपत्नी मांगीलालजी जैन, निसाना
श्री सुगन्धीलालजी जैन, लोकेश एण्ड कम्पनी, भोपाल
श्रीमती मन्जूबाई धर्मपत्नी रमेशचन्दजी जैन (गुड़वाले), भोपाल
श्रीमती ताराबाई धर्मपत्नी पद्मकुमारजी पहाड़िया, महेशनगर, इन्दौर
श्री रतनलालजी गेंदालालजी सेठी, खातेगांव
श्रीमती मूलीबाई धर्मपत्नी स्व. गुलाबचन्दजी काला, खातेगांव
श्री अमरचन्दजी, सुरेशचन्दजी सुपुत्र ताराचन्दजी जैन, खातेगांव
श्री गुप्तदान
श्री नरेन्द्रकुमारजी माणकचन्दजी काला (नरेन्द्र मेडीकल स्टोर्स), खातेगांव
श्री विमलचन्दजी अमोलकचन्दजी सेठी, अजनास
श्री दलाल सुन्दरलालजी जैन, मुराई मोहल्ला, इन्दौर
श्री राजेन्द्रकुमारजी नेमीचन्दजी जैन, संयोगितागंज मंडी, इन्दौर
श्रीमती कमलाबाई धर्मपत्नी रखबचन्दजी पाण्ड्या (सनावदवाले) ९३, इन्द्रलोक कालोनी, इन्दौर
श्री रतनलालजी प्रकाशचन्दजी कासलीवाल (जम्बू प्लास्टिक), जैन कालोनी, इन्दौर
श्री ख्यालीलालजी दीपककुमारजी गोधा, उदयपुर (राज.)
श्री सुभाषचन्द्र काला एडवोकेट, भोपाल
श्री ज्ञानचंदजी छाबड़ा, भोपाल

❖❖❖

फर्श निर्माण के दान दाताओं की सूची

क्र.	नाम
१.	श्री छीतरमलजी लखमीचंदजी, आष्टा
२.	श्री दिगम्बर जैन अरिहन्त मंडल, आष्टा
३.	श्री कल्याणमलजी मिश्रीलालजी बड़जात्या, आष्टा
४.	श्री निर्मलकुमारजी मथूलालजी श्रीमोड़, आष्टा
५.	श्रीमती सुगनबाई ध.प.श्री दीपचंदजी श्रीमोड़, आष्टा
६.	श्री सुंदरलालजी मगनमलजी अलीपुर, आष्टा
७.	श्री दिगम्बर जैन महिला मंडल, आष्टा
८.	श्री रखबलालजी सुंदरलालजी बुधवारा, आष्टा
९.	श्री मिठुलालजी गुलाबचंदजी बुधवारा, आष्टा
१०.	श्री बंशतीलालजी नाथूमलजी, आष्टा
११.	श्री फूलचंदजी मनोहरलालजी, आष्टा
१२.	श्री बाबूलालजी वीरेन्द्रकुमारजी, आष्टा
१३.	श्री डॉ. जैनपालजी राजमलजी कोठरीवाले, आष्टा
१४.	श्री राजमलजी रतनलालजी सेठी, आष्टा
१५.	श्रीमती रुकमणीबाई धु.प.स्व. श्री मूलचंदजी सेठिया, आष्टा
१६.	श्री लाभमलजी सागरमलजी, भोपाल
१७.	श्री बाबूलालजी कन्हैयालालजी बाखल, आष्टा
१८.	श्री सुहागमलजी जैन, जैन रोडवेज, भोपाल
१९.	स्व. श्री सूरजमलजी की ध.प. श्रीमती कमलाबाई, भोपाल
२०.	स्व. श्री शांतीलालजी की स्मृति में ध.प.श्रीमती रूपश्री बाई, आष्टा
२१.	श्री शांतिलालजी की ध.प. श्रीमती जैनमतिबाई, भोपाल
२२.	श्री श्रीकमलजी सेजमलजी जैन एडवोकेट, भोपाल
२३.	स्व. श्रीमथूलालजी की स्मृति में ध.प. श्रीमती शांतिबाई, रोलागांव
२४.	स्व.श्रीमती सूरजबाई स्व. श्री बच्छराज जी श्रीमोड़ की स्मृति में श्री ऋषभकुमार-राजेशकुमारजी, भोपाल
२५.	श्री गबूलालजी की ध.प. श्रीमती बाई जैन भूफोड़ वाले, आष्टा
२६.	श्रीमती नजीबाई ध.प. स्व.श्री बागमलजी जैन रेडियोवाले इतवारा, भोपाल

श्री पार्श्वनाथ दि.जैन मन्दिर किला त्रिमूर्ति वेदी एवं मूर्तियों के दान दाता

* त्रिमूर्ति वेदी निर्माण	❑ श्री मोहनलाल जी हीरालाल जी जैन (मध्यप्रदेश ट्रां.क.) भोपाल
* श्री बाहुबली भगवान की प्रतिमा	❑ श्री दि.जैन महिला मंडल, आष्टा
* श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा	❑ श्रीमती मधुबाला ध.प.श्री लक्ष्मीकांत जी जवेरी, बम्बई
* श्री भरत भगवान की प्रतिमा	❑ श्री श्रीपाल जी छीतरमल जी सराफ आष्टा वाले, सीहोर

त्रिमूर्ति वेदी के आसपास की दोनों वेदियों के निर्माण के दान दाता

* श्री महावीर भगवान की मूर्ति एवं वेदी निर्माण	❑ श्रीमती रुपश्रीबाई ध.प.स्व.श्री शांतीलाल जी श्रीमोड़, आष्टा
* भगवान आदिनाथ की वेदी का निर्माण	❑ श्रीमती लक्ष्मीबाई बड़जात्या, आष्टा
* मुख्य सिंहद्वार का निर्माण	❑ स्व.श्री फूलचंद जी कासलीवाल की स्मृति में ध.प. श्रीमती कमलाबाई कासलीवाल, आष्टा
* विधिनायक भगवान आदिनाथजी की प्रतिमा	❑ श्रीमती कमल श्री बाई अध्यापिका किला, आष्टा

मन्दिर के प्रवेशद्वार निर्माण के दान दाता

* प्रथम प्रवेश द्वारा	❑ श्री महावीर जिनिंग फेक्ट्री, जावर
* द्वितीय प्रवेश द्वार	❑ श्रीफूलचंद जी फेमस एम.के. इंडस्ट्रीज, भोपाल
* तृतीय प्रवेश द्वार	❑ श्री नेमचंद जी बसन्तीलाल जी श्रीमोड़, आष्टा

किलामंदिर जी के अन्य निर्माण कार्यों की घोषणा

* श्री शिखर निर्माण आदिनाथ भगवान की बेदी पर	❑ श्री सेजमलजी छोगमल जी सेठिया श्री घेवरमल जी सेठिया, आष्टा
* श्री शिखरनिर्माण महावीर भगवान की बेदी पर	❑ श्री बाबूलाल जी मन्नूलाल जी श्रीमोड़, आष्टा
* बड़े बाबा की बेदी के सामने के फाटक स्टीलफ्रेम के बनवाना	❑ श्री बाबूलाल जी मन्नूलाल जी श्रीमोड़, आष्टा
* फाटक स्टील फ्रेम बनवाना	❑ श्री राजकुमार जी मूलचंद जी सेठिया, आष्टा
* अलमारी की फ्रेम नग २ बनवाना	❑ श्री गबूलाल जी सुंदरलाल जी बुधवारा, आष्टा

महोत्सव कार्यक्रम सम्पन्न कराने हेतु गठित विभिन्न समितियाँ

स्मारिका प्रकाशन समिति

श्री डॉ. जैनपाल जैन,
संयोजक
श्री सुधीर पाठक,
सह-संयोजक
श्री सुरेन्द्रकुमार जैन (अलीपुर)
श्री सुभाष जैन
श्री मनोज सेठी (गोपी)
श्री हीरालाल पंवार
श्री श्रीकिशन श्रोत्रिय
श्री नरेन्द्रकुमार श्रीमोड़ (उमंग)
श्री पवनकुमार जैन (अलीपुर)
श्री जितेन्द्र श्रीमोड़
श्री रामगोपाल श्रीमाल

नगर सज्जा एवं शोभायात्रा समिति

श्री अनोखीलाल खंडेलवाल,
संयोजक नगर सज्जा
श्री सुखानंद जैन,
सह-संयोजक नगर सज्जा
श्री सुभाष गंगवाल इंदौर,
संयोजक शोभायात्रा
श्री संतोष झंवर,
सह-संयोजक शोभायात्रा
श्री महेश कासलीवाल
श्री बाबुलाल जैन (बुधवारा)
श्री नीरज जैन (पेन्टर)
श्री जीवनकुमार जैन (अलीपुर)
श्री जितेन्द्र श्रीमोड़
श्री कमलेश जैन (अलीपुर)
श्री शेषनारायण मुकाती
श्री पुष्पकुमार वर्मा
श्री रतनसिंह ठाकुर (अध्यक्ष ब्लाक कांग्रेस)
श्री लक्ष्मीनारायण नामदेव
श्री सतीश डूंगरे (नावेल्टी)
श्री विजय बतरा
श्री गणेशप्रसाद खत्री
श्री मुन्नालाल मालवीय
श्री कमल तासकर (गंज)
श्री शिवलाल प्रजापति (पार्षद)
श्री प्रेमनारायण गोस्वामी
श्री निर्भयसिंह एडवोकेट
श्री भेरूसिंह ठाकुर एडवोकेट
श्री अनिल जैन (महावीर)
श्री नरेन्द्र पोरवाल
श्री मनोहर जैन (अलीपुर)
श्री आनंद जैन (गंज)
श्री सुशील जैन (अलीपुर)
श्री शिवनारायण राठौर
श्री बालकृष्ण जायसवाल
श्री जमनाप्रसाद राठौर
श्री सुरेश पालीवाल
श्री अरविन्द गुप्ता
श्री ओम नामदेव
श्री अशोक खत्री
श्री महेन्द्र भूतिया
श्री प्रदीप झांझरी
श्री जगदीश पुरी
श्री सुरेश शर्मा
श्री अम्बाराम पाटीदार
श्री रुपसिंह एडवोकेट
श्री लक्ष्मीनारायण सोनी
श्री राजेश मित्तल
श्री सुरेश राठौर
श्री अजमतउल्ला
श्री रईस भाई मियां
श्री आलोक शर्मा
श्री राजेश शर्मा
श्री जीतमल नायक
श्री गजेन्द्र सोनी
श्री मनोहर सोनी (पौचम)
श्री राजेश सोनी
श्री अवधनारायण सोनी
श्री संजय पोरवाल
श्री मनोज पोरवाल
श्री हसन अली सैफी
श्री शहाबुद्दीन भाई
श्री राजेन्द्र पाठक
श्री राजमल पांखा एडवोकेट
श्री प्रकाश सोनी
श्री अभय सोनी
श्री राजेन्द्र राठौर
श्री लोकेन्द्र अग्रवाल
श्री प्रकाश तुतलानी
श्री राधेश्याम नाकेदार (अलीपुर)
श्री मोहन गोस्वामी (अलीपुर)
श्री बाबु शर्मा
श्री संजय श्रोत्रिय
श्री परसराम कुशवाह
श्री जयंत जोशी
श्री कुलदीप शर्मा
श्री नीलू दीक्षित
श्री चंदर भोजवानी
श्री मुन्ना साहु
श्री सुधीर जायसवाल
श्री कैलाश सोनी
श्री मो.शमीम जव्हेरी एडवोकेट
श्री मुन्नुभाई
श्री टीकाराम शर्मा
श्री ललित नागोरी
श्री तुलजाराम भोजवानी
श्री ललितकुमार अग्रवाल
श्री राकेश रावत
श्री रवि सोनी (गंज)
श्री किशन भोजवानी
श्री गोविन्द सोनी
श्री नेमीचन्द कामरिया
श्री अजगर भाई
श्री विजय रावत
श्री प्रकाश माथुर
श्री ए.के.कुरेशी, एडवोकेट
श्री विनय आर्य
श्री रतन टेलर
श्री बबली खंडेलवाल
श्री सुरेन्द्र तलवारा
श्री राजू चौरसिया
श्री किशन सोनी केप्टन
श्री अशोक शर्मा (अलीपुर)
श्री प्रहलाद पंवार
श्री नंदराम कुशवाह
श्री संजय शर्मा छुट्टा
श्री राजेन्द्र शर्मा
श्री जितेन्द्र ठाकुर
श्री प्रहलाद माहेश्वरी
श्री मुकेश राठौर
श्री सत्येन्द्र सोलंकी
श्री लाभमल साहू
श्री जितेन्द्र सिंह ठाकुर
श्री बबलू बैरागी
श्री बबलू शर्मा
श्री मनोहरसिंह ठाकुर
श्री गुलाबसिंह ठाकुर
श्री रमेश पिपलोदिया
श्री रतनसिंह ठाकुर
श्री धीरजसिंह ठाकुर

फोटोग्राफी एवं विडीयोग्राफी समिति

श्री राजेश कटारिया,
संयोजक
श्री विकास विनायके,
सह-संयोजक
श्री सुशील जैन (अलीपुर)
श्री रमेश सकलेजपुरिया
श्री दौलत रामानी
श्री घनश्यामजी
श्री गंगाप्रसाद गौड़
श्री अजय कटारिया
श्री रमेश मेवाड़ा
श्री सुधीर जोशी
श्री कोमल जैन (अलीपुर)

भोजन सामग्री व्यवस्था समिति

श्री लाभचंद लुहाड़िया, इन्दौर
संयोजक
श्री अशोक श्रीमोड़,
सह-संयोजक
श्री बाबुलाल जैन (अलीपुर)
श्री सुखानंद जैन
श्री विधानचंद्र श्रीमोड़
श्री माखनलाल जैन मुनीम
श्री सत्यनारायण शर्मा,एडवोकेट
श्री जमनाप्रसाद शर्मा
श्री दिलीप पोरवाल
श्री सवाईमल जैन (अलीपुर)
श्री कचरूमल जैन
श्री ऋषभ जैन (मंडी)
श्री महेन्द्रकुमार जैन (कोठरी)
श्री रामेश्वर प्रसाद खंडेलवाल
श्री रामनारायण पोरवाल
श्री जसभाई

शासकीय कार्य व्यवस्था समिति

श्री अजीतसिंह
(पूर्व विधायक) संयोजक
श्री सुनील सेठी,
सह-संयोजक
श्री रंजीतसिंह गुणवान
(विधायक)
श्रीमती अकीला बी
(अध्यक्ष न.पा.)
श्री रतनसिंह ठाकुर (अध्यक्ष ब्लाक कांग्रेस)
श्री ए.के.कुरेशी एडवोकेट (पार्षद)
श्री नंदकिशोर खत्री
(पूर्व विधायक)
श्री राजेन्द्र जायसवाल

श्री नरेन्द्र मंगवाल
श्री राकेश जैन ठेकेदार
श्री सुभाष जैन
श्री सोहेल मिर्जा (पार्षद)
श्री बद्रीलाल पाटीदार
श्री पुरुषोत्तम सिंघी
श्री पूरनसिंह मालवीय
(जनपद अध्यक्ष)
श्री अशोक राठौर
(उपाध्यक्ष न.पा.)
श्री अनोखीलाल खंडेलवाल
(अध्यक्ष भा.ज.पा.)
श्री कैलाश परमार
श्री अनूप जैन
श्री अशोक जैन (कोठरी)
श्री नरेन्द्र श्रीमोड़ (उमंग)
श्री कल्याण सेठिया
श्री मनोज सेठी (गोपी)
श्री अनवर हुसैन एडवोकेट
श्री हबीब बेग

■ दुग्ध व्यवस्था समिति

श्री महेन्द्र सोलंकी एडवोकेट,
संयोजक
श्री पवन माथुर,
सह-संयोजक
श्री राधाकृष्ण धांखा एडवोकेट
श्री शमीम सागरी
श्री बाबूलाल जैन (डाबरी)
श्री हरिनारायण मालवीय
श्री दिलीप सोनी
श्री शीलचंद्र जैन
श्री अरुण जैन धवल
श्री गिरिराज सोनी
श्री प्रमोद शर्मा

■ सांस्कृतिक कार्यक्रम व्यवस्था समिति

श्री नरेन्द्र श्रीमोड़,
संयोजक
श्रीमती निर्मला जैन
सह-संयोजक
श्री डॉ.जैनपाल जैन
श्री सुमत जैन (मंडी)
श्री सुभाष जैन
श्री संजय जैन (किला)
श्री मनोज जैन (स्टार)
श्री मोतीलाल जैन (मेहतवाड़ा)
श्री सुरेन्द्रकुमार जैन (अलीपुर)
श्री संदीप श्रीमोड़
श्री कचरुमल जैन

श्री निर्मल जैन (डी.एम.मंडी)
श्री दीपक जैन (कंचन)
श्री राजकुमार नागोरी
श्री संतोष झांवर
श्री अमरसिंह धनघोर
श्री श्रीराम श्रीवास्तव
श्री संजय दीक्षित
श्री सुदीप जायसवाल
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती तेजकुंवर जैन
कुमारी रीना जैन
(अध्यक्ष अरिहंत बालिका मंडल)
कुमारी बबली जैन
(अध्यक्ष बालिका मंडल,
अलीपुर)
श्री ललित नागोरी
श्री जगदीश मिश्रा
श्री राजेन्द्र जायसवाल
श्री द्वारका सोनी (राजहंस)
श्री विष्णु शर्मा
श्रीमती संगीता सेठी
श्रीमती पदमा कासलीवाल

■ स्टाल एवं दुकान समिति

श्री दिलीप सेठी,
संयोजक
श्री अनिल जैन (महावीर)
सह-संयोजक
श्री कचरुमल जैन
श्री राजकुमार सेठिया
श्री मनोहर लाल जैन
(पानवाले)
श्री सवाई जैन (धवल)
श्री रमेशचंद्र जैन (कोठरी)
श्री माणकलाल साहू
श्री शिवनारायण चौरसिया
श्री विनोद भाई पटेल
श्री शैलेष राठौर
श्री मनोज राठौर
श्री सुनील जैन (प्रगति)
श्री ओम नामदेव (पार्षद)
श्री लल्लूभाई फ्रूट वाले
श्री ओम राठौर
श्री गोवर्धन राठौर
श्री प्रहलाद तिवारी
श्री रामलाल धनगर
श्री मिर्जा नजीर बेग
श्री सुगनमल धांखा
श्री मनीष पालीवाल
श्री प्रवीण झांबरी

■ स्वास्थ्य समिति

श्री डॉ.एस.के. पाटनी,
संयोजक
श्री डी.एस. सोलंकी,
सह-संयोजक
श्री डॉ. ए.के. जैन
श्री डॉ. जैनपाल जैन
श्री डॉ. बंगाली
श्री डॉ. ओमप्रकाश पिपलोदिया
श्री डॉ. मगन जैन
श्री डॉ. विद्यार्थी
श्री डॉ. नंदलाल ठाकुर
श्री डॉ. यादव
श्री अशोक सेठिया
श्री अजितकुमार जैन
श्री रमेशचंद्र जैन (आष्टावाले)
श्री अशोक जैन (आस्था)
श्री रमेशचंद्र जैन (भिण्ड वाले)

■ मंच व्यवस्था समिति

श्री सुरेन्द्रकुमार जैन अलीपुर,
संयोजक
श्रीमती हीरालाल सेठी,
सह-संयोजक
श्री डॉ. जैनपाल जैन
श्री पदमकुमार जैन, अलीपुर
श्री अवधनारायण सोनी
श्री गिरिराज सोनी
श्री मनोहर गौतम
श्री सुभाष जैन
श्री नरेन्द्र श्रीमोड़
श्री मांगीलाल जैन, मेहतवाड़ा
श्री कमल जैन (रामपुरा)
श्री अनिल जैन (बुधवारा)
श्री कन्हैयालाल पिपलोदिया
श्री प्रदीप प्रगति
श्री बाबु कुशवाह
श्रीमती कमलश्री जैन
कुमारी रीना जैन (गंज)
कुमारी बबली जैन, अलीपुर
श्री सुरेश कासलीवाल
श्री नेमीचंद कामरिया
श्री शेषनारायण मुकाती
श्री राजेन्द्र सोनी
श्री राजकुमार जैन, गंज
श्री संदीप श्रीमोड़
श्री मोतीलाल जैन, मेहतवाड़ा
श्री मनोज जैन सुपर
श्री कोमल जैन (अलीपुर)
श्री सुमत जैन, मंडी

श्री मनोहर सोनी
श्री धनीराम केवट
श्रीमती निर्मला जैन
श्रीमती विनोद कासलीवाल

■ पांडाल व्यवस्था समिति

श्री मोतीलालजी कासलीवाल,
संयोजक
श्री गणेशप्रसाद सोनी,
सह-संयोजक
श्री वीरेन्द्र जैन
श्री अरुण श्रीमोड़
श्री कैलाशचंद्र ठोंग्या
श्री दीपचंद जैन, बुधवारा
श्री सुरेन्द्र श्रीमोड़
श्री रमेश जैन (लीलबड़)
श्री शेखर मंगवाल
श्री के.पी. शर्मा, एडवोकेट
श्री विष्णुप्रसाद शर्मा
श्री मदनलाल टेलर
श्री जी.एल. नागर
श्री चेतन पटेल
श्री आनंद खंडेलवाल
श्री जितेन्द्र सोनी
श्री बसंत पाठक
श्री सौभालसिंह ठाकुर
श्री भगवानदास (अध्यक्ष
हम्माल मजदूर संघ)
श्री गुलाबचंद जैन (बुधवारा)
श्री मिश्रीलाल जैन (लीलबड़)
श्री सुनील जैन (लीलबड़)
श्री प्रदीप श्रीमोड़
श्री दीपक जैन (हराजखेड़ी)
श्री निर्मल जैन (कोठरी)
श्री पदमकुमार जैन(मेहतवाड़ा)
श्री शिवचरण बजाज
श्री रनछोड़दास बैरागी
श्री प्रेमकुमार राय
श्री भारत भूषण साहु
श्री मुकेश नामदेव, गंज
श्री राजेन्द्र नामदेव
श्री आशीष सोनी
श्री मनोज राठौर
श्री सुरेन्द्रसिंह ठाकुर

■ यातायात व्यवस्था समिति

श्री महेश कासलीवाल,
संयोजक
श्री अशोक खंडेलवाल,
सह-संयोजक
श्री ज्ञानचंद जैन

श्री अनूप जैन
श्री सुन्दरलाल जैन (अलीपुर)
श्री सुजानमल राठौर
श्री महेन्द्र जैन (बाखल)
श्री सुजानमल जैन (डावरी)
श्री मिर्जा साबिर बेग
श्री नसीब भाई (ट्रां.)
श्री महमूद अंसारी
श्री सनव्वर भाई
श्री दिलीप कुमार जैन, गंज
श्री कपूरचंद गंगवाल
श्री अनोखीलाल खंडेलवाल
श्री कैलाश मेहता
श्री शिखर जैन (बाखल)
श्री हेमंत सोनी
श्री महमूद भाई (सम्राट टा.)
श्री बाबूभाई, पेट्रोल पंप
श्री पवन जैन (मारुति)

जल व्यवस्था समिति

श्री अशोक राठौर, संयोजक
श्री सुरेश पालीवाल,
सह-संयोजक
श्री सुबोध जैन
(एस.डी.ओ.पी.पी.डब्ल्यू.डी.)
श्री महेन्द्र जैन (इंजी.न.पा.)
श्री शेषनारायण मुकाती
श्री अनोखीलाल खंडेलवाल
श्री मदनलाल पाठक
श्री लालाजी राम
श्री रम्पुपुरी मण्डी
श्री महेश मूंदड़ा
श्री धरमसिंह पटवारी
श्री ओंकारसिंह भाटी
श्री लक्ष्मणसिंह परमार
श्री मेहरबान सिंह ठाकुर
श्री मनोहरलाल जैन (न.पा.)
श्री मांगीलाल साहू
श्री प्रद्युम्नकुमार जैन (अलीपुर)
श्री कन्हैयालाल कुशवाहा, मंडी
श्री रमेश राठौर, मंडी
श्री नौशे खाँ
श्री रमेशकुमार जैन (रामपुरा)
श्री मांगीलाल अरन्या जौहरी
श्री जगन्नाथसिंह ठाकुर, मंडी
श्री वीरेन्द्रसिंह, मंडी

वी.आई.पी. व्यवस्था समिति

श्री अजीतसिंह (पूर्व विधायक),
संयोजक

श्री रंजीतसिंह गुणवान
(विधायक) सह-संयोजक
श्री फूलचन्द राठौर
श्री हरीनारायण वर्मा (जड़ी)
श्री पूरनसिंह मालवीय
(जनपद अध्यक्ष)
श्री अनोखीलाल खंडेलवाल
(अध्यक्ष ब्लाक भा.ज.पा.)
श्री नूतनकुमार जैन, जावर
श्री मांगीलाल जैन (मेहतवाड़ा)
श्री मैय्या मियाँ (पार्षद)
श्री रामप्रेमचंदानी एडवोकेट
श्री कैलाश परमार एडवोकेट
श्री अनूप जैन
श्री माणिकलाल श्रीमोड़
श्री सुजानमल जैन
श्री दिलीप श्रीमोड़
श्री अशोक जैन (आस्था)
श्री राजकुमार श्रीमोड़
श्री के.डी. श्रीवास्तव
श्री शिवनारायण पटेल, कोठरी
श्री लक्ष्मीनारायण वर्मा
(लसु.खास)
श्री रतनसिंह ठाकर
(अध्यक्ष ब्लाक कांग्रेस)
श्री कमलकुमार जैन, जावर
श्री अशोककुमार जैन (कोठरी)
श्री मिर्जा बशीर बेग (पार्षद)
श्री मदनलाल भूतिया
श्री सत्यनारायण शर्मा, एड.
श्री सुनील सेठी
श्री सुरेश कासलीवाल
श्री राजकुमार सेठिया
श्री राजेन्द्र जैन (डॉक्टर)
श्री डॉ.मगन जैन
श्री सुरेश पालीवाल
श्री अशोक जैन (नेता)

पूछताछ समिति

श्री ललित अग्रवाल,
संयोजक
श्री प्रदीप जैन प्रगति,
सह-संयोजक
श्री सवाईमलजी शिक्षक (अलीपुर)
श्री मनोज पोरवाल
श्री अनिल जैन प्रगति
श्री संजय जैन
(शिक्षक बुधवारा)
श्री अनुराग नारे
श्री सुरेन्द्र पोरवाल
श्री अरुण श्रीमोड़

श्री निर्मल जैन (कोठरी)
श्री मनोज भाटी (रुपश्री)
श्री सुनील खंडेलवाल
श्री दीपक पाराशर
श्री ज्ञानचंद्र विनायके
श्री पवन जैन बुधवारा
श्री सुनील जैन (अलीपुर)
श्री सुनील जैन (नमकवाले)
श्री विनोद जैन (गंज)
श्री सुशील धवल
श्री अक्षयकुमार जैन (कोठरी)
श्री मनोज सेठी (गोपी)
श्री शंकर बोथाना
श्री गजेन्द्र टेलर
श्री प्रदीप झांझरी

समाचार प्रकाशन एवं प्रचार समिति

श्री सुधीर पाठक, संयोजक
श्री नरेन्द्र गंगवाल, सह-संयोजक
श्री रामचंदर सोनी (पत्रकार)
श्री सुरेन्द्र पोरवाल
श्री माणिकलाल नारे
श्री बाबूलाल देववाल
श्री आनंदीलाल सोनी
श्री राजेन्द्र पाठक
श्री सर्वेश उपाध्याय
श्री बंशीलाल कुशवाह
श्री सैयद नवाब अली
श्री राजेन्द्र गंगवाल
श्री राजीव गुप्ता
श्री प्रकाश पोरवाल
श्री श्रीमल मेवाड़ा
श्री दिनेश माथुर
श्री दिलीप मेवाड़ा

आवास व्यवस्था समिति

श्री द्वारकाप्रसाद खंडेलवाल,
संयोजक
श्री सुरेश कासलीवाल,
सह-संयोजक
श्री लक्ष्मीनारायण नामदेव
श्री ताराचंद मुनीम
श्री बाबुलाल जैन प्रगति
श्री पदमकुमार जैन (मेहतवाड़ा)
श्री सूरजमल जैन, (हराजखेड़ी)
श्री गणेश प्रसाद सोनी
श्री स्वामीलाल राठौर
श्री प्रकाश मूंदड़ा
श्री अजितकुमार जैन
श्री मुकेश बड़जात्या

श्री कैलाशचंद्र जैन
श्री सुगनलाल जैन, जावर
श्री शिवनारायण राठौर
श्री घेवरमल जैन (किला)
श्री माणिकलाल श्रीमोड़
श्री जीतमल जैन (मंडी)
श्री रमेशचंद्र जैन (कोठरी)
श्री राकेश जैन ठेकेदार
श्री गोविन्द चन्द्रवंशी
श्री माणकलाल साहू
श्री महेन्द्र शर्मा
श्री ओमप्रकाश जैन (मुनीम)
श्री दीपक सेठी
श्री निर्मलकुमार जैन (भूफोड़)
श्री श्रीमल जैन (अलीपुर)

बोली समिति

श्री राजमल जैन कोठरी,
संयोजक
श्री जैनपाल जैन (मुनीम)
सह-संयोजक
श्री बाबुलाल जैन (कालापीपल)
श्री बंसतीलाल जैन पानवाले
श्री निर्मलकुमार जैन
(भूफोड़ वाले)
श्री बाबूलाल जैन प्रगति
श्री लाभमल जी सेठिया

स्वयं सेवक व्यवस्था समिति

श्री मनोज जैन चौधरी (रेंजर)
संयोजक
श्री घेवरमल जैन (किला)
सह-संयोजक
श्री सुरेशचंद्र शिक्षक
श्री माणिकलाल श्रीमोड़
श्री सवाईमल जैन (अलीपुर)
श्री राजकुमार सेठिया
श्री पवनकुमार जैन (अलीपुर)
श्री महिपाल कृष्ण भटनागर
श्री प्रेमनारायण शर्मा
(शासकी स्कूल)
श्री फादर पुष्प विद्यालय
श्री ऋषभ जैन मंडी
श्री सुरेश कासलीवाल
श्री विमल जैन, अलीपुर
श्री रमेशचंद्र शिक्षक (कोठरी)
श्री लीलाधर जोशी
श्री अनोखीलाल मालवीय
श्री हरिनारायण हसानिया

स्वच्छता समिति

श्रीमती अकीला बी अध्यक्ष
न.पा., संयोजक
श्री महेन्द्रकुमार जैन इंजी.,
सह-संयोजक
श्री अशोककुमार राठौर
(उपाध्यक्ष न.पा.)
श्री सुनील सेठी (पार्षद)
श्री ओम नामदेव (पार्षद)
श्री रमेश मालवीय (पार्षद)
श्री ए.के.कुरेशी एडवोकेट (पार्षद)
श्री सोहेल मिर्जा (पार्षद)
श्री कलीमउद्दीन (पार्षद)
श्री मनीष पोरवाल
श्री राजेश जैन (अलीपुर)
श्रीमती सुरेखा जैन (पार्षद)
श्रीमती हसीना बी (पार्षद)
श्रीमती गीताबाई (पार्षद)
श्री अनोखीलाल खंडेलवाल
(पार्षद)
श्री कल्लू कुरैशी (पार्षद)
श्री भैय्या मियां (पार्षद)
श्री नगीनचंद्र जैन एडवोकेट
(पार्षद)
श्री शिवलाल प्रजापति (पार्षद)
श्री श्रीमल अष्टपगा
श्री मनोहरलाल जैन (न.पा.)
श्री इंदर जैन (अलीपुर)
श्री दीपक जैन कंचन
श्रीमती मालती कुशवाह (पार्षद)
श्रीमती बिमला राठौर (पार्षद)

अमानती सामान गृह समिति

श्री ज्ञानचंद्र बिनायके,
संयोजक
श्री राधाकृष्ण घांखा,
सह-संयोजक
श्री छोटमल जैन
श्री पारस जैन (बुधवारा)
श्री निर्मल जैन (काछीपुरा)
श्री मेघराज झंवर
श्री अजमेरा
श्री जुगलकिशोर मुसा
श्री महेंद्र पाराशर
श्री वीरेन्द्रकुमार जैन (अलीपुर)
श्री सुनील जैन (नमक वाले)
श्री राजेश जैन (बुधवारा)
श्री धीरज घांखा
श्री रामेश्वर सोनी

श्री भूपेन्द्र राणा

विद्युत व्यवस्था

श्री राजकुमार श्रीमोड़,
संयोजक
श्री अशोक खत्री,
सह-संयोजक
श्री ए.के.जैन (पावर हाउस)
श्री निर्मल जैन (अलीपुर)
श्री सुभाष जैन
श्री मांगीलाल विश्वकर्मा
श्री रनछोड़दास बैरागी
श्री अनोखीलाल विश्वकर्मा
श्री छम्मुभाई
श्री इन्दरसिंह ठाकुर
श्री गुलाबसिंह ठाकुर
श्री सुरेन्द्र भाटी
श्री सुहागमल सेठिया
श्री अनिल सेठिया
श्री वीरेन्द्रकुमार जैन
श्री विष्णुप्रसाद शर्मा
श्री पटवा इलेक्ट्रिकल्स
श्री बन्ने भाई
श्री उदयसिंह ठाकुर
श्री मानसिंह ठाकुर
श्री मनोहरसिंह ठाकुर
श्री दीपक श्रीमोड़

बैंक व्यवस्था समिति

श्री आर.बी. श्रीवास्तव,
(प्रबंधक पंजाब नेशनल बैंक)
संयोजक
श्री डुंगरे सा.,
(प्रबंधक क्षेत्रीय राजगढ़ सीहोर बैंक)
सह-संयोजक
श्री राम प्रेमचंदानी
(प्रबंधक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया)
श्री कचरूमल जैन (अलीपुर)
श्री सुरेशचंद्र जोशी
श्री रामविलास मालवीय,एडवोकेट
श्री ज्ञानचंद्र बिनायके
श्री नेमचंद श्रीमोड़
श्री बाबूलाल श्रोत्रिय एडवोकेट

पूजन सामग्री एवं बर्तन व्यवस्था समिति

श्री कैलाशचंद्र लसुलिया,
संयोजक
श्री अशोककुमार श्रीमोड़,
सह-संयोजक
श्री छोटमल जैन

श्री रमेशचंद्र जैन (सावरवा)
श्री दीपचंद श्रीमोड़
श्री फूलचंद जैन (बुधवारा)
श्री रमेशचंद्र जैन (डाबरी)
श्री वृषभ जैन (सावरवा)
श्री ज्ञानचंद्र (पंडितजी)

मुनि, त्यागी, चौका एवं मुनि वैय्यावृति समिति

श्री बाबूलाल जैन, मवासेड़ावाले
संयोजक
श्रीमती कमलश्री बाई,
सह-संयोजक
श्री सुंदरलाल जैन
श्री प्रेमीलाल जैन (बुधवारा)
श्री पवन जैन (काछीपुरा)
श्री जैनपाल जैन (बाखल)
श्री लाभमल सेठिया
श्री कैलाशचंद्र जैन
श्रीमती राजलबाई (बुधवारा)
श्रीमती सीताबाई (अलीपुर)
श्रीमती यशोदाबाई (अलीपुर)
श्रीमती रेशम जैन (बुधवारा)
श्रीमती सोमश्री जैन (अलीपुर)
श्रीमती पुष्पा बिनायके
श्री प्रद्युम्नकुमार जैन (अलीपुर)
श्री प्रकाश श्रीमोड़
श्रीपाल जैन (अलीपुर)
श्री अशोक कुमार श्रीमोड़
श्री मांगीलाल जैन (कचीद)
श्रीमती रूपश्री जैन
श्रीमती तारामती जैन (भोपाल)
श्रीमती नन्नीबाई (अलीपुर)
श्रीमती किरणबाई (कोठरी)
श्रीमती चेनकुंवर बाई (किला)
श्रीमती श्री कुंवरबाई (अलीपुर)

भोजन व्यवस्था समिति

श्री श्रीमल जैन गंज,
संयोजक
श्री रामेश्वर प्रसाद खंडेलवाल,
सह-संयोजक
श्री जैनपाल जैन (बाखल)
श्री कैलाशचंद्र टोंग्या
श्री फूलचन्द जैन (अलीपुर)
श्री मांगीलाल श्रीमोड़
श्री छोटमल जैन
श्री महेश कासलीवाल
श्री नेमचंद जैन (झिल्ला)
श्री सवाईमल जैन (अलीपुर)
श्री रमेशकुमार जैन, रामपुरावाले

श्री बाबूलाल जैन (बुधवारा)
श्री शांतिलाल जैन (कोठरी)
श्री रामचंदर पाठक
श्री मनोज शर्मा
श्री सुमतलाल जैन (जावर)
श्री सवाईमल जैन, गंज
श्री देवकुमार जैन (जावर)
श्री राजमल जैन, इछावरखेड़ीवाले
श्री मिट्ठूलाल जैन
श्री बाबूलाल जैन (अलीपुर)
श्री रमेशचंद्र जैन (करवनखेड़ी
वाले)
श्री अरविन्द जैन (अलीपुर)
श्री वृषभ जैन, मंडी
श्री बसंतीलाल जैन (नमकवाले)
श्री कमलकुमार जैन (मेहतवाड़ा)
श्री श्रीकिशन झंवर
श्री मधुकिशन श्रोत्रिय
श्री गणेश खत्री
श्री बालकृष्ण जायसवाल
श्री भवानीशंकर शर्मा
श्री सत्यनारायण शर्मा, एडवोकेट
श्री मदनलाल टेलर
श्री नरेन्द्र घांखा
श्री कमलकिशोर नागौरी
श्री मांगीलाल गुठानिया, अलीपुर
श्री प्रकाश मूंदड़ा
श्री मोहन सोनी

सुरक्षा व्यवस्था समिति

श्री सुरेशचंद्रजी शिक्षक,
संयोजक
श्री दयाशंकर माथुर,
सह-संयोजक
श्री एम.के. चौधरी, रेंजर
श्री मूलचंद जैन (जामूनर)
श्री सागरमल जैन,
लसुलियावाले
श्री दीपक पोरवाल
श्री सुनीलकुमार श्रीमोड़
श्री मधुसूदन पाठक
श्री भगवानदास (अध्यक्ष,
हम्माल मजदूर संघ)
श्री महेन्द्र कुमार शिक्षक
(कोठरी)
श्री महेन्द्र जैन (जामूनर)
श्री श्रीपाल जैन, नमक वाले
श्री सागरमल जैन मेवा वाले
श्री मुकुटबिहारी माथुर, शिक्षक

श्रीफल पात्र वितरण समिति

श्री महेन्द्रकुमार शिक्षक (कोठरी)
संयोजक
श्रीमती हीरामणि सेठी
सह-संयोजक
श्री बाबूलाल जैन प्रगति
श्री जैनपाल जैन (बारखल)
श्री कचरूमल जैन (बुधवारा)
श्री सांवलदास जैन
(इराजखेड़ी वाले)
श्री रमेशचंद्र जैन (लीलवड़)
श्रीमती तेजकुंवार जैन
श्रीमती संगीता श्रीमोड़
श्रीमती हीरामणि जैन
श्री कचरूमल जैन (अलीपुर)
श्री बाबूलाल जैन (इराजखेड़ी)
श्री घनरूपमल जैन
श्री प्रेमकुमार जैन (मेघराज-
वाले)
श्रीमती ऊषा जैन (शास्त्री
कालोनी)
श्रीमती हेमलता गंगवाल
श्रीमती वर्षा श्रीमोड़
श्रीमती सुनीता झांझरी

गजरथ व्यवस्था समिति

श्री महेश कासलीवाल,
संयोजक
श्री सुजानमल जैन
सह-संयोजक
श्री कपूरचंद गंगवाल
श्री सुखानंद जैन
श्री रमेशचंद्र (सामरवा वाले)
श्री पवन जैन (अलीपुर)
श्री सुभाष गंगवाल
श्री एम.के. चौधरी (रेंजर)
श्री राजकुमार जैन गंज
श्री भगवानदास अध्यक्ष, इ. म.सं.

झांकी एवं प्रदर्शनी समिति

श्री अनिल जैन (अलीपुर)
संयोजक
श्री नेमीचंद कासमरिया
सह-संयोजक
श्री राजकुमार जैन गंज
श्री राजू श्रीमोड़
श्री पंकज जैन
श्री राकेश जैन (आकुमर)
श्री ललित जैन
श्री कल्याणमल
श्री शेषनारायण मुकाती
श्री आनंद जैन गंज
श्री सुशील जैन (बाखल)
श्री शरद श्रीमोड़
श्री दिलीप जैन (बाखल)
श्री सुशील जैन (अलीपुर)
श्री मनोहर गौतम
श्री राजेन्द्र सोनी

कलश वितरण समिति

श्री महेन्द्रकुमार शिक्षक (कोठरी)
संयोजक
श्री सवाईमल जैन अलीपुर
उपसंयोजक
श्री रमेशचंद्र शिक्षक (कोठरी)
श्री संजय जैन
श्री विश्वास विनायके
श्री संजय जैन शिक्षक (बुधवारा)
श्री मिश्रीलाल (बुधवारा)
श्री छीतरमल जैन (बुधवारा)
श्री सुंदरलाल जैन (अलीपुर)
श्री सूरजमल जैन
(इराजखेड़ी वाले)
श्री जीतमल जैन (बुधवारा)
श्री बाबूलाल जैन (मवाखेड़ी)
श्री बंसतीलालजी, श्रीमोड़
श्री माखनलाल जैन, भूफोड़
श्री मनोहरलाल जैन, पानवाले
श्री निर्मलकुमार श्रीमोड़
श्री सवाईमल जैन, गंज
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, अलीपुर
श्री पंकज जैन
श्री ललित जैन
श्री राजमल सेठी
श्री लाभमल जैन (अलीपुर)
श्री राजमल जैन (कोठरी)
श्री सुरेशकुमार कासलीवाल
श्री सुजानमल जैन गंज
श्री घेवरमलजी सेठिया
श्री कैलाशचंद्र जैन
श्री जैनपाल जैन (बाखल)
श्री सुखानन्द जैन
श्री अशोक कुमार श्रीमोड़
श्री कमलकुमार कासलीवाल
श्री मुकेशकुमार बड़जात्या

पांडुक शिला व्यवस्था समिति

श्री सुन्दरलाल जैन,
संयोजक
श्री सवाईमल जैन (अलीपुर)
सह-संयोजक
श्री मांगीलाल जैन (अलीपुर)
श्री रमेशचंद्र जैन (करमनखेड़ी
वाले)
श्री सुजानमल जैन, गंज
श्री रतनलाल जैन (बुधवारा)
श्री कोमल जैन (अलीपुर)
श्री प्रभुदयाल वर्मा
श्री राकेशकुमार (अलीपुर)
श्री सुखानंद जैन
श्री लाभमल जैन (अलीपुर)
श्री सुरेन्द्रकुमार जैन (अलीपुर)
श्री महेशकुमार कासलीवाल
श्री रमेश मालवीलय (पार्श्व)
श्री कमलेश जैन (अलीपुर)
श्री श्रीपाल जैन (अलीपुर)
श्री देवीप्रसाद मुनीम

प्रतिष्ठास्थल निर्माण समिति

श्री बाबूलाल श्रीमोड़,
संयोजक
श्री श्रीमल जैन गंज,
सह-संयोजक
श्री राजकुमार अग्रवाल
श्री शिव शर्मा (सब इंजी.)
श्री दिलीप सेठी
श्री मिश्रीलाल जैन (बुधवारा)
श्री राजमल जैन (कोठरी)
श्री सुजानमल जैन गंज
श्री माणिकलाल श्रीमोड़
श्री बाबूलाल भूरामल जैन
श्री घेवरमल सेठिया
श्री सुखानंद जैन
श्री राजकुमार श्रीमोड़
श्री मनोहरलाल जैन
श्री मोतीलालजी कासलीवाल
श्री सवाईमल जैन (अलीपुर)
श्री सुंदरलाल जैन (अलीपुर)
श्री रमेशचंद्र जैन (सामरवा वाले)
श्री राजकुमार अग्रवाल
श्री अरिहंत युवा मंडल (आष्टा)
श्री मांगीलाल जैन (अलीपुर)
श्री जैनपाल जैन (बाखल)
श्री छोटमल जैन
श्री कचरूमल जैन
श्री अनिल जैन (महावीर)
श्री सूरजमल जैन (इराजखेड़ी)
श्री गुलाबचंद जैन (बुधवारा)
श्री बसंतीलाल जैन (नमक वाले)
श्री माखनलाल जैन (भूफोड़
वाले)
श्री बाबूलाल जैन (मवाखेड़ा)
श्री वीरेन्द्र कुमार श्रीमोड़
श्री मनोज सेठी (गोपी)
श्री मनोज जैन चौधरी (रेंजर)
श्री अशोककुमार श्रीमोड़
श्री कैलाशचंद्र जैन
श्री विमलकुमार जैन (अलीपुर)
श्री अरिहन्त मंडल
श्री दि. जैन नवयुवक मंडलआष्टा
श्री चन्द्रप्रभु मंडल, अलीपुर
दि. जैन युवा मंच

तप कल्याणक स्थल व्यवस्था समिति

श्री महेश कासलीवाल,
संयोजक
श्री सवाईमल जैन
सह-संयोजक
श्री सुखानंद जैन
श्री सुजानमल जैन, गंज
श्री दिलीपकुमार जैन, गंज
श्री किशन चौरसिया
श्री रवि सोनी
श्री प्रकाश नामदेव
श्री लाला पटेल
श्री अशोक भूतिया
श्री सुनील विलास
श्री माखनलाल जैन मुनीम
श्री सुरेशकुमार कासलीवाल
श्री राजेन्द्र गंगवाल
श्री गणेश गुरु
श्री मांगीलाल त्रिवेदी
श्री लोकेन्द्र धांखा
श्री योगेन्द्र तिवारी
श्री रमेशचंद्र धांखा
श्री धर्मेन्द्र उज्जैनिया

महिला समिति

श्रीमती पद्मा कासलीवाल,
संयोजक
श्रीमती निर्मला जैन,
(अध्यक्ष, महिला मंडल)
सह-संयोजक
श्रीमती गुलाबबाई सेठिया
श्रीमती किरणबाई श्रीमोड़
श्रीमती कमलश्री बाई
श्रीमती संगीता सेठी
श्रीमती ऊषा सेठी
श्रीमती स्नेहलता गंगवाल

श्री जिन बिम्ब पंचकल्याणक

➤ पं. नाथूलाल जैन 'शास्त्री'
इन्दौर

जनपद, सम्मति, स्थापना, नाम, रुप, प्रतीत्य, संभावना, उपमा, व्यवहार और भाव इस प्रकार गोम्मटसार के अनुसार दश प्रकार के सत्य में से तृतीय स्थापना सत्य के अन्तर्गत, आचार्य वसुनन्दि ने जिन प्रतिमा, जिनमंदिर, प्रतिष्ठा कारक, प्रतिष्ठाचार्य, प्रतिष्ठा विधि एवं प्रतिष्ठाफल का वर्णन किया है। वर्तमान में आचार्य वसुबिन्दु (जयसेन), आशाधर, नेमिचन्द्र, नरेन्द्रसेन, हस्तिमल्ल, माघनन्दि, कुमुदचन्द्र, भट्टारकअकलंक एवम् राजकीर्ति आदि के प्रकाशित-अप्रकाशित प्रतिष्ठा ग्रंथ उपलब्ध है।

आचार्य कुंदकुंद के शिष्य आचार्य जयसेन पं.आशाधरजी एवं पं. नेमिचन्द्रजी के प्रतिष्ठापाठ समाज में प्रचलित हैं।

कलिंग नृपति खारवेल (ई.पू. २री शती) के हाथी गुफा शिलालेख में ई.पू. ३ री-४ थी शती की जिन प्रतिमा नंदराज द्वारा अपहरण की गई, तथा वापस लाई गई, का उल्लेख है। सिंधुघाटी की खुदाई में मोहनजोदड़ो व हड़प्पा में प्राप्त सहस्त्रों वर्ष पूर्व की आदिनाथ (शिव) की प्रतिमायें मूर्ति कला का महत्व बतला रही है। शाह जीवराज पापड़ीवाल (१४९० ई.) द्वारा प्रतिष्ठापित लगभग एक लाख प्रतिमायें समस्त भारत में स्थान-स्थान पर पहुँचाई गई है।

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनमंदिर, जिनधर्म, जिनागम और जिनप्रतिमा, ये नौ देवता कहलाते हैं, जिनकी गृहस्थ प्रतिदिन पूजा करते है। जिन मंदिर के निर्माण हेतु शुद्ध, सुंदर, सर्पादि के बिल एवं श्मशान रहित, तथा उपजाऊ भूमि होना चाहिये। जलाशय व नगर के समीप, विधर्मी लुटेरों के भय रहित मंदिर का स्थान होना श्रेष्ठ है। मंदिर व जिनप्रतिमा का मुख पूर्व व उत्तर में हो, क्वाचित पश्चिम में भी हो सकता है। जिस वेदी पर प्रतिमा विराजमान हो वह ढाई फुट से कम ऊँचा न हो। उसके ऊपर कटनी या कमल का निर्माण किया जावे। जिससे, आगे के द्वार से प्रतिमा की दृष्टि शास्त्रानुसार रह सके।

वसुनंदि प्रतिष्ठासार के अनुसार आगे के द्वार के नौ भाग करके, उसके सातवें भाग के भी नौ भाग करके, सातवें भाग मे प्रतिमा की दृष्टि आना चाहिये, अथवा सामने के द्वार के चौसठ भाग करके, पचपनवें भाग में भी दृष्टि रखी जा सकती है। मंदिर मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन, बैसाख व ज्येष्ठ महीनों में निर्माण प्रारंभ करना चाहिये। नींव खोदने का मुहूर्त मंगलवार और शनिवार को तथा ४, ९, १४, ३० व १५ तिथियों को नहीं करना चाहिये। सूर्य १२, १, २ राशि पर हो तो आग्नेय दिशा में, ९, १०, ११ राशि पर हो तो नैऋत्य दिशा में, ६, ७, ८ राशि पर हो तो वायव्य दिशा में ३, ४, ५ राशि पर सूर्य होने पर ईशान दिशा में खात व नींव का मुहूर्त किया जाना चाहिये। नींव में ताम्रकलश व विनायक यंत्र तथा प्रशस्ति स्थापित कर, प्रज्वलित दीपक कलश में रखा जाता है। पास में सुपारी, हल्दी आदि मांगलिक द्रव्यों का निक्षेप किया जाता है।

प्रतिमा सांगोपांग, मनोहर, कायोत्सर्ग या पद्मासन, दिगंबर, युवावस्था, शांतिभावयुक्त, हृदय पर श्रीवत्सचिंह सहित, नख-केश हीन, पाषाण या अन्य धातु द्वारा रचित समचतरस्य संस्थान तथा नासाग्र दृष्टि प्रतिमा पूज्य होती है। प्रतिमा पर नीचे चिन्ह एवं ऊपर छत्र व भामंडल होता है। वृषभनाथ की प्रतिमा के सिर पर केश, सुपार्श्वनाथ की प्रतिमा पर ५ फण, पार्श्वनाथ प्रतिमा पर सात या अधिक फण, बाहुबली प्रतिमा पर बेल परम्परानुसार पाई जाती है। सिद्ध प्रतिमा पर चिन्ह नहीं होते एवं अरिहंत प्रतिमा के समान ही सिद्ध प्रतिमा होती है। पोलाकार, शास्त्रोक प्रतिमा नहीं होती, वह तो केवल सिद्ध स्वरुप समझने को है। आचार्यों, उपाध्यायों, एवं साधुओं की मूर्ति न बनाकर चरण व चरण चिन्ह बनाए जाते हैं। सिद्धावस्था के चरण चिन्ह (FOOT-PRINTS) जैसे सम्मेदशिखरजी में है, अन्य जो मोक्षगामी नहीं है, उनके चरण बनाये जाते है।

प्रतिष्ठापाठों में यज्ञनायक व यज्ञनायक पत्नी तथा सौधर्मइन्द्र बनाये जाते हैं। किसी भी प्रतिष्ठापाठ में भगवान के माता-पिता बनाने का उल्लेख नहीं है, पहले बनाये भी नहीं गये हैं। मंजूषा (काष्ठपेटिका) में माता की कल्पना की जाती है। यज्ञनायक तथा यज्ञनायक पत्नी द्वारा सोलह स्वप्न व फल का कथन करा देते हैं, इन्हें माता-पिता नहीं मानते। माता-पिता बनाना तीन लोक के नाथ तीर्थंकर का बहुत बड़ा अपमान है। हमारा यह कार्य निंदनीय है। जिन माता-पिता को मल-मूत्र विसर्जन नहीं होता, उनके एक ही तीर्थंकर संतान वज्र वृषभनाराच संहनन की होती है, वैसी योग्यता वर्तमान के हम स्त्री-पुरुषों में नहीं होती। जिसके रजस्राव मासिक होता रहता है, कुक्षि व मलस्थान आदि में लब्ध्य पर्याप्त जीव उत्पन्न होते रहते हैं, उनमें तीर्थंकर की माता बनने की पात्रता है ही नहीं। यह सब अर्थोपार्जन का प्रदर्शन हो रहा है।

बिंब प्रतिष्ठा उत्तरायण सूर्य में ही होती रही है, किंतु वर्तमान में बिना मुहूर्त के ही प्रतिष्ठायें होने लगी है। यागमण्डल पूजा, मण्डल विधान मात्र नहीं है, वह शुद्धाम्नाय के अनुसार नौ देवताओं की आराधना है, जिससे निर्विघ्न यह महायज्ञ पूर्ण हो सके। इस पूजा को हिंदी में संगीत द्वारा अधिक हिस्सों में संपूर्ण करना विधिक अपूर्णता है। संस्कृत पूजा मंत्ररुप में मानी जाती है, हिंदी नहीं। मंत्रजाप में अखण्ड दीपक व यज्ञ में अग्नि का उपयोग न करना भी विधि की अपूर्णता है। संक्षेप में सावधानी पूर्वक अग्नि का उपयोग मंत्र-जाप के दशांश हवन की विधि में जयसेनाचार्य आदि ने बताया है। पंचकल्याणकों में मंत्रसंस्कारों में प्रमाद करना उचित नहीं है। जो विधि जैसी है, उसी तरह सम्पन्न करना चाहिये।

तिलकदान के पश्चात अधिवासन, श्री मुखोद्घाटन नेत्र-उन्मीलन, सूरिमंत्र (सूर्यमंत्र नहीं) केवलज्ञान मंत्र, ये संस्कार प्रतिष्ठाचार्य द्वारा नग्न होकर ही किये जाते हैं।

समस्त मंदिरों में अरिहंत प्रतिमा ही विराजमान की जाती है। जिनके चिन्ह होते है वह अरिहंत प्रतिमा कहलाती है। उनके चार कल्याणक ही होते हैं, पंचम नहीं। सिद्ध प्रतिमा बनाने हेतु उनकी प्रतिष्ठा विधि अलग ही होती है। निर्वाण कल्याणक केवल तीर्थंकर के चरित्र को पूर्ण बताने के लिये अर्थात् नर से नारायणत्व की प्राप्ति (आत्मा से परमात्मा) का आदर्श दर्शाने के लिये मनाया जाता है। उसके लिये केवल निर्वाण भक्ति या स्तुति कर दी जाती है। प्रतिमा में निर्वाण कल्याणक की संस्कार विधि नहीं की जाती।

श्री जिन बिम्ब प्रतिष्ठा का उद्देश्य लोक कल्याण की भावना है। यह प्रतिष्ठा शास्त्रों मे सर्वप्रथम बताया गया है। नवीन प्रतिष्ठा आवश्यक होने पर ही की जाती है। जीर्णोद्धार का फल नवीन प्रतिष्ठा से चार गुना होना शास्त्रों में वर्णित है।

❖❖❖

वही ज्ञान प्रशंसनीय है,
जो चरित्र से युक्त हो

केवल मारना ही हिंसा नहीं है,
मारने का चिंतन करना भी हिंसा है

नगर के अभूतपूर्व आयोजन के
आयोजकों तथा आगंतुकों का
शत-शत अभिनन्दन



मेहमूद कुरेशी शेख फहीमउद्दीन

सम्राट ट्रांसपोर्ट कम्पनी

रेंज आफिस के सामने,

आष्टा (म.प्र.)

फोन नं. २०६१, ५०६१

आचार्य १०८ भरत सागरजी
के सानिध्य की गहन छाया
में आपका अभिनन्दन

दिलीप जैन

जैन कोल्ड्रिंग
एण्ड
ज्यूस सेन्टर

न्यू बस स्टेण्ड,
आष्टा (म.प्र.)

श्री दि. जैन १००८ में
आदिनाथ पंच कल्याणक प्रतिष्ठा
एवं गजरथ महोत्सव के
शुभ अवसर पर

हार्दिक स्वागत

अप्सरा कलेक्शन

बड़ा बाजार, आष्टा (म.प्र.)

रेडीमेड होजयारी व
आधुनिक वस्त्रों के विक्रेता

प्रो. कांती भाई गुजराती

हार्दिक
शुभकामनाएँ

संतोष यादव

गायत्री किराना एण्ड
जनरल गुड्स

९, मेन रोड, न्यू बस स्टेण्ड,

आष्टा (म.प्र.)

फोन ३०९०

श्री दि. जैन १००८ भ. आदिनाथ
पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
के शुभ अवसर पर

हार्दिक अभिनन्दन

मे. तरंग मेचिंग सेन्टर

गणेश मार्केट बड़ा बाजार, आष्टा

आधुनिक दुपट्टे, साड़ी फाल, सलवार
सूट एवं गाऊन मिलने का
विश्वसनीय संस्थान

प्रो. राजकुमार जैन
विजयकुमार जैन

श्री दि. जैन आदिनाथ पंच कल्याणक
प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव के शुभ
अवसर पर

हार्दिक अभिनन्दन

जय श्री ज्वेलर्स

चांदी एवं सोने के फेन्सी आभूषण के
निर्माता एवं विक्रेता

अवधनारायण जितेन्द्र कुमार
महेन्द्र कुमार

बड़ा बाजार, आष्टा

श्री दि. जैन १००८ भगवान आदिनाथ
पंचकल्याणक महोत्सव के
शुभ अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

**पूजा
गिफ्ट
हाउस**

गणेश मार्केट,
बड़ा बाजार, आष्टा फोन-५००९

प्रो. अशोक जैन, नितिन जैन

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ
महोत्सव के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएँ

**समाधान
कलेक्शन**

सूटिंग, शर्टिंग, साड़ियाँ, ड्रेसेस मटेरियल

बुधवारा राम मन्दिर के पास

[redacted]

सहयोगी संस्थान

अम्बर क्लॉथ सेन्टर

बड़ा बाजार, आष्टा
फोन नं. २२९४

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव के शुभ अवसर पर
आस्थाओं की अभिवृद्धि हो इस भावना के साथ
सभी आगन्तुक महानुभावों का
हार्दिक अभिनन्दन

卐

फोनः
२०७१ आफिस
५०१८ घर

अरिहन्त ट्रेडर्स
चेतन ट्रेडर्स

अनाज मण्डी आष्टा

जिला-सीहोर म.प्र.

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ
महोत्सव पर शुभकामनाएँ

एम.आर. एफ. प्रायवेट लिमिटेड

प्रो. कृष्णकान्त खण्डेलवाल (बबली)

फोन - २३४९ (आ) २०७५ (नि)

खण्डेलवाल मार्केटिंग कम्पनी

अधिकृत विक्रेता- डनलप टायर-ट्यूब्स

ट्रक ४०७, आयशर मेटाडोर, ट्रेक्टर ट्राली, कार, जीप, स्कूटर, मोटरसायकल के टायर व ट्यूब के मिलने का विश्वसनीय स्थल

गायत्री मन्दिर, भोपाल रोड, आष्टा,
जिला-सीहोर

शुभकामनाओं के साथ

पोलाइट सिलाई मशीन
के अधिकृत विक्रेता

विजय टेलरिंग मटेरियल

बड़ा बाजार पीपल के पास

विशेषज्ञ :

मशीन तेल, मशीन पार्टस एवं लेस

सहयोगी संस्थान-

विशाल ट्रेलर्स, अनुपम स्टोर्स

बड़ा बाजार आष्टा

स्पोर्ट सामान के विक्रेता

श्री मज्जिनेन्द्र पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव के पुनीत अवसर पर आस्था नगरी आष्टा में आगन्तुक अतिथियों का हार्दिक अभिनन्दन

मिल कीजे सतगुरू आरती मिल कीजे ।

जिनकी चरण कमल रज सुन्दर भव दुःख सकल निवारती,

मिल कीजे ... ॥

मिल कीजे सतगुरू आरती मिल कीजे

वाणी अमृतमय सुन जिनकी बुद्धि ब्रह्म की धारती

मिल कीजे ..... ॥

मिल कीजे सतगुरू आरती मिल कीजे ।

दया से जिनकी द्वैत दूर हो मन की माया हारती,

मिल कीजे ...... ॥

पाकर के विज्ञान ज्ञान की पूर्ण शान्ति विस्तारती,

मिल कीजे ...... ॥।

मिल कीजे सतगुरु आरती मिल कीजे ।

सर्वोत्तम आहार - शाकाहार

विनयावनत्

प्रभु प्रेमी संघ, आष्टा

जो व्यक्ति दूसरों की बुराई करने की ऊंगली उठाता है, उसकी एक ऊंगली दूसरों की तरफ और तीन ऊंगली अपनी तरफ उठती है।

श्री पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव में
समस्त आगन्तुक महानुभावों का
हार्दिक अभिनन्दन

मफतलाल फेब्रिक्स
माय टेक्स
एवं
नूतन
सिन्थेटिक्स
के होलसेल डीलर

मे. बालाजी एंड कम्पनी

११३, विक्रमादित्य क्लॉथ मार्केट, उज्जैन

फोन २८३६६५ (S)
५०८२७ (R)

श्री दि. जैन १००८ भगवान आदिनाथ
पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव आष्टा में पधारे
सभी धर्म प्रेमी बन्धुओं का
हार्दिक अभिनन्दन

फोन-५७५५०२-मण्डी
५३०४१६-दुकान
५४३९९६-घर

रमेन्द्र जैन वीरेन्द्र जैन

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

जैन ब्रदर्स

१५, मंगलवारा रोड, भोपाल

श्री दि. जैन आदिनाथ पंच कल्याणक
प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव
के शुभ अवसर पर
हार्दिक अभिनन्दन

श्री जी ट्रेडर्स

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

४९ लोहा बाजार, भोपाल (म.प्र.)

फोन-५३६६३० (आ)
५४०७०९ (घर)

श्री राजेश कुमार जैन

आचार्य मुनि १०८ श्री भरत सागरजी
महाराज के चरणों में
शत-शत नमन्

दलाल लोकेश एण्ड कम्पनी

लोहा बाजार भोपाल ४६२ ००१ (म.प्र.)

फोन नं. ५४३८९०-५४३३६९-आफिस
५४०७०९-घर

सुंगधीलाल राजेशकुमार जैन

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा
एवं
गजरथ महोत्सव के
शुभ अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

फोन- आफिस-५४२५८८, ५३०८५१, ५४३४५१
घर-५३०४४५, ५३०००८

मध्यप्रदेश ट्रांसपोर्ट कं.

३७, अहिंसा निवास,
न्यू इतवारा रोड, भोपाल

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं
गजरथ महोत्सव के
शुभ अवसर पर
हार्दिक अभिनन्दन

लेटेस्ट स्टील इण्डस्ट्री

आधुनिक स्टील फर्नीचर के निर्माता

१/४, मेहता मार्केट सुभाष नगर, भोपाल

फोन नं.
कार्य-५७५४८९
निर्माण स्थल-५८९५३५
निवास-५३०९४५

श्री महावीराय नमः

श्री दि. जैन १००८ भगवान आदिनाथ
पंच कल्याणक प्रतिष्ठा
एवं गजरथ महोत्सव
के शुभ अवसर पर
हार्दिक अभिनन्दन

फोन-आफिस-५४३८२५ घर-५४५२

श्री बाहुबल कम्पनी

खली, भूसी के थोक विक्रेता

मारवाड़ी रोड, भोपाल

प्रो. सेजमलजी अनिलकुमार जैन

श्री दि. जैन १००८ भगवान आदिनाथ
पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ
महोत्सव के शुभ अवसर पर

हार्दिक अभिनन्दन

मनोज जैन

आर.एम. गारमेन्ट्स

६८, मारवाड़ी रोड, भोपाल-४६२ ००१

फोन नं. ५४३११८

मानव जीवन उसी का सफल है, जो गुलाब के फूल के समान परिस्थितियों रूपी कांटों में चलकर भी अपने चरित्र की सुगन्ध से दुनिया को सुवासित करता है

महान तपस्वी,

युवा पीढ़ी के धर्म सम्राट

आचार्य १०८ भरत सागरजी महाराज

के चरणों में त्रिबार नमोस्तु

फर्म

मे. जीतमल लखमीचन्द
मे. विजय ट्रेडर्स
मे. बाहुबली ट्रेडिंग कम्पनी

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

आष्टा, सीहोर (म.प्र.)

फोन २०५२, २०७२, ३१०९, २२४२

विनीत

छीतरमल जैन

जीतमल जैन

श्री महावीराय नमः

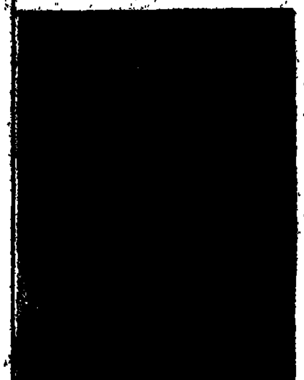
पुण्य सलिला पार्वती के तट पर स्थित आष्टा नगरी में
ऐतिहासिक पंच कल्याणक एवं गजरथ महोत्सव
में पधारे सभी धर्मप्राण जन का वंदन- अभिनन्दन
आचार्य मुनिश्री १०८ भरत सागरजी महाराज के
सादर चरणों में नमोस्तु

श्री महावीराय नमः

"मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है"



स्व. श्री मगनलालजी
अनगोत्री, मेहतवाड़ा



स्व. श्री हीरालालजी जैन
अनगोत्री, मेहतवाड़ा

जैनं जयतु शासनम्

मुनिश्री के चरणों में सादर नमोस्तु एवं आप सभी प्रबुद्ध जन को जय जिनेन्द्र, पुण्य सलिला पार्वती के तट पर स्थित आष्टा नगरी में ऐतिहासिक भव्य पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव में पधारे सभी प्रबुद्ध, स्नेही, धर्मप्रेमी बन्धुओं का अनगोत्री परिवार, मेहतवाड़ा की ओर से हार्दिक अभिनन्दन



श्रीमती बसन्ती बाई जैन
पत्नि स्व. श्री मगनलालजी



श्री कमलकुमार अनगोत्री,
मेहतवाड़ा

नया वैस्पा

अब शान का सफ़र, और भी बेहतर.

वैस्पा चलाने का जानदार अहसास. नए वैस्पा में आप इसे पाएंगे और भी बेहतर

बटन दबाने भर से ही जाग उठे इसकी शक्ति. जिससे आपको मिले बेमिसाल गति, सबसे आगे रहने के लिए इसमें है कुशलता से डिज़ाइन किया गया स्टीयरिंग हैंडल, बेहतरीन सस्पेंशन, और एक आरामदेह सीट, जिसपर अब है एक अनोखा एडजस्टेबल बैक-रेस्ट* यानि आपके लिए भरपूर आराम साथ ही हर सफर में आपको सुरक्षा का विश्वास देने वाली वैस्पा की सभी जानी-मानी खूबियां



लेकिन जब बात हो वैस्पा पर सवारी के अहसास की, तो क्यों न आप खुद ही इसे महसूस कर देखें? किसी भी वैस्पा शोरुम पर आएं और चला कर देखें नया वैस्पा

फिर 8 आकर्षक मैटेलिक रंगों व तीन मॉडलों (एल एम एल वैस्पा NV Spl. T5 Spl और वैस्पा सिलेक्ट) में से चुनें अपनी पसन्द और ले आए सवारी का वो अहसास जो है मीलों आगे

विश्व का पहला एडजस्टेबल बैक-रेस्ट*, और कई सुविधाएं

- दुनिया में सबसे पहली बार ऐसा स्कूटर जिसकी सीट पर है एडजस्टेबल बैक रेस्ट *(पेटेन्ट आवेदित) हर सफर में आराम के लिए
- पुश बटन स्टार्ट
- हेल्मेट लॉक * के साथ, ताकि हर जगह हेल्मेट हाथ में लेकर चलने की असुविधा न हो
- बेहतर सस्पेंशन व गद्दीदार सीट

* सुविधा सिर्फ वैस्पा सिलेक्ट में

LML vespa

Ph. 533762

अधिकृत विक्रेता : चौधरी एजेन्सीज ५३, हमीदिया रोड, भोपाल

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं
गजरथ महोत्सव के शुभ अवसर पर

जनपद पंचायत आष्टा

क्षेत्रीय जनता की ओर से आगन्तुकों का स्वागत करती है
एवं कार्यक्रम की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देती है



अजीत सिंह
अध्यक्ष, टी.टी.आई.
भू.पू. संसदीय सचिव



अशोक कुमार जैन
अध्यक्ष, कृषि समिति
जनपद पंचायत आष्टा



पूरण सिंह मालवीय
अध्यक्ष,
जनपद पंचायत आष्टा



रामचरण तोमर
उपाध्यक्ष,
जनपद पंचायत आष्टा

मुख्य कार्यपालन अधिकारी
डी.डी. मेघानी

अनार सिंह, हमीरसिंह, शकुन्तला
परमार, मोहन वर्मा सभी सदस्य

॥ जय हो बाबा की ॥

卐 श्री आदिनाथाय नमः 卐

आचार्य श्री १०८ भरत सागरजी महाराज के चरणों में शत्-शत्-शत् नमन

यह स्मारिका सिर्फ ७ दिन में छापकर तैयार करने में श्री डॉ. जैनपालजी जैन (प्रधान सम्पादक), श्री भानुकुमारजी जैन, इन्दौर, श्री श्रीपालजी जैन 'दिवा' भोपाल, सुरेन्द्र कुमारजी जैन (प्रबंध सम्पादक), गुलाबचंदजी काका साहब, इन्दौर एवं सुभाषजी गंगवाल, इन्दौर का अथक सहयोग भुलाया नहीं जा सकता। इतनी जल्दी में छापने में किसी प्रकार की त्रुटि यदि रह गई हो तो पाठकगण व विज्ञापनदाता से हम क्षमा चाहते हैं।

प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के संयोजक श्री राजमलजी जैन साहब व अध्यक्ष श्री राजमलजी सेठी को कार्यक्रम की सफलता के लिए बहुत-बहुत बधाई!

- अनिल अजमेरा